04 - राष्ट्रीय सुरक्षा के सिद्धांतों पर अमल की हकीकत

05 - विदेश जाना व्यक्तिगत आजादी के अधिकार का हिस्सा

A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 19 जनवरी, 2026

06 - 18.43 करोड़ की लागत से माचना नदी पर 4-लेन पुल का भूमिपूजन...

07 - मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माखननगर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त 137...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 109, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत अमेरिका के दबाव से खुद को डी-रिस्क कैसे कर रहा है

आर जगन्नाथन

अमेरिकी ट्रेड टैरिफ पर इतना ध्यान दिए जाने के बावजूद जो बात नजरअंदाज की जा रही है, वह है भारत की अभी भी विकसित हो रही भू-राजनीतिक रणनीति को धीरे-धीरे और सोच-समझकर एक-एक कर बदलना। इनमें से कुछ कदम डॉनल्ड ट्रंप के व्हाइट हाउस आने से पहले ही उठाए गए थे, लेकिन उनके आने से चीजें तेजी से आगे बढ़ी हैं। हालांकि नरेंद्र मोदी सरकार को भारत-अमेरिका संबंधों में संकट को जिस कमजोर तरीके से संभाला जा रहा है, उसके लिए काफी आलोचना झेलनी पड़ी है, लेकिन अब विदेश और व्यापार नीति के लिए एक नए खाके की हल्की रूपरेखा दिखाई देने लगी है।

हैरानी की बात नहीं है कि इस नए खाके का मुख्य तत्व अमेरिका के साथ संबंधों में जोखिम को कम करना है। यह भी साफ है कि भारत रूस पर अपनी अत्यधिक निर्भरता के जोखिम को भी कम कर रहा है, भले ही घरेलू आलोचक इसे अमेरिकी दबाव का नतीजा बताएं।

इसके संकेत काफी समय से मिल रहे थे, फरवरी 2022 में यूक्रेन संघर्ष शुरू होने से पहले भी और बाद में भी, जब ट्रंप ने दिखाया कि वह दोस्तों और दुश्मनों दोनों के साथ कितने मनमौजी हो सकते हैं। भारत की नई रणनीति एक बहुध्रुवीय और लेन-देन आधारित दुनिया में अपने हितों को सुरक्षित करने की है। पहला संकेत यह है कि भारत लगातार अमेरिकी ट्रेजरी होल्डिंग्स में अपना हिस्सा घटा रहा है। अक्टूबर 2024 में यह होल्डिंग्स 241 बिलियन डॉलर थीं, जो अक्टूबर 2025 में घटकर 190 बिलियन डॉलर रह गईं। इसका मतलब यह नहीं है कि भारत के डॉलर भंडार में बड़ी गिरावट आई है, बल्कि यह कि अमेरिका को सीधे दी जाने वाली राशि कम हुई है। आरबीआई की 2 जनवरी 2026 की विदेशी मुद्रा रिपोर्ट के अनुसार भारत के कुल 686 बिलियन डॉलर के भंडार में से 551 बिलियन डॉलर आधारित परिसंपत्तियों में हैं। सिर्फ अमेरिकी ट्रेजरी स्टॉक पर निर्भरता कम की गई है।

दूसरा, विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों में सबसे बड़ी बढ़ोतरी सोने में हुई है। सितंबर 2025 तक भारत के पास 880 टन सोना है, जो कुल भंडार का 16 प्रतिशत है। अहम बात यह है कि भारत अपना सोना धीरे-धीरे देश के भीतर अपने वॉल्ट में ला रहा है। 880 टन में से 575 टन सोना आरबीआई के अपने वॉल्ट में रखा गया है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भू-राजनीतिक टकराव की स्थिति में भारत के भंडार जोखिम में न पड़ें। पश्चिमी वित्तीय प्रणाली पर वैश्विक भरोसे में आई कमी का असर भारत पर भी दिख रहा है।

तीसरा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, यूएई, यूके, ओमान और EFTA देशों के साथ व्यापार समझौतों के बाद अब यूरोपीय संघ के साथ एक बड़े समझौते की संभावना है, जो इस वित्तीय वर्ष के अंत तक हो सकता है। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में मौजूद रहेंगे। चौथा, प्रस्तावित ईयू व्यापार समझौते को गैर-व्यापारिक रणनीतिक समझौतों से मजबूती दी जा रही है। ईयू की जटिल निर्णय प्रक्रिया को देखते हुए यह मानना जल्दबाजी होगी कि ट्रंप के टैरिफ कदमों के बाद समझौता तुरंत हो जाएगा। फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन और पोलैंड जैसे बड़े देश इसमें निर्णायक भूमिका निभाते हैं। यही कारण है कि भारत फ्रांस के साथ 3.25 लाख करोड़ रुपये का राफेल सौदा, जर्मनी के साथ 8 बिलियन डॉलर के पनडुब्बी अपग्रेड सौदे और फ्रांस की सफरान कंपनी के साथ फाइटर इंजन विकास समझौते की ओर बढ़ रहा है। हाल ही में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पेरिस में फ्रांस, जर्मनी और पोलैंड के साथ वीमर वार्ता में हिस्सा लिया, जहां ईयू व्यापार समझौते और यूक्रेन संघर्ष पर चर्चा हुई।

पांचवां, यह तथ्य कि राफेल सौदा रूस के Su-57 स्टील्थ फाइटर के काउंटर ऑफर की तुलना में पूरा होने के ज्यादा करीब है, वह भी टेक्नोलॉजी ट्रांसफर के साथ, यह दिखाता है कि भारत रूस पर जरूरत से ज्यादा निर्भर नहीं रहना चाहता। भारत-रूस संबंध आगे भी बने रहेंगे, लेकिन पहले के मुकाबले धीमी रफ्तार से। इसकी एक बड़ी वजह यह समझ है कि रूस की अपने वादों को पूरा करने की क्षमता यूक्रेन युद्ध के खत्म होने पर निर्भर करती है। जब तक युद्ध चलता रहेगा, रूसी रक्षा उत्पादन अपनी घरेलू युद्ध जरूरतों में ही उलझा रहेगा।

दूसरी ओर, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स ने रूस की UAC के साथ SJ-100 सिविलियन एयरक्राफ्ट के घरेलू उत्पादन के लिए समझौता किया है। यह विमान छोटे घरेलू रूट्स के लिए उपयोगी हो सकता है। यह साफ नहीं है कि यह वेंचर व्यावसायिक रूप से सफल होगा या नहीं, खासकर इसलिए क्योंकि रूसी कंपनी की वैश्विक पहचान सीमित है। फिर भी, यह भारत की उस कोशिश को दिखाता है जिसमें वह अपने तेजी से बढ़ते एविएशन बाजार के लिए बोइंग और एयरबस से आगे भी विकल्प तलाश रहा है। युद्ध खत्म होने के बाद भारत-रूस साझेदारी दोबारा रफ्तार पकड़ सकती है, और तब यह तेल और रक्षा से आगे दूसरे क्षेत्रों तक भी फैल सकती है।

छठा, अमेरिका पर निर्भरता का जोखिम कम करने के लिए अडानी ग्रुप ने ब्राजील की सिविलियन एयरक्राफ्ट कंपनी एम्ब्रेयर के साथ शॉर्ट-हॉल रूट्स के लिए नैरो-बॉडी विमानों की घरेलू असेंबली का समझौता किया है। सातवां, भारत और जापान की आर्थिक और सैन्य साझेदारी आगे भी मजबूत होती रहेगी। दोनों देश चीन को संतुलित करने के लिए एक साझा भू-राजनीतिक ताकत बनाना चाहते हैं।

आठवां, चीन के मामले में भारत की चुनौतियां काफी हद तक घरेलू हैं। इसकी वजह सुधारों की धीमी गति और कीमत व गुणवत्ता दोनों में प्रतिस्पर्धा करने की व्यापक कमजोरी है। इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्युटिकल इनपुट जैसे क्षेत्रों में भारत घरेलू बाजार और निर्यात दोनों के लिए चीन पर बहुत अधिक निर्भर है। रिटेल और एक्सपोर्ट में हजारों नौकरियां चीनी आयात से जुड़ी हैं।

2025 तक चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 106 बिलियन डॉलर से ज्यादा होने का अनुमान है। इसका एक कारण यह भी है कि भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात, जिसमें iPhone भी शामिल हैं, चीनी कंपोनेंट्स और सब-असेंबली पर निर्भर करता है। 2025 में प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव के सहारे भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो चुका है। इसके बावजूद भारत की सप्लाई चेन में चीनी निवेश बहुत कम है या लगभग नहीं के बराबर है। भारत के सामने असली आर्थिक चुनौती सुरक्षा और आर्थिक हितों के बीच संतुलन बनाने की है। 2026 वह साल होगा जब भारत की यह डी-रिस्किंग रणनीति अपने निर्णायक परीक्षण और अंतिम पुष्टि के दौर से गुजरेगी।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

'भागवत उवाच' धर्म ही मुझे और मोदी को चला रहा

● कहा-जब तक धर्म भारत का मार्गदर्शन करेगा, देश विश्वगुरु बना रहेगा

मुंबई (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) चीफ मोहन भागवत ने कहा कि धर्म ही मुझे और नरेंद्र मोदी को धर्म ही चला रहा है। उन्होंने कहा कि धर्म पूरे ब्रह्मांड का चालक है। जब सृष्टि अस्तित्व में आई, तो उसके कामकाज को कंट्रोल करने वाले नियम धर्म बन गए। सब कुछ उसी सिद्धांत पर चलता है। उन्होंने आगे कहा कि भारत को अपने संतों और ऋषियों से मार्गदर्शन मिलता रहा है। जब तक ऐसा धर्म भारत को चलाएगा, वह विश्वगुरु बना रहेगा। भागवत ने ये बातें रविवार को छत्रपति संभाजीनगर में संघ के शताब्दी वर्ष को लेकर आयोजित जनसभा में कहीं। सृष्टि बनने के बाद उसके संचालन के नियम ही धर्म बने और सब कुछ उन्हीं नियमों पर चलता है। दुनिया में आध्यात्मिकता की कमी है।

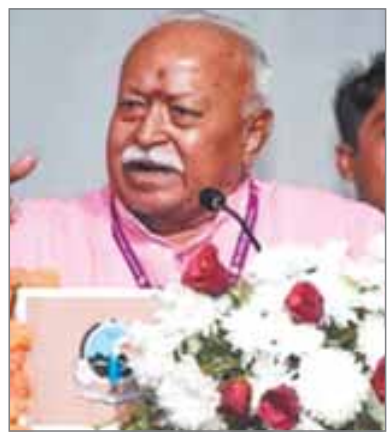

प्रकृति की हर चीज का अपना कर्तव्य और अनुशासन होता है

धर्म सिर्फ पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। प्रकृति की हर चीज का अपना कर्तव्य और अनुशासन होता है। कोई राज्य धर्मनिरपेक्ष हो सकता है, लेकिन कोई व्यक्ति या रचना धर्म के बिना नहीं हो सकती। जातिगत भेदभाव पर बात करते हुए भागवत ने कहा कि इसे खत्म करने के लिए मन से जाति को मिटाना होगा। पहले जाति काम और पेशे से जुड़ी थी, लेकिन बाद में यह भेदभाव का कारण बन गई। भागवत ने कहा कि आरएसएस का लक्ष्य समाज के साथ मिलकर भारत को उसके सर्वोच्च गौरव तक ले जाना है। संघ व्यक्ति के चरित्र निर्माण के जरिए राष्ट्र निर्माण करता है। आरएसएस न किसी से प्रतिस्पर्धा करता है और न ही किसी प्रतिक्रिया में बना संगठन है। संघ खुद बड़ा नहीं बनना चाहता, बल्कि पूरे समाज को आगे बढ़ाना चाहता है। जो लोग संघ को समझना चाहते हैं, उन्हें उसकी शाखाओं में आना चाहिए।

यह हमारे पूर्वजों की विरासत है, जो हमें मिली है

मोहन भागवत ने कहा,जब तक ऐसा धर्म भारत का मार्गदर्शन करता रहेगा, तब तक भारत विश्वगुरु बना रहेगा। दुनिया के पास इस तरह का ज्ञान नहीं है क्योंकि उसमें आध्यात्मिकता की कमी है। यह हमारे पूर्वजों की विरासत है, जो हमें मिली है। भागवत ने कहा कि चाहे वह नरेंद्र भाई हों, मैं हूं, आप हों या कोई और, हम सभी को एक ही शक्ति चला रही है। यदि वाहन उस शक्ति से चले, तो कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी। वह चालक धर्म है। धर्म पूरे ब्रह्मांड का चालक है। जब सृष्टि की उत्पत्ति हुई, तो वह नियम जो उसकी कार्यप्रणाली को नियंत्रित करते थे, वही धर्म बने। सब कुछ उसी सिद्धांत पर चलता है। आरएसएस प्रमुख भागवत ने कहा कि धर्म केवल धार्मिकता तक सीमित नहीं है।

शरद की सुबह

फूल से खुशबू चुराना
शाइरी तक ठीक है
चाँद-तारे तोड़ लाना
शाइरी तक ठीक है

धूप में कुछ दूर नंगे
पाँव चल कर देखिए
आग पर चलना चलाना
शाइरी तक ठीक है

ये बहुत है उनके दुख में
आप के आँसू बहें
दूध की नहरें बहाना
शाइरी तक ठीक है

आज कल सिंदूर तक
तो ढंग का मिलता नहीं
माँग में तारे सजाना
शाइरी तक ठीक है

इक हवाई कैनवस पर
शिद्दतों के रंग से
दर्द का चेहरा बनाना
शाइरी तक ठीक है

आप पहले शम्स से
आँखें मिलाकर देखिए
शम्स को आँखें दिखाना
शाइरी तक ठीक है

आख़िरिश फिर दीप
साहब आपका जह्नी फ़ितूर
घूम-फिर कर आ गया ना
शाइरी तक ठीक है।

- भरत दीप माथुर

सिंगूर रैली में पीएम मोदी ने ममता सरकार पर जमकर बोला हमला

टीएमसी के मेगा-जंगलराज को खत्म करने के लिए तैयार है बंगाल

सिंगूर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल में 830 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया और कोलकाता को देश के अन्य हिस्सों से जोड़ने वाली तीन अमृत भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। हुगली जिले के सिंगूर में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने जयरामबती-बारोगोपीनाथपुर-मयनापुर रेल लाइन का भी उद्घाटन किया और मयनापुर व जयरामबती के बीच एक ट्रेन सेवा शुरू की। उन्होंने कहा कि ये सभी केंद्रीय परियोजनाएं पश्चिम बंगाल के विकास को गति देंगी और केंद्र सरकार पूर्वी भारत के विकास के लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने घुसपैठियों के मुद्दे पर तृणमूल पर तीखा हमला किया है। उन्होंने कहा कि तृणमूल घुसपैठियों के लिए नकली डॉक्यूमेंट बना रही है। उनके लिए धरने पर बैठी है। तृणमूल घुसपैठियों को बचाने के लिए कुछ भी कर सकती है।

घुसपैठियों को बचाने के लिए तृणमूल कुछ भी कर सकती है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घुसपैठियों के मुद्दे पर तृणमूल पर तीखा हमला किया है। उन्होंने कहा कि तृणमूल घुसपैठियों के लिए नकली डॉक्यूमेंट बना रही है। उनके लिए धरने पर बैठी है। तृणमूल घुसपैठियों को बचाने के लिए कुछ भी कर सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तृणमूल के दौर में दंगाइयों के खुलेआम घूमने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि तृणमूल के छोटे, जूनियर नेता भी खुद को बंगाल का मालिक समझते हैं। बिहार के जंगलराज के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तृणमूल के दौर की तुलना दिल्ली की केजरीवाल सरकार से की है।

विधानसभा चुनाव से पहले बड़ा बयान

उन्होंने आगे कहा कि पश्चिम बंगाल में अपार क्षमता है। यहां बहुत बड़ी नदियां हैं। बहुत लंबी तटरेखाएं हैं। उपजाऊ जमीन है। पश्चिम बंगाल के हर जिले में कुछ खास है। बीजेपी हर जिले की इस ताकत को और बढ़ाएगी। पीएम मोदी की ये टिप्पणियां ऐसे समय आई हैं जब बीजेपी अगले तीन महीनों में होने वाले अहम विधानसभा चुनावों की तैयारी कर रही है। पीएम मोदी ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार केंद्रीय योजनाओं को लोगों तक पहुंचने से रोक रही है। उन्होंने कहा कि मैं बंगाल के लोगों की सेवा करना चाहता हूं, लेकिन टीएमसी सरकार केंद्रीय योजनाओं का लाभ उन तक पहुंचने से रोकती है। उन्होंने कहा कि केंद्र ने पूरे देश में मछुआरों को रजिस्टर करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म बनाया है, लेकिन टीएमसी ने इस पर ब्रेक लगा दिया है।

जबलपुर में कार ने 12 मजदूरों को रौंदा, 2 की मौत, 7 की हालत गंभीर

सड़क किनारे बैठ खाना खा रहे थे

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के जबलपुर में रविवार को तेज रफ्तार कार ने 12 मजदूरों को कुचल दिया। हादसे में 2 मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 10 मजदूर घायल हो गए। घायलों में से 7 की हालत नाजुक है। सभी घायलों को मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर किया गया है। हादसा बरेला थाना क्षेत्र के एकता चौक पर दोपहर करीब 2 बजे हुआ। पुलिस के मुताबिक, मृतकों की पहचान राजकुमारी और सन्नो बाई के रूप में हुई है। मृतक और सभी घायल मंडला जिले के बीजाडांडी थाना क्षेत्र के बिहारिया गांव के रहने वाले हैं। डेढ़ माह से यहां मजदूरी का काम कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार, मजदूर सड़क के डिवाइडर में लगी लोहे की जालियों की सफाई करने के बाद बैठकर खाना खा रहे थे। इसी दौरान बरेला से जबलपुर की ओर आ रही सफेद कार उन्हें रौंदते हुए भाग गई। स्थानीय लोगों ने तुरंत बरेला थाना पुलिस और डायल 108 को सूचना दी। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी अनिल पटेल पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और घायलों को अस्पताल भिजवाया।

घायल बोला- कार अचानक सामने आ गई

घायल मजदूर महंत उइके ने बताया कि कार अचानक सामने आ गई और देखते ही देखते साथियों को कुचलते हुए भाग गई। जब तक कुछ समझ पाते, तब तक कई साथी सड़क पर घायल पड़े थे। बरेला थाना प्रभारी अनिल पटेल ने बताया कि घायलों का इलाज जारी है और फरार कार चालक की तलाश शुरू कर दी गई है। आसपास के सीसीटीवी कैमरों और टोल नाकों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं। जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

सौर ऊर्जा के बढ़ते क्षेत्र से दिनों-दिन कम हो रही है पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों पर निर्भरता : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सौर ऊर्जा के क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए पारंपरिक ऊर्जा के संसाधनों पर अपनी निर्भरता दिनों दिन कम करता जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में वर्ष 2070 तक कार्बन फुट-प्रिंट को शून्य तक लाने और समाप्त होते जीवाश्म ईंधन के विकल्प तलाशने के लिए वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट (अक्षय) नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा उत्पादन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। इस राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने में मध्यप्रदेश पूर्ण समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ योगदान दे रहा है। राज्य में पिछले 12 वर्षों में नवीन और नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में 14 प्रतिशत अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिससे अब कुल ऊर्जा उत्पादन में सहभागिता 30 प्रतिशत से अधिक हो गई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने गत वर्ष हुई ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट भोपाल में सौर ऊर्जा के क्षेत्र देश में मध्यप्रदेश की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि राज्य वर्तमान में लगभग 31 हजार मेगावाट की विद्युत उत्पादन क्षमता रखता है, जिसमें से 30त्न हरित ऊर्जा है। हमारे लिये गौरव की बात है कि मध्यप्रदेश के रीवा सोलर पार्क और देश के सबसे बड़े ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर प्लांट का भी उल्लेख पूरे देश में हो रहा है। इससे अक्षय ऊर्जा उत्पादन को नई दिशा मिली है।

मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसने टेक्नोलॉजी एग्नोस्टिक रिन्यूएबल एनर्जी पॉलिसी लागू की है। इस नीति में सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए निवेशकों को अनुकूल और लचीले अवसर प्रदान किए जा रहे हैं, जिससे ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में नया आयाम जुड़ रहा है। मध्यप्रदेश अपनी भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के कारण देश के अग्रणी ऊर्जा सरप्लस राज्यों में से एक है। राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा आत्म निर्भरता को प्राथमिकता देते हुए नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत है। मध्यप्रदेश हरित ऊर्जा हब के रूप में उभर रहा है। वर्तमान में राज्य में 5 बड़ी सौर परियोजनाएँ संचालित हैं, जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 2.75 गीगावाट (2,750 मेगावाट) है। सरकार की योजना वर्ष 2030 तक नवकरणीय ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 20 गीगावाट (20,000 मेगावाट) करने की है। नवकरणीय ऊर्जा में 5.72 लाख करोड़ से अधिक के निवेश से 1.4 लाख से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। मध्यप्रदेश सरकार नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 5.21 लाख करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित कर रही है, जिससे 1.46 लाख रोजगार सृजित होंगे। राज्य सरकार की यह पहल भारत के नेट ज़ीरो कार्बन लक्ष्य वर्ष-2070 को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मध्यप्रदेश तेजी से नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में देश का नेतृत्वकर्ता बन रहा है और आत्मनिर्भर भारत व स्वच्छ ऊर्जा मिशन में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 19 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जम्मू कश्मीर के किश्तवाड़ में आतंकियों ने की फायरिंग

- सुरक्षा बलों ने भी दिया मुंहतोड़ जवाब,सर्च ऑपरेशन जारी

किश्तवाड़ (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर में किश्तवाड़ जिले के एक सुदूर वन क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन के दौरान आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर फायरिंग शुरू कर दी है। इस बाद बाद सुरक्षा बलों ने जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी है। अधिकारियों ने बताया कि दोपहर को चतरू क्षेत्र के मन्द्रल-सिंघूरा के पास सोननार गांव में

घेराबंदी और तलाश अभियान के दौरान गोलीबारी शुरू हुई। इलाके में अतिरिक्त बलों को भेजा गया है तथा विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है। सूत्रों की मानें तो यहां जैश के आतंकी छिपे हुए हैं। सूत्रों के अनुसार, आतंकवादियों ने तलाशी दल पर गोलीबारी की, जिसके बाद सुरक्षा बलों ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की। गोलीबारी के बाद, पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी गई और ऑपरेशन को मजबूत करने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा बलों को मौके पर भेजा गया। घने जंगल वाले इलाके में तलाशी अभियान अभी भी जारी है। सूत्रों के अनुसार, माना जा रहा है कि जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों का एक समूह इलाके में फंसा हुआ है। हालांकि, आतंकवादियों की पहचान और संख्या के बारे में आधिकारिक पुष्टि का अभी भी इंतजार है।

35 करोड़ लोगों की सेहत की जिम्मेदारी उठा रहा यूपी

- लखनऊ में बोले सीएम योगी,हेल्थटेक कॉन्क्लेव का किया आगाज

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी सिर्फ 25 करोड़ की आबादी वाला राज्य ही नहीं, देश के सबसे बड़े हेल्थकेयर कंज्यूमर मार्केट के रूप में ये 35 करोड़ लोगों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं का भार वहन करता हैं। इनमें कई पड़ोसी राज्य के मरीज भी शामिल है। जिनका यहां पर इलाज होता है। ये कहना हैं, सीएम योगी आदित्यनाथ का। रविवार को वो लखनऊ में यूपी हेल्थटेक कॉन्क्लेव 1.0 का

शुभारंभ करने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रदेश को मेडिकल टेक्नोलॉजी, हेल्थकेयर इनोवेशन और फार्मा मैन्युफैक्चरिंग का राष्ट्रीय और वैश्विक हब बनाने की दिशा में सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में पिछले पौने नौ वर्षों में उत्तर प्रदेश ने स्वास्थ्य क्षेत्र में ऐतिहासिक परिवर्तन किया है, जिसके परिणाम आज जमीनी स्तर पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले पौने नौ वर्षों में उत्तर प्रदेश ने स्वास्थ्य क्षेत्र में वह परिवर्तन किया है, जिसकी कल्पना पहले संभव नहीं थी। वर्ष 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में सरकारी और निजी क्षेत्र को मिलाकर कुल 40 मेडिकल कॉलेज थे।

बवाल मचा तो विधायक बरैया खुद के बयान से पलटे

कहा- मैंने बिहार के प्रोफेसर की किताब में पढ़ा, मंत्री बागरी बोलीं,ये निशाचरों की भाषा है

भोपाल (नप्र)। दतिया जिले की भांडेर विधानसभा सीट से कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया एक विवादित बयान को लेकर गंभीर राजनीतिक और सामाजिक विवादों में घिर गए हैं। एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग की महिलाओं और बच्चियों के साथ बलात्कार को लेकर दी गई उनकी तथाकथित 'थ्योरी' पर चौतरफा निंदा हो रही है।

कांग्रेस पार्टी ने भी उनके बयान से दूरी बना ली है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने फूल सिंह बरैया से लिखित स्पष्टीकरण तलब किया है। वहीं, बढ़ते विरोध के बाद खुद बरैया ने अपने बयान से किनारा कर लिया है।

बरैया बोले : मैं उस बयान से खुद सहमत नहीं हूं

फूल सिंह बरैया ने एक वीडियो जारी कर कहा- जिस बयान को लेकर मेरे

ऊपर आरोप लगाए जा रहे हैं, वह मेरा मौलिक बयान नहीं है। वह बयान बिहार में दर्शनशास्त्र के एचओडी रहे हरिमोहन झा द्वारा लिखा गया है। मैंने उसे एक संदर्भ में कोट किया है। मैं उस बयान से भी सहमत नहीं हूं। मैं स्वयं ऐसा नहीं मानता, लेकिन संदर्भ के तौर पर उसे उद्धृत किया गया था।

मंत्री प्रतिमा बागरी ने भी साधा बरैया पर निशाना

मध्यप्रदेश सरकार की नगरीय प्रशासन राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने इस बयान को निशाचरों की भाषा करार दिया। प्रतिमा बागरी ने एससी-एसटी-ओबीसी महिलाओं को धर्म से जोड़कर दुष्कर्म को कथित रूप से पुण्य बताने की थ्योरी को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि यह न धर्म है, न पुण्य–यह सीधा-सीधा पाप है। उन्होंने कहा कि किसी भी धार्मिक ग्रंथ में इस तरह की बातों का कोई उल्लेख नहीं है।यह सोच धर्मग्रंथों की नहीं, बल्कि निशाचारी और तांत्रिक प्रवृत्तियों की देन है, जहां मनुष्य को मनुष्य नहीं समझा जाता।

तांत्रिक क्रियाओं में अमरत्व जैसी बातें होतीं हैं

राज्यमंत्री ने कहा कि यह अत्यंत पीड़ादायक है कि एक जिम्मेदार जनप्रतिनिधि ऐसे ग्रंथों और विचारों का उल्लेख कर रहा है, जिनमें तांत्रिक क्रियाओं और अमरत्व जैसे विकृत प्रयासों की बात होती है। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसे विचार समाज, महिलाओं और मानवीय जीवन के लिए घातक हैं।

प्रतिमा बागरी ने कहा कि भारतीय समाज में महिलाओं ने त्याग, बलिदान, वीरता, शौर्य, बुद्धिमत्ता, उद्यमिता और कार्यकुशलता के असंख्य उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने बरैया को सलाह दी कि वे ऐसे विचारों का प्रचार करने के बजाय उन पुस्तकों और उदाहरणों का अध्ययन करें, जो महिलाओं के सम्मान और योगदान को रेखांकित करते हैं।

महिलाओं के खिलाफ अपराधों को धर्म से जोड़कर प्रोत्साहित करना खतरनाक

प्रतिमा ने कहा कि बरैया का बयान समाज को यह संदेश देता है कि महिलाओं के खिलाफ अपराधों को धर्म से जोड़कर प्रोत्साहित किया जाए, जो बेहद खतरनाक है। यह सोच उन बच्चियों के दर्द और पीड़ा को समझने में पूरी तरह असफल है, जिनके साथ तीन-तीन साल की उम्र में जघन्य अपराध होते हैं–जब वे न जाति जानती हैं, न समाज, न धर्म।

दुष्कर्म को धर्म से जोड़ना पीड़िताओं का अपमान

राज्यमंत्री ने भावुक शब्दों में कहा कि दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति अपराध कर सम्मान के साथ चला जाता है और उसे धर्म से जोड़ना पीड़िताओं का अपमान है। उन्होंने कहा कि हमारा धर्म कहीं भी ऐसे कृत्यों का समर्थन नहीं करता। भारतीय संस्कृति त्याग, तपस्या और नारी सम्मान पर आधारित है। नारी को जन्म देने वाली माता के रूप में पूजा गया है, जिनके पुण्य से पृथ्वी टिकी है।प्रतिमा बागरी ने अंत में फूल सिंह बरैया के बयान की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि समाज, महिलाओं और पुरुषों को मिलकर ऐसी सोच का विरोध करना होगा। उन्होंने कहा कि इस तरह की मानसिकता को बढ़ावा देने वालों को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलेगा और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि समाज इस बुराई के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा हो।

इवेंट मैनेजमेंट की आड़ में हाई-प्रोफाइल ड्रग पार्टियां...15000 में एंट्री

युवतियों को पैडलर बनाकर 5 राज्यों में एमडी ड्रग बेचता था भोपाल का अबान

भोपाल (नप्र)। इंदौर पुलिस की गिरफ्त में आया अबान शकील गोवा, इंदौर, मुंबई और दिल्ली में एमडी ड्रग की सप्लाई में करता था। उसके गिरोह में दो युवतियां सक्रिय रूप से पैडलर के तौर पर काम कर रही थीं। युवतियों पर शक आसानी से नहीं होता था। लिहाजा, अबान और उसका साथी बाबा शर्मा लड़कियों को मोटे कमीशन और ड्रग की फ्री खुराक का लालच देकर तस्करी के काम में जोड़ लेते थे। अबान की

निशानदेही पर दो युवतियों सहित बाबा शर्मा की भी गिरफ्तारी की गई है। इंदौर पुलिस की जांच में साफ हुआ कि अबान और बाबा शर्मा अंतरराज्यीय एमडी तस्कर गिरोह का हिस्सा हैं। चार से पांच राज्यों में सक्रिय रूप से तस्करी का काम कर रहे थे। जांच में यह भी साफ हो चुका है कि इवेंट मैनेजमेंट की आड़ में बाबा शर्मा, अलीशा मसीह और नेहा तीनों आरोपी इवेंट मैनेजमेंट का काम करते हैं। इन तीनों ने कई बड़ी पार्टीज ऑर्गनाइज की हैं, जिसमें एंट्री फीस 10 से 15 हजार रुपए तक होती थी। यहां रईसजादों को ड्रग खपाने का काम किया जाता था।

पार्टी कल्चर के नाम पर नशे का आदी बनाया जाता था- पार्टीज के नाम पर अबान कई युवाओं को ऐसी पार्टी में लेकर पहुंचता था। बाद में इन्हें एमडी की खुराक देकर पार्टी कल्चर के नाम पर नशे का आदी बनाया जाता था। गिरोह के चारों सदस्य मुख्य रूप से गोवा, दिल्ली, इंदौर, भोपाल, मुंबई और दिल्ली में भी पार्टीज ऑर्गनाइज करते रहे हैं।

अब तक कुल चार गिरफ्तारी हो चुकी- एमडी ड्रग की तस्करी करने वाले अबान गिरोह के 3 और तस्करों को इंदौर के कनाड़िया, मुंबई और देवास से गिरफ्तार किया गया है। एमडी तस्करी मामले में अंतरराज्यीय तस्कर वैभव उर्फ बाबा ने अबान और युवतियों के साथ गिरोह बनाकर ड्रग्स तस्करी की बात स्वीकार कर ली है।

बसंत पंचमी पर विवाह मुहूर्त नहीं, परंपरा में बदलाव

शुक्र का तारा अस्त होने से इस साल बसंत पंचमी पर कोई शुभ कार्य नहीं होंगे

उज्जैन (नप्र)। प्रतिवर्ष बसंत पंचमी को अबूझ मुहूर्त मानकर देशभर में विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन जैसे मांगलिक कार्य किए जाते रहे हैं, लेकिन इस वर्ष बसंत पंचमी पर विवाह का कोई मुहूर्त नहीं है।

23 जनवरी, शुक्रवार को आने वाली बसंत पंचमी पूर्व भाद्रपद नक्षत्र, परिघ योग तथा कुंभ के उपरांत मीन राशि में चंद्रमा की साक्षी में रहेगी। धर्मशास्त्र के अनुसार, शुक्र या गुरु का तारा अस्त होने पर विवाह जैसे संस्कार वर्जित माने जाते हैं। इसी कारण इस बार बसंत पंचमी पर विवाह का मुहूर्त नहीं बन रहा है।

ज्योतिषाचार्य बोले- इस बार परिस्थितियां अलग हैं- उज्जैन के ज्योतिषाचार्य पंडित अमर डिब्बेवाला के अनुसार, माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को बसंत पंचमी कहा जाता है। इसी दिन खटवांग जयंती और तक्षक पंचमी का भी

संयोग रहता है। सामान्यतः इस तिथि को विवाह, गृह प्रवेश और अन्य मांगलिक कार्य शुभ माने जाते हैं, किंतु शुक्र तारा अस्त होने से इस बार ये उपक्रम संभव नहीं होंगे।

आमतौर पर मालवा-निमाड़ ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में बसंत पंचमी को अबूझ मुहूर्त मानकर मांगलिक कार्यों की परंपरा रही है, लेकिन इस बार परिस्थितियां भिन्न हैं।

बसंत पंचमी का पर्व बुद्धि और ज्ञान की देवी मां सरस्वती को समर्पित है। इस दिन ज्ञान, संगीत और कला की साधना के लिए विशेष पूजा की जाती है। पीले वस्त्र, पीले फूल, बूंदी के लड्डू, मालपुआ, खीर और पीले चावल अर्पित किए जाते हैं। बसंत ऋतु के आगमन के प्रतीक इस पर्व पर वैष्णव मंदिरों में फाग महोत्सव की शुरुआत भी होती है, जहां भगवान को गुलाल अर्पित किया जाता है।

इस बार अधिक मास ज्येष्ठ माह में रहेगा- इस बार अधिक मास ज्येष्ठ माह में आने वाला है जो 17 मई से 15 जून तक रहेगा। इस दौरान विवाह आदि कार्य नहीं किए जा सकेंगे। साथ ही शुद्ध ज्येष्ठ मास का जब आरंभ होगा तो विवाह के योग पुनः बनेंगे, किंतु जो घर का बड़ा बेटा या बड़ी बेटी हो तो बड़े बच्चों का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

अमेरिका नहीं तोड़ पाएगा भारत की रूस से दोस्ती

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप उन देशों पर टैरिफ के जरिए लगाम कसने की कोशिश कर रहे हैं जो रूस से खरीद रहे हैं। इनमें भारत भी शामिल है। उन्होंने भारत पर 50 फीसदी टैरिफ लगाया है। इसमें 25 फीसदी सिर्फ इस कारण है कि भारत रूस से कच्चा तेल खरीदता है। वहीं ट्रंप ने हाल ही में फिर से 500 फीसदी टैरिफ लगाने की बात कही है। एक्सपर्ट के मुताबिक इसके बाद भी भारत रूस से लगातार तेल खरीदना जारी रखेगा। ग्लोबल रियल टाइम डेटा और एनालिटिक्स कंपनी केप्लर के मुताबिक ट्रंप की 500 फीसदी टैरिफ की धमकी के बाद भी भारत का रूसी कच्चे तेल का आयात जनवरी में भी मजबूत बना रहने की उम्मीद है।

अमेरिका को लगा बड़ा झटका यूरोपीय संसद ने रोकी ट्रेड डील

ग्रीनलैंड को लेकर टैरिफ का दांव पड़ा उल्टा,अपनों ने घेरा

पेरिस (एजेंसी)। ग्रीनलैंड पर कब्जे की डोनाल्ड ट्रंप धमकियों को लेकर अमेरिका और यूरोपीय देशों में तनाव बढ़ता जा रहा है। यूरोपीय संसद ने बड़ा कदम उठाते हुए अमेरिका के साथ ऐतिहासिक ट्रेड डील पर रोक लगा दी है। यह कदम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ग्रीनलैंड पर अमेरिकी कंट्रोल के प्रस्ताव का विरोध करने वाले वाले यूरोपीय देशों पर टैरिफ लगाने की घोषणा की।

यूरोपीय संसद के इस कदम से पिछले साल हुए ट्रांसअटलांटिक समझौते पर सवालिया निशान लग गया है। इस समझौते पर पिछले साल जुलाई में राष्ट्रपति ट्रंप और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने हस्ताक्षर किए थे। समझौते का मकसद अमेरिकी टैरिफ को 15

प्रतिशत पर रखकर व्यापार संबंधों को स्थिर करना था। इसके बदले में अमेरिकी एक्सपोर्ट पर शुल्क को कम किया जाना था। लेकिन ग्रीनलैंड पर अमेरिकी दबाव ने इसके भविष्य पर सवाल खड़े हो गए हैं। ट्रंप ने अमेरिकी फैसले का विरोध करने वाले देशों पर 10 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा की थी। इसमें वे देश थे जिन्होंने इस सप्ताह ग्रीनलैंड में अपने कुछ सैनिकों को भेजा था। ट्रंप ने टैरिफ की घोषणा के साथ यह भी कहा कि अगर ग्रीनलैंड पर कोई खरीद सौदा नहीं होता है तो इसे 1 जून से बढ़ाकर 25 प्रतिशत कर दिया जाएगा।

मणिपुर में 3 साल पहले गैंगरेप की शिकार युवती की मौत

सदमे में थी, 2023 हिंसा में पहले किडनैपिंग,फिर हुई दरिंदगी

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में 3 मई 2023 में जातीय हिंसा शुरू होने के तुरंत बाद गैंगरेप का शिकार हुई 20 साल की युवती की मौत हो गई है। गैंगरेप के समय वह सिर्फ18 साल की थी। एजेंसी के अनुसार, महिला लगभग तीन साल पहले किडनैपिंग और गैंगरेप के सदमे से अब तक उबर

- अब तक एक भी गिरफ्तारी नही, कुकी समुदाय का कैंडल मार्च

नहीं पाई थी। महिला की मां ने बताया कि वह गंभीर रूप से जख्मी हुई थी। गंभीर चोटों के कारण उनकी बेटी को सांस लेने में दिक्कत होने लगी थी। आखिरकार, 10 जनवरी को वह जिंदगी से जंग हार गई। महिला कुकी समुदाय से थी। उसने मणिपुर के सिंगहाट में अंतिम सांस ली। पीड़ित ने 21 जुलाई, 2023 को एफआईआर दर्ज कराई थी। इसमें उसने आरोप लगाया था कि 15 मई, 2023 को काले रंग की टी-शर्ट पहने चार

हथियारबंद लोग उसे सफेद बोलेरो में किडनैप कर पहाड़ी इलाके में ले गए। ड्राइवर को छोड़कर उनमें से तीन ने बारी-बारी से उसके साथ रेप किया था। 22 जुलाई, 2023 को पीड़ित का मामला सीबीआई को सौंप दिया गया। हालांकि, इस अब तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। पीड़ित के लिए न्याय की मांग को लेकर 17 को कुकी समुदाय के लोगों ने चुराचंदपुर में कैंडललाइट मार्च निकाला।

पीड़ित ने बताया था, कैसे आरोपियों के चंगुल से निकली

पीड़ित ने बताया था कि आरोपियों ने उसके साथ वो सभी घिनौनी हरकतें कीं, जो वे कर सकते थे। पूरी रात उसे कुछ भी खाने को नहीं दिया गया। पानी तक नहीं दिया गया। उसके आंखों पर पट्टी बंधी थी। सुबह शौचालय जाने के बहाने उसने आंखों पर बंधी पट्टी हटवाई और वहां से भाग निकली। एजेंसी के मुताबिक, सुबह होते ही वह पहाड़ी इलाके से भागकर नीचे पहुंची। वहां सब्जियां ले जा रहे एक ऑटो-रिक्शा चालक ने उसकी मदद की। वह उसे बिष्णुपुर पुलिस स्टेशन ले गया। हालांकि, वहां मैतेई पुलिसकर्मियों को देखकर उसने मदद लेने से इनकार कर दिया। पीड़ित की विनती पर रिक्शा चालक ने ही उसे इम्फाल के न्यू लम्बुलने इलाके में उसके घर तक पहुंचाया। फिर उसे कांगपोकपी के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया और बाद में आगे के इलाज के लिए नगालैंड के कोहिमा में शिफ्ट किया गया था।

'सिंगूर' से बंगाल फतह की तैयारी में बीजेपी

- जिस मुद्दे ने ममता को सत्ता दिलाई,अब उसी से होगा 'खेला'
- टीएमसी का आरोप,पुराने घावों को कुरेदने की कोशिश में बीजेपी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले सिंगूर मुद्दा एक बार फिर बंगाल की राजनीति के केंद्र में आ गया है। बंगाल बीजेपी अब तृणमूल सुप्रीमो को घेरने की कोशिश कर रही है, उसी सिंगूर का इस्तेमाल करते हुए, जो कभी सिंगूर आंदोलन के दौरान ममता बनर्जी के राजनीतिक उत्थान का मंच बना था। बीजेपी का दावा है कि सत्ता में आने पर वह टाटा को सिंगूर वापस लाएगी। इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को सिंगूर में एक जनसभा को संबोधित करने

पहुंचे। कोलकाता से लगभग 40 किलोमीटर दूर मौजूद सिंगूर, 2006-08 के दौरान राज्य की राजनीति में सबसे बड़े संघर्षों में से एक का केंद्र था। बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व वाली वाम मोर्चा सरकार ने टाटा नैनो कारखाने के लिए लगभग 1000 एकड़ उपजाऊ कृषि भूमि का अधिग्रहण कर लिया, जिससे उग्र विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। तत्कालीन विपक्षी नेता ममता बनर्जी इस आंदोलन का चेहरा बन गईं। भूमि आंदोलन जल्द ही राज्यव्यापी राजनीतिक आंदोलन में तब्दील हो गया। सिंगूर आंदोलन पुलिस के साथ झड़पों, गिरफ्तारियों और कोलकाता में ममता की 21 दिनों की भूख हड़ताल के कारण सुर्खियों में रहा। टाटा मोटर्स ने आखिरकार 2008 में अपनी फैक्ट्री सिंगूर से गुजरात के साणंद में ट्रांसफर कर दी।

सिंगूर को राजनीतिक हथियार बनाने की कोशिश में जुटी बीजेपी

हालांकि, लगभग दो दशकों के बाद भारतीय जनता पार्टी एक बार फिर सिंगूर को राजनीतिक हथियार बनाने की कोशिश कर रही है। पार्टी का दावा है कि सिंगूर आंदोलन से आए राजनीतिक बदलावों के बावजूद, राज्य ने औद्योगीकरण का एक बड़ा अवसर खो दिया है। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने सिंगूर को 'बंगाल के खोए हुए औद्योगीकरण का प्रतीक' बताया और कहा कि टाटा को निष्कासित किए जाने के बाद से ही उद्योग राज्य छोड़कर चला गया है। उनका दावा है कि अगर बीजेपी सत्ता में आती है, तो टाटा को सिंगूर वापस लाया जाएगा। बीजेपी सूत्रों ने बताया कि 18 जनवरी को मोदी की रैली में वे किसान भी शामिल हुए जिन्होंने कभी भूमि आंदोलन में भाग लिया था।

परिक्रमा

'स्मार्ट सिटी' मॉडल पर गरजते-बरसते राहुल गांधी

अरुण पटेल

लेखक
सुबह सवेरे के
प्रबंध संपादक हैं

दूषित पानी पीने से इंदौर में हुई मौतों और बीमार लोगों से मुलाकात के बाद लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी ने स्मार्ट सिटी मॉडल पर शाब्दिक हमला बोलते हुए कहा कि यह नया मॉडल है जहां पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं है। प्रभावितों के साथ अपने खड़े होने की बात कहते हुए राहुल गांधी ने एक-एक लाख रुपया और राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने पचास-पचास हजार रुपये के चेक सौंपे। राहुल गांधी का दो-टूक शब्दों में कहना था कि किसी न किसी को जवाबदेह ठहराना चाहिए, क्योंकि यह समस्या सिर्फ इंदौर तक सीमित नहीं है बल्कि देश व प्रदेश के कई शहरों में भी यही स्थिति है। भाजपा सरकार साफ पानी और हवा जैसी बुनियादी सुविधाएं देने भी विफल रही है। इस त्रासदी के लिए किसी न किसी को तो जवाबदेह ठहराना चाहिए तथा पीड़ितों को मुआवजा मिलना चाहिये। उनका आरोप था कि आज भी लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है और लोग सिर्फ वही मांग कर रहे हैं जो एक सरकार का कार्य है कि स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना। राहुल गांधी ने यह भी स्पष्ट किया कि नेता प्रतिपक्ष के रुप में जनता के मुद्दे उठाना मेरी जिम्मेदारी है, आप इसे राजनीति कहें या जो भी आपको उचित लगेवह कहें।

राहुल गांधी इंदौर आये और करीब साढ़े तीन घंटे तक इंदौर में रहे और इस बीच उन्होंने बाम्बे अस्पताल पहुंचकर छह मरीजों व उनके स्वजनों से मुलाकात की। उसके बाद भागीरथपुरा में मृतका गीता के घर पहुंचे, फोटो पर फूल चढ़ाये तथा जमीन पर बैठकर परिवारजनों से बात की, वे यहां पर लगभग सात मिनट रुके और एक लाख रुपये का चेक दिया। इस बार राहुल गांधी बुलेट प्रूफ कार की जगह विपिन वानखेड़े की सामान्य कार की अगली सीट पर सवार हो गये तथा अस्पताल और भागीरथपुरा इसी गाड़ी से गये। राहुल गांधी के इंदौर प्रवास के दौरान राज्यसभा सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी विधायक महेश परमार, फूलसिंह बरैया और सत्यनारायण पटेल आदि उपस्थित थे। एयरपोर्ट पर ही पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा ने भागीरथपुरा पर बनी कांग्रेस की समिति की रिपोर्ट दी जिसमें कहा गया था कि लापरवाही से सप्लाई किए गए दूषित पानी से ही 24 मौतें हुई हैं।

पंचायत सचिवों की पौ बारह

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आम बजट के पूर्व ही एक प्रकार से पंचायत सचिवों की झोली में सौगातों की मूसलाधार झड़ी लगा दी। 23 हजार पंचायतों के पंचायत सचिवों को अब 1300 रुपये का विशेष भत्ता दिया जायेगा। सचिव के निधन पर स्वजनों को दी जाने वाली डेढ़ लाख रुपये की अनुग्रह राशि अनुकम्पा नियुक्ति के बाद वापस नहीं ली जायेगी। अब पंचायत सचिवों का कार्यकाल 62 वर्ष की उम्र तक रहेगा। वहीं दूसरी ओर पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने सचिव के परिवारजनों को आयुष्मान कार्ड देने और पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के कारण लंबित अनुकम्पा नियुक्ति के मामलों का समाधान निकालने के लिए न्यायालय में पक्ष प्रस्तुत करने की बात कही। पंचायत सचिवों की पंचायत में महत्ता रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पंचायत राज व्यवस्था में पंचायत सचिव योजनाओं और विकास कार्यों की धुरी हैं और यही सबसे कड़ी इकाई है। चाहे कितना ही बड़ा आईएएस अधिकारी क्यों न हो, प्रधानमंत्री या सरकार के निर्णयों का कियान्वयन पंचायत स्तर पर ही होता है जिसमें पंचायत सचिव की भूमिका अहम् रहती है। हम रामराज्य की कल्पना करें तो पंचायत सचिव पंचायती राज में हनुमानजी की भूमिका में काम करते हैं।

और यह भी

मध्यप्रदेश की राजनीति में इन दिनों आदिवासियों को अपने साथ जोड़ने के अभियान में भारतीय जनता पार्टी के सत्ता व संगठन दोनों भिड़े हुए हैं और इसी दौरान आदिवासी सांस्कृतिक एकता महासम्मेलन में विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के एक बड़े आदिवासी नेता उमंग सिंघार ने आरोप लगाया है कि आदिवासी समाज और संस्कृति खत्म करने की साजिश की जा रही है। उनका कहना था कि हम जंगल, सूर्य, गाय, बैल और फसल की पूजा करते हैं लेकिन आज देश में होने वाली सोलहवीं जनगणना में वह आदिवासी कोड नहीं मिल पा रहा है। कहीं यह हमारी पहचान को खत्म करने की साजिश तो नहीं है या कहीं ऐसा तो नहीं है कि आदिवासी संस्कृति और समाज को खत्म करने की साजिश हो रही है। नेपानगर के चैनपुरा में 33वें आदिवासी सांस्कृतिक एकता महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उमंग सिंघार ने इस बात पर जोर दिया कि हम संकल्प लें कि इस लड़ाई को योजनाबद्ध तरीके से लड़ेंगे। उन्होंने जातिगत जनगणना का समर्थन किया और झारखंड के आदिवासियों के संघर्ष का उदाहरण देते हुए यह भी कहा कि प्रदेश में डेढ़ करोड़ समाज के लोगों का ज्ञापन राष्ट्रपति को भेजकर आदिवासी कोड के अधिकार की मांग की जायेगी।

नियम तोड़ने पर आधा दर्जन स्लीपर बसों पर 'आरटीओ' कार्रवाई, धार में भी चेकिंग

इंदौर। बस यात्रियों की जान की सुरक्षा को लेकर परिवहन विभाग ने स्लीपर बसों पर कड़ा शिकंजा कसा है। देश के विभिन्न हिस्सों में हाल के महीनों में स्लीपर बसों में आग लगने और गंभीर हादसों की घटनाओं के बाद अब आरटीओ ने सघन जांच अभियान शुरू कर दिया। बस संचालकों को साफ कह दिया है कि यात्रियों का सफर सुरक्षित हो और सुरक्षा मानकों से किसी भी तरह का समझौता न होने दिया जाए। दो दिनों में आधा दर्जन से अधिक बसों पर कार्रवाई की गई एआरटीओ अर्चना मिश्रा ने बताया कि परिवहन आयुक्त के निर्देश के तहत बस बॉडी कोड एआईएस-119 एवं एआईएस-052 के अनुसार स्लीपर बसों में सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जा रहा है। इस क्रम में टीम के एआरटीओ राजेश गुप्ता ने बीते दिनों इंदौर जिले के सभी स्लीपर बस संचालकों और स्वामियों की बैठक आयोजित की गई, जिसमें उन्हें नियमों की जानकारी देकर पालन के स्पष्ट निर्देश दिए गए। बस संचालकों से लिया लिखित में बस संचालकों से लिखित में आश्वासन लिया गया कि वे एक माह के अपनी बसों में एफडीएसएस लगवा कर सभी कमियां दूर करेंगे।

कई बसों में पार्टीशन हटवाए, आपातकालीन उपकरणों की कमी पाई गई

दो दिन चला जांच अभियान

एआरटीओ प्रदीप मिश्रा ने बताया कि हमारी टीम ने तीन इमली रोड, तीन इमली बस स्टैंड, राजीव गांधी चौराहा और चोइथराम रोड सहित विभिन्न स्थानों पर बस यार्ड में जांच की। निरीक्षण के दौरान कई बसों में अवैध पार्टीशन दरवाजे हटवाए गए, कुछ में एफडीएसएस सिस्टम नहीं मिला और कई वाहनों में आपातकालीन उपकरणों की कमी पाई गई। नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर एक स्लीपर बस की फिटनेस तत्काल निरस्त कर दिया गया है। साथ ही निजी एटीएस सेंटरों को भी निर्देश दिए गए हैं कि मानकों पर खरी न उतरने वाली बसों की फिटनेस न करें।

इंदौर में है 489 स्लीपर बसें- आरटीओ के अनुसार इंदौर में कुल 489 स्लीपर बसें पंजीकृत हैं, जिनमें से 70 से अधिक फिलहाल ऑफ-रोड हैं। परिवहन विभाग ने स्पष्ट किया है कि यात्री सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जाएगा और यह अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा।

स्लीपर बसों के लिए नियम- बैठक में बताया गया कि स्लीपर बसों में ड्राइवर केबिन और यात्री केबिन के बीच पार्टीशन दरवाजा नहीं होना चाहिए, स्लीपर बर्थ के साथ स्लाइडर या स्टोरेज पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा, बसों में एफडीएसएस (फायर डिटेक्शन एंड सेप्रेशन सिस्टम) अनिवार्य है। सभी बसों में कम से कम 10 किलो का अग्निशमन यंत्र (ग्रीन ज़ोन) होना चाहिए, बस की लंबाई के अनुसार 4 से 5 आपातकालीन द्वार अनिवार्य होना चाहिए, वीएलटीडी, पैनिक बटन और स्पीड गवर्नर चालू हालत में होना जरूरी है, ज्वलनशील पदार्थों का परिवहन प्रतिबंधित है, फर्स्ट-एड बॉक्स अनिवार्य है तथा चालक द्वारा नशे में वाहन चलाने पर पूरी तरह प्रतिबंध है।

धार में भी कार्रवाई की गई - परिवहन आयुक्त एवं कलेक्टर धार के निर्देश पर धार आरटीओ ने विशेष अभियान चलाकर स्लीपर बसों पर रात्रि के समय कार्रवाई की। विशेष अभियान में अग्नि सुरक्षा के उपायों, आपातकालीन निकास, आदि की जांच की गयी, जिसमें 7 वाहनों पर चालानी कार्रवाई की जाकर 17 हजार शमन शुल्क वसूल किया गया। 3 स्लीपर बसों पर चालानी पर कार्रवाई करते हुए नोटिस जारी कर वाहनों में सुविधाओं की पूर्ति कर 2 दिन के भीतर कार्यालय में प्रस्तुत कर भौतिक सत्यापन करने के निर्देश दिए गए।

युवती का शव दो दिन तक लटका रहा

इंदौर। मानसिक तनाव के चलते युवती ने मकर संक्रांति पर मां से बात की। कुछ देर बाद मां से कहा कि बाद में बात करती हूं। इसके बाद उससे बात नहीं हुई। दो दिन बाद आसपास के लोगों को बदबू आई तो युवती का शव कमरे में लटका मिला। युवती प्राइवेट बैंक में काम करती थी। घटना स्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। पुलिस ने युवती का मोबाइल कस्टडी में ले लिया है। उमंग पिता मालती प्रजापति मूल रूप से भोपाल की रहने वाली है। वह कुछ सालों से खंडवा रोड के गणेश नगर में किराए से रह रही थी। उसके घर में माता-पिता और छोटी बहन है। पिता भोपाल में व्यापार करते हैं। घटना की जानकारी मिलने के बाद भोपाल से माता-पिता और अन्य परिजन इंदौर पहुंचे। एमवाय अस्पताल में उसका पीएम कराया जा रहा है। परिजन ने बताया कि शव को भोपाल ले जाया जाएगा, जहां उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा। परिजन ने बताया कि 14 जनवरी को उमंग से आखरी बार बात हुई थी। ये भी बताया जा रहा है कि उस वक्त वह नाराज थी, जिस पर उसने मां से कहा था कि वह बाद में बात करेगी। दो दिन से युवती कमरे में से बाहर नहीं आई थी। न तो पड़ोसियों ने उसे देखा और मकान मालिक ने। वहीं परिवार के लोगों ने उसे शुक्रवार को कॉल किया तो उसने कॉल नहीं उठाया। वे कमरे पर पहुंचे तो उसका शव लटका मिला।

शराब से भरी कार छोड़कर तस्कर फरार

इंदौर। राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र में पुलिस ने अवैध शराब तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए अंग्रेजी शराब से भरी कार जब्त की है। गड़बड़ी पुलिया के पास की गई इस कार्रवाई में चालक पुलिस को देखकर कार छोड़कर फरार हो गया। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि कार के माध्यम से भारी मात्रा में अवैध अंग्रेजी शराब की तस्करी की जा रही है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने गड़बड़ी पुलिया के पास घेराबंदी की। इसी दौरान एक संदिग्ध कार आती दिखाई दी। पुलिस को नजदीक आता देख चालक ने भागने की कोशिश की, लेकिन वाहन में खराबी आने के कारण वह कार को सड़क पर ही छोड़कर अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। लावारिस हालत में मिली कार में 7 बड़े कार्टन मिले, जिनमें 18 पेटियां अंग्रेजी शराब भरी हुई थीं। जब्त शराब की अनुमानित कीमत 2 लाख 31 हजार 456 रुपए बताई जा रही है। पुलिस ने शराब और वाहन को जब्त कर अज्ञात आरोपी के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। कार के रजिस्ट्रेशन नंबर के आधार पर मालिक और फरार चालक की तलाश शुरू कर दी गई है।

फर्जी लिंक खोलते ही 2.92 लाख उड़े

इंदौर। शहर में साइबर ठगों ने ठगी का एक नया तरीका अपनाते हुए वाहन चालान के नाम पर लोगों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। निजी कंपनी के कर्मचारी के मोबाइल पर ट्रैफिक चालान की फर्जी लिंक भेजकर उनके बैंक खाते से 2 लाख 92 हजार रुपए निकाल लिए गए। खजराना क्षेत्र निवासी नितिन जैन एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड हाईकोर्ट के पास स्थित कार्यालय में कार्यरत हैं। गत 9 दिसंबर को कार्यालयीन समय में उनके मोबाइल पर संदिग्ध एपीके लिंक आया, जिसमें वाहन चालान जमा करने का संदेश लिखा था। किसी पुराने चालान की आशंका में नितिन ने जैसे ही लिंक पर क्लिक किया, उनका मोबाइल हैक हो गया। लिंक खुलते ही कुछ ही सेकंड में उनके खाते से दो बार में राशि निकल गई। पहले 2 लाख और तुरंत बाद 92 हजार रुपए खाते से कट गए। पीड़ित ने तुरंत साइबर सेल और तुकोगंज थाने में शिकायत दर्ज कराई।

तेज रफ्तार वाली कार ने मचाया कहर

इंदौर। मल्हारगंज क्षेत्र में शनिवार तड़के तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर बड़ा हादसा कर बैठी। इतवारिया बाजार से मालगंज जाने वाले मार्ग पर सुबह करीब 3.45 बजे कार सड़क किनारे खड़े तीन दोपहिया वाहनों को टक्कर मारते हुए आयुर्वेदिक दवा की दुकान में जा घुसी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार दुकान में घुसने के बाद सड़क पर पलट गई। हादसे में दुकान का शटर पूरी तरह टूट गया और अंदर बना काउंटर करीब पांच फीट तक खिसक गया। बाहर बनी सीढ़ियां भी क्षतिग्रस्त हो गईं। दुकान मालिक शैलेंद्र दीघे ने बताया कि जोरदार धमाके की आवाज से पूरा परिवार नींद से जाग गया। उन्हें ऐसा लगा जैसे भूकंप आ गया हो। बाहर देखा तो कार पलटी हुई थी और उसमें सवार दो युवक निकलकर मौके से फरार हो गए। हादसे में तीन में से दो दोपहिया वाहन क्षतिग्रस्त हो गए। बताया जा रहा है कि कार भोपाल पासिंग की है। कार के एयरबैग खुलने से उसमें सवार युवकों की जान बच गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर कार को जब्त किया और उसमें रखे बीमा व अन्य दस्तावेज अपने कब्जे में ले लिए।

फेशियल के दौरान महिला के गहने गायब

इंदौर। परदेशीपुरा थाना क्षेत्र में स्थित नंदा नगर के ब्यूटी पार्लर में फेशियल कराने आई बुजुर्ग महिला का पर्स चोरी हो गया। पर्स में जेवरात और नकदी थे। फोनेक्स टाउनशिप गणेश वाटिका में रहने वाली फरियादी कौशल्या गुर्जर ने बताया कि वे नंदा नगर रोड नंबर 10 स्थित नव्या ब्यूटी पार्लर गई थीं। फेशियल से पहले उन्होंने मंगलसूत्र, कान के झाले और कांटे उतारकर पर्स में रख दिए थे। फेशियल के बाद जब उन्होंने पर्स देखा तो होश उड़ गए। पर्स में 27 ग्राम गहने और 10 हजार रुपए नहीं थे। पीड़िता ने पार्लर संचालिका उर्मिला जायसवाल और निधि जायसवाल पर चोरी का शक जताया है।

ऑटो की परमिट सीमा 60 किमी करने की मांग, सहमति हुई पर फैसला नहीं

इंदौर। ऑटो रिक्शा संचालन शहर से 60 किलोमीटर की परिधि में करने की अनुमति की प्रक्रिया लंबे समय से अटकी है। इसे लेकर ऑटो रिक्शा चालक एक बार फिर मुखर हो गए। बुधवार को बड़ी संख्या में रिक्शा चालक ट्रैफिक डीसीपी कार्यालय पलासिया पहुंचे और अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। चालकों ने जल्द निर्णय नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी भी दी। भगवा ऑटो रिक्शा चालक संघ के अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार त्रिपाठी के नेतृत्व में पहुंचे चालकों का कहना है कि जुलाई 2025 में इस मांग पर प्रशासनिक और राजनीतिक स्तर पर सहमति बन चुकी थी, लेकिन अधिकारियों के तबादले के बाद मामला फाइलों में ही अटका रह गया।

संघ के अनुसार जुलाई 2025 में हुई बैठकों में ऑटो परमिट सीमा को 15 किमी से बढ़ाकर 60 किमी करने पर सहमति जताई गई थी। तत्कालीन कलेक्टर मनीष सिंह ने वरिष्ठ अधिकारियों और विशेषज्ञों के साथ चर्चा कर आठ दिनों में आगे की प्रक्रिया तय करने की घोषणा भी की थी। इसके बावजूद 6 महीने से अधिक समय बीत जाने के बाद भी नियमों में बदलाव नहीं हो सका। संघ अध्यक्ष वीरेंद्र त्रिपाठी के मुताबिक ऑटो रिक्शा की परमिट सीमा 60 किमी किए जाने से चालक उज्जैन, देवास, ओंकारेश्वर, धार और देपालपुर जैसे क्षेत्रों तक यात्रियों को ले जा सकेंगे। इससे यात्रियों को किफायती और सुविधाजनक परिवहन मिलेगा, वहीं शहर के भीतर ऑटो रिक्शा का दबाव भी कम होगा।

डीसीपी ट्रैफिक से मिले ऑटो चालक, शहर में ऑटो का दबाव घटेगा

फिटनेस के नाम पर वसूली - अपने ज्ञापन में रिक्शा चालकों ने फिटनेस टेस्ट के दौरान हो रही कथित अवैध वसूली और नंबर प्लेट के नाम पर अतिरिक्त राशि वसूले जाने की शिकायत भी उठाई। चालकों का कहना है कि इन अनियमितताओं से उनकी आर्थिक स्थिति पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। इस मामले पर डीसीपी ट्रैफिक आनंद कलादगी ने रिक्शा चालकों को आश्वस्त किया कि वे सभी संबंधित विभागों से समन्वय कर मामले का शीघ्र समाधान निकालने का प्रयास करेंगे। संघ ने स्पष्ट किया है कि यदि जल्द निर्णय नहीं लिया गया तो मजबूरन आंदोलन का रास्ता अपनाया जाएगा।

21 से 26 जनवरी तक दिल्ली की दोपहर की उड़ानें निरस्त की गईं

एयर शो की तैयारी के चलते एयर इंडिया की उड़ानों पर रोक

इंदौर। इंदौर से दिल्ली की यात्रा करने वाले यात्रियों को 21 से 26 जनवरी के बीच असुविधा का सामना करना पड़ेगा। 26 जनवरी को राजधानी दिल्ली में होने वाली गणतंत्र दिवस परेड के दौरान एयर शो की तैयारियों के चलते दिल्ली एयरपोर्ट कुछ घंटों के लिए बंद रहेगा। विमानतल सूत्रों के अनुसार 21 से 26 जनवरी तक दिल्ली एयरपोर्ट पर रोजाना सुबह 10.20 बजे से दोपहर 12.45 बजे तक सभी उड़ानों का संचालन बंद रहेगा। इस संबंध में नोटिस टू एयरमैन (नोटम) जारी किया गया है, जिसके तहत सभी एयरपोर्ट्स को उड़ान संचालन की जानकारी दी जाती है। उड़ानों पर रोक के चलते एयर इंडिया ने अपनी दोपहर की दिल्ली उड़ान को 21 से 26 जनवरी तक निरस्त कर दिया है। यह उड़ान दिल्ली से दोपहर 12.10 बजे इंदौर आती है और 12.40 बजे वापस दिल्ली रवाना होती है। फिलहाल वापसी की उड़ान को निरस्त किया गया है। जबकि, आने वाली उड़ान को भी जल्द निरस्त किए जाने की संभावना है।

वेबसाइट से बुकिंग भी हटाई- एयर इंडिया ने 21 से 26 जनवरी के बीच दोपहर की उड़ान की बुकिंग को अपनी वेबसाइट से बंद कर दिया है। आने वाले दिनों में अन्य उड़ानों के भी निरस्त होने की संभावना जताई जा रही है। एयर इंडिया की वेबसाइट के अनुसार सामान्य दिनों में इंदौर-दिल्ली रूट पर एयर इंडिया और एयर इंडिया एक्सप्रेस की कुल 6 उड़ानें संचालित होती हैं, लेकिन 25 और 26 जनवरी को सिर्फ 2 उड़ानों की ही बुकिंग उपलब्ध है। यानी इन दो दिनों में रोजाना 4 उड़ानें निरस्त रहेंगी। संभावना है कि इंडिगो भी इस दौरान कुछ उड़ानें रद्द कर सकती है, जिससे यात्रियों की परेशानी और बढ़ सकती है।

जन्मदिन के दिन युवक ने आत्महत्या कर ली, सुसाइड नोट भी नहीं मिला

इंदौर। जन्मदिन के बाद युवक ने सुसाइड कर लिया। जब उल्टी हुई तो परिवार को पता चला और चंद पलों में खुशियां गम में बदल गई। युवक ने जहरीला पदार्थ खा लिया और उसकी तबीयत बिगड़ गई। अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन उसकी सांस हमेशा के लिए थम गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर एमवाय में उसका पीएम करवाया।

अन्नपूर्णा पुलिस के मुताबिक यह घटना महावर नगर की है। यहां रहने वाले वंश (20) पिता अनिल पारोचे का शुक्रवार को जन्मदिन था। परिवार में खुशी का माहौल था। परिवार के लोगों ने वंश का पूरे उत्साह के साथ जन्मदिन मनाया। बड़े भाई नीरज ने बताया कि वे विदुर नगर में रहते है, लेकिन उनका पुराना मकान महावर नगर में है। शुक्रवार को छोटे भाई का जन्मदिन मनाया। जिसके बाद परिवार के लोगों ने खाना खाया। उसने भी खाया और वह ऊपरी मंजिल पर अपने कमरे में चला गया। वहां उसने कुछ जहरीला पदार्थ खा लिया।

उल्टी हुई तो अस्पताल ले गए

भाई ने बताया कि वंश को जब उल्टी हुई और उसकी तबीयत बिगड़ने लगी तो मां को पता चला, जिसके बाद उसे प्राइवेट अस्पताल लेकर पहुंचे। वहां से एमवाय अस्पताल रेफर कर दिया। नीरज ने बताया कि वंश धार्मिक प्रवृत्ति का था। पूजा-पाठ करने वाला था। उसे माताजी भी आती थी। वह मां के साथ नगर निगम में काम करता था। उसने ऐसा क्यों किया ये परिवार के लोगों को भी समझ नहीं आ रहा है। उसके पास से कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है।

जहरीला पदार्थ खाने से गई जान

अन्नपूर्णा थाने के सहायक उपनिरीक्षक चंद्रपाल सिंह यादव ने बताया कि जहरीला पदार्थ खाने के कारण वंश को अस्पताल में भर्ती किया गया था। जहां आज उसने दम तोड़ दिया। उसके पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है, लेकिन पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। एमवाय में उसका पीएम करवाया जा रहा है। पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है।

संपादकीय

अब बीएमसी महापौर पर पेंच

महाराष्ट्र में नगर निगम चुनावों में भाजपा की उल्लेखनीय जीत के बाद महायुति में ही सत्ता को लेकर खींचतान शुरू हो गया है। बड़ा पेंच देश की सबसे अमीर मुंबई महानगरपालिका के महापौर को लेकर है, जहां महायुति की प्रमुख घटक और महाराष्ट्र में सत्ता में साझेदार शिवसेना (शिंदे) ने नया दांव चल दिया है। शिंदे सेना की मांग है कि चूंकि यह शिवसेना के संस्थापक बाला साहब ठाकरे का जन्म शताब्दी वर्ष है और मुंबई का महापौर भाजपा अपने दम पर नहीं बना सकती, इसलिए इस पद पर ढाई-ढाई साल की साझेदारी होनी चाहिए। उद्धव ठाकरे ने यह बयान देकर और हलचल मचा दी है कि मुंबई में किसी का भी मेयर हो सकता है। जबकि अपने दल के पार्षद न टूटें, इसलिए उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अपने सभी 29 पार्षदों को एक होटल में कैद कर दिया है। जाहिर है कि शिंदे भाजपा के साथ तगड़ी सौदेबाजी करने के मूड में हैं। जहां तक मुंबई के महापौर का सवाल है तो भाजपा किसी भी कीमत पर इसे नहीं छोड़ेगी, हां कुछ दूसरे नगर निगमों में समझौता हो सकता है। चूंकि भाजपा अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए साम, दाम, दंड भेद सभी का इस्तेमाल करती है, ऐसे में आश्चर्य नहीं कि शिंदे सेना में भी फूट पड़ जाए। हालांकि यह आसान नहीं है। क्योंकि भाजपा को अपना महापौर बनाने के लिए 25 और पार्षदों का समर्थन चाहिए। इतने पार्षद तोड़ने का अर्थ शिंदे सेना के लगभग सभी पार्षदों को तोड़ना होगा। यह आसान नहीं है। एकनाथ शिंदे जानते हैं कि चाहे भाजपा हो या फिर ठाकरे बंधु, उनकी पार्टी के समर्थन के बगैर किसी का महापौर नहीं बन सकता। शिंदे की चिंता यह है कि भाजपा ने उनके गढ़ ठाणे में भी सेंध लगा दी है। ऐसे में संभव है कि लेन देन के सिद्धांत के तहत शिंदे सेना को मना लिया जाए। यह भी तय है कि शिंदे उस हद तक विवाद को नहीं खींचेंगे कि उन्हें राज्य की सत्ता से बाहर होना पड़े। विधानसभा में भाजपा पूर्ण बहुमत से थोड़ी ही पीछे है। वह चाहे तो अजीत पवार के साथ मिलकर भी सत्ता कायम रख सकती है। लिहाजा शिंदे के ताजा तेवरों को कड़ी सौदेबाजी की रोशनी में ही देखा जाना चाहिए। वैसे भी शिंदे पर दिल्ली में अमित शाह का दबाव रहेगा ही। ऐसे में उनकी मुंबई की सत्ता में आधी-आधी साझेदारी पर भाजपा का सहमत होना असंभव है। क्योंकि बीएमसी के इतिहास में यह पहली बार है, जब भाजपा का मुंबई में महापौर बनने की स्थिति बनी है। इस पद पर काबिज होने के पीछे भाजपा का एक उद्देश्य उद्धव सेना की आर्थिक रीढ़ को तोड़ना है। मुंबई महापालिका इसका एक बड़ा स्रोत रही है। अगर मुंबई से पैसा आने पर लगाम लगी तो ठाकरे बंधुओं के लिए अगला चुनाव लड़ना भी मुश्किल हो जाएगा। साथ ही लगातार सत्ताविहीन रहकर राजनीतिक रूप से जिंदा रहना भी कठिन होता जाएगा। नगरीय निकायों के चुनावों ने साबित कर दिया है कि महाराष्ट्र में ठाकरे बंधु अब अपने अस्तित्व की आखिरी लड़ाई लड़ रहे हैं। हालांकि मुंबई महानगरपालिका में उन्हें जितनी सफलता मिली है, उससे ज्यादा की संभावना नहीं है। उन्हें राजीनीतिक रूप से खत्म करना भी बीजेपी की रणनीति है। कितनी सफल होगी, यह देखने की बात है। यूं भविष्य में शिंदे और ठाकरे की सेना का भाजपा में विलय हो जाए तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। इन चुनावों ने महाराष्ट्र में मराठा पालिटिक्स को भी हिला कर रख दिया है। उधर कांग्रेस की आंतरिक कलह सड़कों पर आ गई है। हार का ठीकरा मुंबई अध्यक्ष वर्षा गायकवाड़ पर फोड़ने वाले नेता जगताप को कांग्रेस आलाकमान ने 'कारण बताओ' नोटिस जारी किया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के सिद्धांतों पर अमल की हकीकत

नजरिया

रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

समय बहुत सारे घाव भर देता है और घटनाओं को समाज की याददाश्त से पीछे कर देता है जब तक मीडिया घटनाओं को जिंदा रखता है, जब तक वह आम और जन चर्चा में नजर आती हैं, परंतु मीडिया से ओझल होने के बाद केवल याद में दर्ज होकर रह जाती हैं। ऐसी ही घटना 10 नवंबर 25 को दिल्ली में हुई थी जो कुछ समय तक मीडिया और देश में चर्चित रही। 10 नवंबर की शाम को दिल्ली का विस्फोट कांड, जिसमें लगभग 13 लोग मारे गए थे। इसके कुछ माह पहले पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था, जिसमें पर्यटक मारे गए थे, उसके बाद भारत सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से पाक सीमा के अंदर जाकर अनेकों आतंकवादियों को मारा था और पाक सेना के कई मुख्य आतंकवादी अड्डों को नष्ट किया था, क्योंकि पहलगाम आतंकवादी घटना में सीधा पाक शामिल था अतः सरकार के पास इसका ठोस आधार भी था और देश ऐसी प्रतिक्रिया की प्रतिक्षा भी कर रहा था। अब दिल्ली में जो विस्फोट कांड हुआ है अभी तक प्राप्त सूचनाओं के अनुसार उसके पीछे भी पाकिस्तान की खुफियां एजेंसियां हैं, जो भारत में पहले भी आतंकवाद को प्रायोजित करती रही हैं और अभी भी कर रही हैं। इस आतंकवादी विस्फोट में जो मुख्य सूत्रधारों के नाम आए हैं उनके नाम डॉ. मुजम्मिल शकील, डॉ. आदिल, डॉ. उमर अहमद और शाहीन शाहिद के नाम मुख्य हैं, इनमें से एक शाहीन को छोड़कर बकाया तीनों लोग कश्मीरी हैं। यह बताया जा रहा है कि पाक के ड्रोन की मदद से जम्मू के खेतों में विस्फोटक गिराया था जहां से सेव फल की आड़ में फरीदाबाद तक वे उस विस्फोटक को लाए थे। यह आश्चर्य की बात है कि इतनी लंबी यात्रा के बाद भी कई राज्यों की अंतरराज्य सीमाएं पार करने के बाद भी जम्मू कश्मीर से फरीदाबाद तक बिना रोक-टोक के वह विस्फोटक ले आए। ना रास्ते में जांच हुई, ना कोई पकड़ा गया। मतलब साफ है कि भारत की पुलिस चाहे किसी राज्य की या धर्म की हो, भ्रष्टाचार के मामले में एक समान है। यह संभव नहीं है कि जम्मू कश्मीर की सीमा से लेकर फरीदाबाद तक की सारी पुलिस मुसलमान हो। यह कोई पहली बार नहीं हुआ है, बल्कि मुंबई के विस्फोट कांड में भी जो विस्फोटक लाया गया था उसे लाने और निकलवाने वाले सभी अधिकारी हिंदू थे। अच्छा होता कि सरकार जम्मू कश्मीर से फरीदाबाद तक सीमाओं के सुरक्षाकर्मियों और पुलिसकर्मियों के नाम प्रकाशित करती, ताकि हिंदू समाज भी जान सकता था कि हमारा राष्ट्रवाद कितना सस्ता है जो चंद रुपयों में बिक जाता है। जो लोग दिल्ली विस्फोट घटना के लिए जिम्मेदार थे या जो मरे या गिरफ्तार हुए वे नूह के चिकित्सा विद्यालय में पढ़े और चिकित्सक भी थे, शाहीन भी चिकित्सक थी। इसके पहले भी देश और दुनिया में जो लोग आतंकवाद की घटनाओं में शामिल या प्रायोजित रहे, वह सुशिक्षित वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ रहे हैं। अमेरिका में न्यूयॉर्क पर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला करने वाले भी पढ़े-लिखे लोग थे। अतरू एक प्रश्न यह भी आम चर्चा में है कि पढ़े-लिखे लोग आतंकवादी घटनाओं में क्यों शामिल होते हैं? क्या इसमें शिक्षा व्यवस्था का कोई दोष है या शिक्षा की कोई कमी है जो इंसान को तकनीक का ज्ञान तो देती है परंतु मानव नहीं बनाती? आतंकवाद के पढ़े-लिखे समर्थकों ने दिल्ली के विस्फोट की घटना की तुलना भगत सिंह से की, जिस पर से सिख समाज के लोगों ने आपत्ति की, यह आपत्ति सही है कि भगत सिंह ना आतंकवादी थे ना हिंसक थे। उन्होंने तो बम-जानबूझकर ऐसे स्थान पर फेंका था जहां सांसद लोग नहीं थे। उन्होंने कहा भी था कि मैं तो बहरों तक आवाज पहुंचाना चाहता हूं अगर उनका उद्देश्य हिंसा का होता तो वह बम वहां फेंकते जहां सांसद बैठे हुए थे। शहीद उधम सिंह ने भी जनरल डायर को गोलियां मारी थी किसी निर्दोष अंग्रेज की हत्या नहीं की थी, इसलिए ऐसी तुलना करना आतंकवाद की हिंसा का बचाव करने जैसा है।

कुछ लोग इन हिंसक आतंकवादी घटनाओं के लिए इस्लाम धर्म को ही दोषी मानते हैं और कुरान की कुछ पंक्तियों का उल्लेख भी करते हैं, कुछ लोग इसका संबंध जिहाद शब्द से जोड़ते हैं, हालांकि जिहाद का तात्पर्य उन लोगों के विरुद्ध था जो किसी पर जुल्म ढहाते हैं। जिहाद कोई व्यक्ति की प्रतिक्रिया नहीं है ना व्यक्ति समूह के हिंसा का दर्शन है, बल्कि वह तो किसी भी जुर्म करने वाले व्यक्ति या समूह के हमले के खिलाफ प्रति उत्तर का विचार है। निःसंदेह वह अहिंसक नहीं है। वह तो उस समय के समाज और काल के जीवन में उस समय की मान्यताओं और परिस्थितियों के अनुसार बताया हुआ रास्ता है। बाली की हत्या के समय जब बाली ने भगवान राम से पूछा था कि- मैं मेरी सुग्रीव प्यारा कारण कहो नाथ ना मोहि मारूय तो राम ने उत्तर दिया था अनुज वधु भगिनी सुतनारी, सुनुसठकन्या समए चारी, इन्हहि कुदृष्टि विलोकइजोई, ताहि बंधे कछु पाप न होई, यह काल दृष्टि भगवान राम के काल में व्यक्ति के द्वारा एक स्वीकार परंपरा थी, परंतु अब वर्तमान समाज में दंड देने का अधिकार किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि न्याय व्यवस्था का है। अगर कोई व्यक्ति निजी तौर पर दंड देता है वह भी अपराधी होता है जिस प्रकार के व्यवस्थागत नियमों में परिवर्तन हिंदू मतावलंबियों में हुए हैं और लोकतंत्र तथा आधुनिक कानूनों को स्वीकार किया है। उसी प्रकार के परिवर्तन अन्य धर्मों में भी होना चाहिए। परंतु जो कई धार्मिक संप्रदाय हैं वे अपने धार्मिक परंपराओं में कोई बदलाव नहीं चाहते। यह समस्या इस्लाम के साथ भी है। इस पर विचार होना चाहिए कि धर्म के कौन से हिस्से आज प्रासंगिक है और कौन से हिस्से परिवर्तनीय है। आमतौर पर धर्म में कुछ जीवन मूल्य और दर्शन होता है, कुछ मानवता के सूत्र होते हैं, कुछ परंपराएं होती हैं और कुछ दंड विधान के नियम होते हैं जो शाश्वत, मानवीय मूल्य है वे तो स्थाई है, बकाया परिवर्तनशील है। मैं समझता हूं कि अगर सभी धर्म के धर्म गुरु इन चार खंडों में बँटकर धर्म को नए सिरे से परिभाषित करें तो निदान हो सकता है, यानी मानवता के जीवन दर्शन के जो सामाजिक मूल्य हैं और जो एक मानवीय दुनिया बनाने के लिए आवश्यक हैं उन्हें स्थाई रखा जाए परंतु परंपराओं और दंड विधान में समसामयिक और लोकतांत्रिक परिवर्तन किए जाएं। जब आजादी के पहले का भारत जिसमें पाकिस्तान, बंगलादेश और भारत शामिल था, अंग्रेजों के अधीन था तब हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्म के लोगों ने एक दंड विधान स्वीकार किया और अपने-अपने धार्मिक नियम या विधान छोड़ दिए। एक आईपीसी और एक सीआरपीसी स्वीकार की। परंतु अब अनेक लोग ऐसे हैं जो 1500 साल पीछे जाना चाहते हैं और मजहबी व्यवस्था को लागू करना चाहते हैं। देश दुनिया का एक बड़ा हिस्सा यह मानता है कि इस्लाम में हिंसा व प्रति हिंसा जैसे प्रावधान है जो कुरान में लिखे गए हैं। यानी इस्लाम जिन्हें अपरिवर्तनीय मानता है और अपने अनुयायियों में हिंसा का भाव पैदा करता है इसी आधार पर कुछ लोग यह प्रश्न उठाते हैं कि इस्लामी देशों में और इस्लाम के विभिन्न पंथों में भी आपस में इतनी हिंसा और मार काट है कि वह एक-दूसरे के अनुयायियों को लाखों की संख्या में मार देती है। इस्लामी देशों में अमूमन पंथी गृह युद्ध है और जिन देशों में मुस्लिम और अन्य धर्मावलंबी लगभग बराबर हैं वहां भी धर्म के नाम की हिंसा और गृह युद्ध अमूमन है। सीरिया, लेबनान जैसे कितने ही देशों का उदाहरण देखा जा सकता है। इस गंभीर प्रश्न पर मुसलमान भाइयों और धर्म गुरुओं को भी विचार करना चाहिए।

मुझे छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के बरेलवी संप्रदाय के मुस्लिम भाइयों ने एक ज्ञापन दिया था जिसमें राज्यपाल महोदय से प्रार्थना की गई कि वहां के दूसरे पंथ के मुस्लिम भाई उन्हें कब्रिस्तान में मुर्दा नहीं गाड़ने देते। इसको लेकर कई बार आपस में काफी संघर्ष भी हो चुके हैं, आखिर यह विचारणीय तो है। मदरसों में भी जहां इस्लामी शिक्षा दी जाती है उस पर भी मुस्लिम भाइयों को विचार करना चाहिए। मैंने अनेक छोटे-छोटे बच्चों को देखा है जो इन मदरसों में पढ़ने को जाते हैं और लौटकर आने के बाद उनकी सामाजिक समरसता कम हो जाती है। मेरे पड़ोस में एक बच्चा रहता था जिसका नाम बिलाल है, वह यदा कदा हमारे पास आ जाता था, बैठता था, खुलकर बातचीत करता था। जब वह 7 वर्ष का हो गया तो उसके पिता ने उसे धार्मिक शिक्षा के लिए मदरसा ले गए। आरंभ में वह सुबह जाता था और शाम को लौटता था और धीरे-धीरे उसका वहां कुछ दिन रुकना हो गया, जो उनके यहां शिक्षण की प्रक्रिया होती है। कुछ दिनों बाद उसका मिलना-जुलना कम हो गया। ऐसा अनुभव मुझे कई बार आया है कि मदरसे की शिक्षा के बाद बच्चे कुछ सीमित दुनिया के हो गए, उनमें खुलेपन के स्थान पर कुछ बंद और छुपाव जैसा रहने लगा। यह उनकी धार्मिक शिक्षा व्यवस्था की कुछ कमी है, या क्या कारण है, इस पर भी विचार होना चाहिए। हिंदू विद्यालयों और संस्कृत विद्यालयों में भी जो बच्चे पढ़ने जाते हैं, वे अध्ययन के साथ-साथ बाह्य प्रतीकों के पर्याय बन जाते हैं। सभी धर्मों या धार्मिक संस्थाओं को यह देखना चाहिए कि धार्मिक शिक्षा व्यक्ति को अलग-अलग ना करें, बल्कि उन्हें व्यापक और समरस बनाएं।

कश्मीर के आतंकवाद की घटना और दिल्ली के विस्फोटक की घटनाओं में जो लोग पकड़े गए हैं या जिनके नाम आए हैं उनमें आमतौर पर कश्मीरी ही है, भारत सरकार ने धारा 370 को समाप्त कर उसे श्पूर्ण विलय्य कहा है, परंतु ऐसा महसूस हो रहा है कि इतने दिनों के बाद भी अभी तक इस विलय को और उसकी उपयोगिता को कश्मीरी भाई समझ नहीं सके। 370 का कोई वैचारिक या तार्किक पक्ष पहले भी नहीं बचा था, यह केवल भावनात्मक जैसा था। परंतु दूसरा पक्ष यह भी है कि भारत सरकार भी अभी तक कश्मीर के लोगों को तार्किक आधार पर यह महसूस नहीं करा सकी। मैं मानता हूँ कि कश्मीर की संकीर्ण और मजहबी राजनीति इसके पीछे है परंतु इन शक्तियों को उत्तर देना और समझाना यह तो अंततरू भारत को ही करना होगा। विदेशी ताकतें जो भारत को मजबूत और स्थिर नहीं होने देना चाहती हैं उनसे कोई अपेक्षा करना व्यर्थ है, उनका उपयोग तर्क के रूप में भले ही करते रहें, परंतु उससे कोई हल नहीं निकलेगा। एक राज्य के तौर पर हमें विदेशी पूंजी और विदेशी ताकतों को खुद रोकना होगा। यह एक स्थाई तर्क या बहाना नहीं हो सकता, अगर हम कश्मीरी अवाम को समझाकर साथ नहीं ले सकेंगे तो बंदूक की ताकत से ना राज्य बनाए जा सकते हैं, ना चलाए जा सकते हैं। भारत के विपक्षी दलों को भी अपनी भूमिका पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। दल और सत्ता बाद में है, पहले तो देश होता है। साथ ही पाक अधिकृत कश्मीर जो वैधानिक रूप से भारत का हिस्सा है इसे वापस मिलाना भी, अगर कश्मीरी अवाम दिल से सहमत नहीं होंगे तो कठिन होगा। पाक की जनता पाक सरकार से असंतुष्ट है और विद्रोह की कगार पर है, परंतु वह भारत के पक्ष में भी नहीं है। हमें एक ऐसा वतन बनाना होगा कि कश्मीर और पीओके की आवाम यह कहे कि हम भारतीय हैं और अपनी स्वेच्छा से भारत के साथ रहना कबूल करें। 370 के हटाये जाने के बाद एक अवसर आया था परंतु सरकार ने इसका बेहतर इस्तेमाल नहीं किया।

दिल्ली की आतंकवादी घटना में शामिल लोगों ने 2900 किलोग्राम विस्फोटक जमा किया था और उसके साथ इस्तेमाल किए गए 26 लाख रुपए की राशि एकत्रित कर 26 क्विंटल खाद भी खरीदी थी। एक प्रश्न यह है कि आखिर भारत सरकार के गोपनीय विभाग और अधिकारियों को इसकी जानकारी क्यों नहीं हो सकी, यह उनकी स्पष्ट असफलता है। चाणक्य ने कहा था कि-राज्य की गोपनीय सूचना तंत्र को ऐसा होना चाहिए जो दुश्मन की हर खबर रख सके। भगवान राम ने भी भरत मिलाप में भरत से पूछा था कि श्अयोध्या के शत्रुओं की गुप्त सूचना होती हैं या नहीं। अब इसका उत्तर तो भारत सरकार को ही देना होगा कि भगवान राम से लेकर चाणक्य तक जो राष्ट्रीय सुरक्षा के सिद्धांत बताए गए थे उन पर सरकार ने अमल क्यों नहीं किया?

गरीबों की नजर से जलवायु परिवर्तन

पर्यावरण

डॉ. मनीष जैसल
लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

भारत जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से जूझ रहा है, लेकिन इस जंग का सबसे बड़ा बोझ वह लोग उठाते हैं जिनके पास पहले से ही सबसे कम संसाधन होते हैं, यानि गरीब किसान, खेतिहर मजदूर, अनौपचारिक क्षेत्र के कामगार और शहरी व ग्रामीण मजबूर परिवार। जब तापमान बढ़ता है, जब बारिश असमय होती है, या जब बाढ़ आती है, तो सबसे पहले उनकी आजीविका गिरती है, उनका खून-पसीना बर्बाद होता है, और एक अलग किस्म की गरीबी उनकी जिंदगी में नयी ज्यामिति से फैलती है। इसके बावजूद हमारी जलवायु नीतियाँ अब भी अक्सर बड़े लक्ष्य और तकनीकी समाधानों पर केंद्रित रहती हैं जो अर्थव्यवस्था के औजारों पर अधिक, और गरीबों पर कम ध्यान देती है। जलवायु नीति की बहस में गरीब अक्सर आंकड़ों के पीछे छूट जाता है।

पिछले तीन दशकों में भारत का औसत तापमान एक डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ चुका है। यह वृद्धि किसी प्रयोगशाला की रिपोर्ट भर नहीं है। यह उस मज़दूर की थकान में दर्ज है जो दोपहर की धूप में काम करने को मजबूर है, और उस किसान की चिंता में जो बादलों की ओर देखकर अनुमान लगाने की कोशिश करता है कि इस बार बारिश साथ देगी या नहीं। बढ़ती गर्मी का सीधा असर काम करने की क्षमता पर पड़ता है। खुले में श्रम करने वालों के लिए हर अतिरिक्त गर्म दिन कमाई में कटौती है। जिनके पास न बचत है, न सामाजिक सुरक्षा, उनके लिए यह कटौती धीरे-धीरे स्थायी गरीबी में बदल जाती है।

उत्तर प्रदेश में इस संकट की तीव्रता और साफ दिखाई देती है। यहां की बड़ी आबादी खेती और अनौपचारिक रोज़गार पर निर्भर है। गर्मी की लहरें अब अधिक दिनों तक टिकती हैं और मानसून की अनिश्चितता खेती को जोखिम भरा बना चुकी है। पूर्वांचल और तराई के इलाकों में बाढ़ की आवृत्ति बढ़ी है, जिससे हर कुछ वर्षों में वही परिवार बार-बार विस्थापित होते हैं। विस्थापन केवल घर छोड़ने का नाम नहीं है, यह बच्चों की पढ़ाई का टूटना है, इलाज का रुक जाना है और आजीविका के साधनों का खत्म हो जाना है। शहरी इलाकों में भी हालात बेहतर नहीं हैं। छोटे दुकानदार, रिक्शा चालक और फुटपाथ पर काम करने वाले लोग मौसम की मार से सबसे पहले प्रभावित होते हैं, क्योंकि उनकी आय हर दिन के काम पर निर्भर करती है।

मध्य प्रदेश की कहानी वर्षा-निर्भर खेती की असुरक्षा को उजागर करती है। राज्य की कृषि का बड़ा हिस्सा मानसून पर टिका है, और बारिश के स्वरूप में थोड़ा-सा भी बदलाव किसानों के लिए बड़े नुकसान का कारण बन जाता है। देर से आने वाला मानसून, बीच में लंबा सूखा या अचानक तेज़ बारिश इन सबका असर फसल पर पड़ता है। छोटे और सीमांत किसानों के पास जोखिम से निपटने के साधन सीमित होते हैं। जब फसल खराब होती है, तो कर्ज़ बढ़ता है और पलायन मजबूरी बन जाता है। ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर होने वाला यह पलायन केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक विघटन की प्रक्रिया भी है, जिसमें परिवार और समुदाय धीरे-धीरे बिखरते चले जाते हैं।

महाराष्ट्र में जलवायु संकट कई रूपों में सामने आता है। विदर्भ और मराठवाड़ा लंबे समय से सूखे के दबाव में हैं, जहाँ खेती लगातार घाटे का सौदा बनती जा रही है। पानी की कमी, बढ़ती लागत और अनिश्चित मौसम किसानों की मानसिक और आर्थिक सेहत पर गहरा असर डालते हैं। दूसरी ओर, मुंबई और कोंकण क्षेत्र में बाढ़ और समुद्री स्तर में वृद्धि का खतरा बढ़ रहा है। शहर की गरीब बस्तियाँ अक्सर सबसे निचले और सबसे असुरक्षित इलाकों में बसी होती हैं, जहाँ मामूली बारिश भी तबाही का रूप ले लेती है। इन इलाकों में रहने वाले लोग न केवल घर खोते हैं, बल्कि काम के अवसर भी खो देते हैं, जिससे गरीबी का दायरा और फैलता है।

जलवायु और गरीब के रिश्ते को समझने में साहित्य भी हमारी मदद करता है। प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' का हल्कू आज भी प्रासंगिक है। कहानी में पाले से जूझता किसान उस वर्ग का प्रतिनिधि है जिसकी जिंदगी मौसम की दया पर टिकी होती है। फर्क सिर्फ़ इतना है कि आज का किसान केवल पाले से नहीं, बल्कि गर्मी, सूखे, अतिवृष्टि और बेमौसम आपदाओं से एक साथ जूझ रहा है। प्रेमचंद ने जिस असहायता को अपने समय में दर्ज किया था, जलवायु परिवर्तन ने उसे और गहरा बना दिया है। यह साहित्यिक प्रसंग हमें याद दिलाता है कि मौसम का अन्याय सदियों से गरीब के साथ जुड़ा रहा है, बस उसका रूप बदलता रहा है।

भारत में जलवायु से निपटने के लिए योजनाएँ बन रही हैं और यह सकारात्मक संकेत है। लेकिन असली सवाल इन योजनाओं की पहुंच और प्रभाव का है। यदि हीट एक्शन प्लान मजदूर तक नहीं पहुंचता, यदि फसल बीमा छोटे किसान के लिए बोझिल साबित होता है, यदि शहरी जलवायु योजनाओं में झुग्गी बस्तियाँ हाशिए पर रह जाती हैं, तो नीति का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। जलवायु समाधान तब तक टिकाऊ नहीं हो सकते, जब तक वे उन लोगों को सुरक्षा नहीं देते जो सबसे कम सहनशील हैं।

जलवायु परिवर्तन से लड़ाई तकनीक और पूंजी से कहीं अधिक सामाजिक संवेदनशीलता की मांग करती है। यह लड़ाई तब ही जीती जा सकती है, जब नीतियों का केंद्र वही लोग हों जो सबसे पहले और सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। जलवायु न्याय कोई भावनात्मक नारा नहीं, बल्कि व्यावहारिक आवश्यकता है। भारत का भविष्य तभी सुरक्षित होगा, जब उसके गरीब नागरिक सुरक्षित होंगे। मौसम के बदलते मिज़ाज के साथ यदि हमारी नीतियाँ मानवीय नहीं बदलीं, तो विकास की सारी इमारत अस्थिर नींव पर खड़ी रह जाएगी।

मानव तस्करी : कुंठित सोच का परिणाम

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया
लेखक स्तंभकार हैं।

मानव तस्करी आज के समय की सबसे गंभीर, अमानवीय और शर्मनाक सामाजिक समस्याओं में से एक है। यह केवल कानून-व्यवस्था की विफलता नहीं, बल्कि समाज की कुंठित, संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण सोच का प्रत्यक्ष परिणाम है। जब मनुष्य, मनुष्य को वस्तु समझने लगता है, जब लालच, सत्ता और वासना मानवीय मूल्यों पर हावी हो जाते हैं। तब मानव तस्करी जैसी अमानवीय प्रवृत्तियाँ जन्म लेती हैं। यह समस्या किसी एक देश, वर्ग या लिंग तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे विश्व को प्रभावित कर रही है।

मानव तस्करी का अर्थ केवल लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना नहीं है, बल्कि इसमें शोषण, बंधुआ मजदूरी, बाल श्रम, यौन शोषण, जबरन विवाह, घरेलू गुलामी और अंगों की अवैध खरीद-बिक्री जैसी अनेक क्रूरताएँ शामिल हैं। इसके शिकार अधिकतर महिलाएँ, बच्चे और गरीब वर्ग के लोग होते हैं, जिनकी असहाय स्थिति का फायदा उठाया जाता है। प्रश्न यह है कि आखिर मानव तस्करी की जड़ में क्या है? इसका उत्तर हमें समाज की सोच में छिपी विकृतियों में मिलता है।

सबसे पहले, आर्थिक असमानता और गरीबी मानव तस्करी को बढ़ावा देने वाला बड़ा कारण है। जब समाज का एक वर्ग अत्यधिक समृद्ध और दूसरा अत्यधिक गरीब होता है, तब गरीब वर्ग बेहतर जीवन की तलाश में झूठे सपनों का शिकार बनता है। रोजगार, शिक्षा और सम्मानजनक जीवन का लालच देकर तस्कर लोगों को फँसा लेते हैं। लेकिन इस आर्थिक असमानता को बनाए रखने में समाज की वही सोच जिम्मेदार है जो गरीब को कमजोर और अमीर को सर्वशक्तिमान मानती है। दूसरा कारण है स्त्री और बच्चों के प्रति विकृत दृष्टिकोण। कई समाजों में आज भी महिलाओं को समान अधिकार नहीं दिए जाते। उन्हें बोझ, वस्तु या मनोरंजन का साधन समझा जाता है। यही कुंठित मानसिकता मानव तस्करी को जन्म देती है। जब लड़की की शिक्षा, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को महत्व नहीं दिया जाता, तब वह आसानी से शोषण का शिकार बन जाती है। बच्चों के मामले में भी यही स्थिति है। बाल श्रम और बाल तस्करी समाज की उस सोच को उजागर करती है जिसमें बच्चों को भविष्य नहीं, बल्कि सस्ता श्रमिक माना जाता है।

तीसरा महत्वपूर्ण कारण है नैतिक मूल्यों का पतन। आधुनिक समाज में भौतिक सुख, धन और सत्ता की अंधी दौड़ ने मानवीय संवेदनाओं को कमजोर कर दिया है। जब व्यक्ति केवल अपने लाभ के बारे में सोचता है और दूसरों के दर्द से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, तब मानव तस्करी जैसी क्रूरता को अंजाम देना आसान हो जाता है। यह कुंठा और संवेदनहीनता समाज को अंदर से खोखला कर रही है।

मानव तस्करी में शिक्षा की कमी भी अहम भूमिका निभाती है। अशिक्षा केवल अक्षर ज्ञान की कमी नहीं, बल्कि अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी का अभाव भी है। जब लोगों को अपने अधिकारों की जानकारी नहीं होती, तब वे आसानी से धोखे में आ जाते हैं। समाज की यह सोच कि शिक्षा केवल कुछ वर्गों के लिए जरूरी है, तस्करी जैसी समस्याओं को और गहरा बनाती है। इसके अतिरिक्त, कानूनों का कमजोर क्रियान्वयन भी मानव तस्करी को बढ़ावा देता है। कानून तो मौजूद हैं, लेकिन समाज का एक हिस्सा अपराधियों को संरक्षण देता है, या फिर चुप्पी साध लेता है। यह चुप्पी भी कुंठित सोच का ही रूप है, जहाँ लोग यह मान लेते हैं कि 'यह हमारी समस्या नहीं है।' वास्तव में, यही उदासीनता अपराधियों को ताकत देती है। मानव तस्करी के परिणाम अत्यंत भयावह होते हैं। पीड़ित व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से टूट जाता है। उसका आत्मसम्मान समाप्त हो जाता है और वह जीवन भर उस पीड़ा को ढोता रहता है। समाज भी इससे अछूता नहीं रहता। जब किसी समाज में मानव तस्करी बढ़ती है, तो वहाँ विश्वास, सुरक्षा और नैतिकता का ह्रास होता है। ऐसा समाज प्रगति के नाम पर केवल खोखले विकास की ओर बढ़ता है। इस समस्या से निपटने के लिए सबसे पहले सोच में बदलाव आवश्यक है। हमें मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखना सीखना होगा, न कि वस्तु के रूप में। महिलाओं और बच्चों को समान अधिकार, सम्मान और अवसर देने होंगे। शिक्षा को केवल डिग्री तक सीमित न रखकर नैतिक और मानवीय मूल्यों से जोड़ना होगा। परिवार, विद्यालय और समाज - तीनों को मिलकर संवेदनशील नागरिक तैयार करने होंगे।

सरकार की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कड़े कानूनों के साथ-साथ उनका प्रभावी क्रियान्वयन जरूरी है। पीड़ितों के पुनर्वास, मानसिक उपचार और समाज में पुनः सम्मानजनक जीवन दिलाने के प्रयास किए जाने चाहिए। साथ ही, समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सजग रहना होगा और किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि के प्रति आवाज उठानी होगी।

निष्कर्षतः, मानव तस्करी केवल अपराध नहीं, बल्कि समाज की कुंठित सोच का आईना है। जब तक हम अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे, तब तक कानून और योजनाएँ अधूरी रहेंगी। एक संवेदनशील, जागरूक और नैतिक समाज ही मानव तस्करी जैसी अमानवीय समस्या को जड़ से समाप्त कर सकता है। मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान उसकी मानवता है, और उसी की रक्षा करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दीवारों पर अब पेंट नहीं, 'अपराधबोध' की परतें

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
लेखक व्यंग्यकार हैं।

सरस्वती अम्मा जब अपने बड़े बेटे विकास के आलीशान पेंटहाउस में रहने आईं, तो अपने साथ बिस्तरों के बीच लपेटकर एक पुरानी, पीली पड़ चुकी पत्थर की सिल और बट्टा लाई थीं। विकास ने करोड़ों की लागत से 'मॉड्यूलर किचन' बनवाया था, जहाँ बटन दबाते ही मसाले खुद-ब-खुद पिस जाते थे।

'माँ, यह पत्थर क्यों लाईं? हाथ दुखने लगेंगे, मिक्सी है न!' विकास ने मुस्कुराकर कहा।

सरस्वती अम्मा ने एक मार्मिक, अपराधी जैसी मुस्कान बिखेरी। 'बेटा, मिक्सी की आवाज़ से तेरी शांति भंग होगी। और वैसे भी, मुझे तो अब पत्थर की तरह ही घिसना है। तू बस अपनी तरक्की देख, मेरी हड्डियों की कटकटाहट पर ध्यान मत दे। '

अगले ही दिन से 'मौन युद्ध' शुरू हो गया।

विकास की पत्नी, ईशा, ने अम्मा के लिए एक महँगी 'मसाज चेयर' खरीदी थी ताकि उनके घुटनों का दर्द कम हो सके। पर अम्मा उस पर कभी नहीं बैठीं। वे घर की उस बालकनी के फर्श पर बैठतीं जहाँ सीधी धूप और धूल आती थी। जब ईशा उन्हें उठाने जाती, तो वे सजल आँखों से कहतीं, 'बहु, मुझे इस मखमल की आदत मत डाल। कल को जब यमराज आएँगे, तो मैं उन्हें ये नहीं कह पाऊँगी कि मैं मखमल छोड़कर नहीं चल सकती। मुझे ज़मीन की आदत रहने दे, ताकि तुझे मेरी कमी महसूस न हो। 'ईशा को लगा जैसे किसी ने उसके प्यार भरे उपहार को 'स्वार्थ' का ठप्पा लगा दिया हो। वह कुर्सी ड्राइंग रूम में एक लावारिस लाश की तरह पड़ी रही, जिसे देखकर मेहमान पूछते- 'अम्मा फर्श पर क्यों बैठी हैं?' और विकास की सफलता उसी पल फर्श पर रेंगती नज़र आती। अम्मा की 'मार्मिक सेवा' का अगला पड़ाव था-खाना। घर में दो रसोइए थे, पर अम्मा ने कसम खा ली थी कि वे अपना खाना खुद बनाएँगी। वे भरी दोपहर में, जब एसी की ठंडी हवा कमरों में तैरती, रसोई के एक कोने में पसीने से तर-बतर होकर अपने लिए दो मोटी रोटियाँ सेंकतीं।

विकास ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'माँ, महाराज (रसोइया) खड़ा है, आप क्यों तप रही हैं?'

अम्मा ने पल्लू से माथे का पसीना पोंछा और एक ऐसी आह भरी जो सीधे विकास के कलेजे को चीर गई। 'बेटा, जब तू छोटा था, तो मैंने चूल्हे की आग में अपनी आँखें गलाई थीं। अब इन गैस के चूल्हों से क्या डरना? तू अपनी 'स्टेटस' वाली दावतें उड़ा, मुझे तो बस इस पसीने का स्वाद ही भाता है। वैसे भी, बड़े घरों में बूढ़ों का हाथ चलते रहना चाहिए, वरना लोग कहते हैं कि बोझ बन गई है। '

उस रात विकास को लगा कि उसने रोटी नहीं, अपनी माँ का पसीना खाया है। उसका डिनर टेबल एक 'प्रताड़ना केंद्र' बन गया था। पराकाष्ठा तब हुई, जब विकास ने अम्मा के कमरे में 'रिमोट वाला बेड' लगवाया। अम्मा ने उस बिस्तर को छुआ तक नहीं। वे रात को पतली सी दरी बिछाकर कमरे के दरवाज़े के ठीक पीछे सो जातीं। जब रात को विकास पानी पीने के लिए बाहर निकलता, तो दरवाज़ा अम्मा के शरीर से टकराता।

'माँ! यहाँ क्यों सो रही हैं? चोट लग जाएगी!' विकास हड़बड़ाकर चिल्लाता।

अम्मा अँधेरे में उठकर बैठतीं और अपनी आवाज़ में दुनिया भर की करुणा भरकर कहतीं, 'दरवाज़े के पीछे इसलिए सोती हूँ बेटा, ताकि अगर रात को तुझे मेरी ज़रूरत पड़े, तो तुझे आवाज़ न देनी पड़े। मेरी देह से टकराकर तुझे पता चल जाए कि तेरी माँ अभी ज़िंदा है। बिस्तर तो राजाओं के लिए होते हैं, माँ तो बस एक ढाल होती है। विकास उस रात सो नहीं सका। उसे अपनी सफलता एक अपराध लगने लगी। उसे लगा कि वह एक ऐसा विलासी राक्षस है जिसने अपनी माँ को दरवाज़े का पायदान बना दिया है। अम्मा की यह 'भयानक विनम्रता' एक ऐसा अदृश्य कोड़ा थी, जिसकी हर फटकार पर समाज की तालियाँ बजती थीं और विकास की पीठ नीली पड़ रही थी।

एक दिन हारकर विकास ने कहा, 'माँ, आप जो चाहेंगी वही होगा। बताइये आपको क्या चाहिए? मैं यह सब ऐशो-आराम छोड़ दूँ? '

अम्मा ने विकास के सिर पर हाथ रखा, उनकी आँखों में एक 'विजयी पवित्रता' थी। वे बोलीं, 'मुझे कुछ नहीं चाहिए बेटा। बस तू खुश रह। मैं तो बस अपनी अंतिम यात्रा की रिहर्सल कर रही हूँ। तू तो मुझे अपनी कार में घुमाना चाहता है, पर मैं तो नंगे पाँव चलने का अभ्यास कर रही हूँ ताकि तुझे मेरे जाने के बाद कंधे का बोझ भारी न लगे। '

विकास फूट-फूट कर रो पड़ा। वह समझ गया कि वह अम्मा की 'ममता के सिंहासन' को कभी नहीं जीत पाएगा। अम्मा ने दुखी होने का वह 'नैतिक ऊँचाई' वाला स्थान चुन लिया था, जहाँ से वे उसे ताउम्र अपराधी महसूस करा सकती थीं। उस घर की दीवारों पर अब पेंट नहीं, 'अपराधबोध' की परतें थीं। अम्मा जीत चुकी थीं। वे उस घर की सबसे बड़ी 'त्यागी' थीं, जिनकी सादगी ने पूरे परिवार की सुख-शांति को सरेआम सूली पर टाँग दिया था।

कानून और न्याय

विदेश यात्रा का अधिकार-2

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

विदेश जाना व्यक्तिगत आजादी के अधिकार का हिस्सा

'व्यक्तिगत स्वतंत्रता' शब्द की व्याख्या प्रतिबंधित और कठोर अर्थ में नहीं, बल्कि उदार और व्यापक अर्थ में की जानी चाहिए। अनुच्छेद 21 विदेश जाने की स्वतंत्रता की गारंटी देता है। विदेश यात्रा का अधिकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का ही एक हिस्सा है। किसी भी नागरिक को इस अधिकार से तब तक वंचित नहीं किया जा सकता जब तक वह कानूनी प्रक्रिया का पालन न करे। इसके अलावा, 1967 के पासपोर्ट अधिनियम में पासपोर्ट धारक के पासपोर्ट को जब्त करने, रद्द करने या हिरासत में लेने का कोई प्रावधान नहीं है।

मेनका गांधी का पासपोर्ट 1 जून, 1976 को पासपोर्ट अधिनियम 1967 के अनुसार जारी किया गया था। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय (नई दिल्ली) ने 2 जुलाई, 1977 को उनसे अपना पासपोर्ट जमा करने को कहा। याचिकाकर्ता ने इसे विदेश मंत्रालय के मनमाना और एकतरफा फैसला बताया। बाद में, याचिकाकर्ता ने सर्वोच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर की। इसमें दावा किया गया कि राज्य द्वारा उसके पासपोर्ट को जब्त करना अनुच्छेद 21 द्वारा संरक्षित उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का स्पष्ट उल्लंघन था। सतवंत सिंह साहनी बनाम रामारत्नम के मामले में, सर्वोच्च न्यायालय ने पाया कि विदेश यात्रा का अधिकार अनुच्छेद 21 के दायरे में आता है। मेनका गांधी बनाम भारत संघ के मामले में न्यायालय के समक्ष अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे थे। क्या मौलिक अधिकार निरपेक्ष हैं या सशर्त हैं और भारत के संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किए गए ऐसे मौलिक अधिकारों का दायरा कितना है? क्या अनुच्छेद 21 के तहत 'विदेश यात्रा का अधिकार' संरक्षित है या नहीं? भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 द्वारा गारंटीकृत अधिकारों के बीच क्या संबंध है? कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के दायरे का निर्धारण किया जाना चाहिए। क्या पासपोर्ट अधिनियम, 1967 की धारा 10(3)(सी) में निर्धारित प्रावधान मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। यदि ऐसा है, तो क्या ऐसा विधान एक ठोस कानून है? क्या क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी का विवादित आदेश प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है?

याचिकाकर्ता को कहा था कि विदेश यात्रा का अधिकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का ही एक हिस्सा है, और किसी भी नागरिक को इस अधिकार से तब तक वंचित नहीं किया जा सकता जब तक वह कानूनी प्रक्रिया का पालन न करे। इसके अलावा, 1967 के पासपोर्ट अधिनियम में पासपोर्ट धारक के पासपोर्ट को जब्त करने, रद्द करने या हिरासत में लेने का कोई प्रावधान नहीं है। परिणामस्वरूप, यह अधिनियम तर्कहीन और मनमाना है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता को सुनवाई का अवसर न देकर केंद्र सरकार ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 का उल्लंघन किया है। परिणामस्वरूप, अनुच्छेद 21 का वास्तविक अर्थ, साथ ही इसकी प्रकृति और संरक्षण को स्थापित करना आवश्यक है। साथ ही किसी भी कानूनी प्रक्रिया में मनमानी नहीं होनी चाहिए और उसे 'प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों' का पालन करना चाहिए। संविधान सभा के आशय को बनाए रखने और हमारे संविधान की भावना को प्रभावी बनाने के लिए मौलिक अधिकारों को एक दूसरे के अनुरूप पढ़ा जाना चाहिए, और इस स्थिति में, भारत के संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 को एक साथ पढ़ा जाना चाहिए। इसके अलावा ऑडी अल्टरम पार्टम, जिसका अर्थ है कि याचिकाकर्ता को सुनवाई का मौका नहीं दिया गया, प्राकृतिक न्याय का एक मूलभूत घटक है।

इस ऐतिहासिक मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि अदालत ने संविधान के स्वरूप को तब बदल दिया जब उसने फैसला सुनाया कि हालांकि अनुच्छेद 21 का पाठ कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया को संदर्भित करता है। लेकिन, ऐसी विधि मनमानी या अनुचित नहीं हो सकती है। संविधान के रचनाकारों का उद्देश्य कभी भी इस पद्धति को निष्पक्ष, न्यायसंगत और तर्कसंगत के अलावा कुछ और बनाना नहीं था। न्यायालय ने गोपालन मामले को पलटते हुए कहा कि अनुच्छेद 19, 14 और 21 के प्रावधानों का एक विशेष संबंध है और प्रत्येक कानून को उन अनुच्छेदों में निर्धारित मानदंडों को पूरा करना होगा। न्यायालय ने माना कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता शब्द की व्याख्या प्रतिबंधित और कठोर अर्थ में नहीं, बल्कि उदार और व्यापक अर्थ में की जानी चाहिए। अनुच्छेद 21 विदेश जाने की स्वतंत्रता की गारंटी देता है (जैसा कि सतवंत सिंह मामले में दावा किया गया है)। न्यायालय के अनुसार, धारा 10(3)(सी) और 10(5) प्रशासनिक आदेश हैं जिन्हें अनुचितता, दुर्भावना, प्राकृतिक न्याय से इनकार और अधिकार क्षेत्र से बाहर होने के आधार पर चुनौती दी जा सकती है।

हमें कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया और कानून की उचित प्रक्रिया के बीच अंतर करना होगा। एके गोपालन का मामला पहला ऐसा मामला था जब सर्वोच्च न्यायालय ने कानून की उचित प्रक्रिया के अनुसार कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया का मूल्यांकन करने से इनकार कर दिया था। सरल शब्दों में कहें तो, यह विधानमंडल द्वारा विधिवत रूप से अनुमोदित कानून है जिसका पालन करना अनिवार्य है, क्योंकि यह उचित प्रक्रिया का अनुपालन करता है। इस अवधारणा के अंतर्गत कानूनी प्रक्रियाओं के अनुसार किसी व्यक्ति के जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता को छीनने का अधिकार है। इसका तात्पर्य यह है कि विधिवत रूप से अधिनियमित कोई भी कानून वैध है, भले ही वह न्याय और निष्पक्षता के आदर्शों का उल्लंघन करता हो। यह एक ऐसा सिद्धांत है जिसका मूल्यांकन दक्षता, न्यायसंगतता और गैर-मनमानी के आधार पर किया जाना चाहिए। यदि कोई कानून तर्कसंगत, निष्पक्ष या मनमाना नहीं है, तो उसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अमान्य घोषित किया जा सकता है। यह सिद्धांत व्यक्तिगत अधिकारों की एक विस्तृत श्रृंखला की रक्षा करता है।

इस निर्णय के बाद, सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के मूल तत्व और इसे तैयार करने वाली संवैधानिक सभा के आशय को बनाए रखने के लिए एक प्रहरी की भूमिका ग्रहण की। अधिकांश न्यायाधीशों का मानना था कि कोई भी कानून या प्रावधान न्यायसंगत, निष्पक्ष और तर्कसंगत होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो सबसे सुस्थापित या सर्वमान्य कानून को भी मनमाना कहा जा सकता है। सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने वाले किसी भी नियम को अनुच्छेद 21, 14 और 19 के संवैधानिक मानदंडों पर खरा उतरना होगा। अनुच्छेद 21 प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों की भी रक्षा है, यह सुनिश्चित करते हुए करता है कि किसी को भी न्यायालय में अपनी बात रखने के अधिकार से वंचित न किया जाए। इसके अलावा, किसी भी सरकारी कार्रवाई या कानून को असंवैधानिक घोषित करने के लिए स्वर्ण त्रिकोण यानी अनुच्छेद 14, 19 और 21 का उपयोग किया जाना चाहिए।

खेल

सचिन सिंह परिहार

लेखक राष्ट्रीय कराते खिलाड़ी हैं।

भारत का खेल पुनर्जागरण- 2026 की नई दिशा

साल 2026 में भारत का खेल परिदृश्य केवल बदलाव के दौर से नहीं गुजर रहा, बल्कि वह एक नई पहचान गढ़ने की प्रक्रिया में है। हमने देखा है दशकों तक खेलों को भारत में 'अतिरिक्त गतिविधि' या 'क्रिकेट तक सीमित उत्सव' मानने की प्रवृत्ति रही, लेकिन आज खेल नीति, बजट, अवसंरचना और राजनीतिक प्राथमिकताओं के केंद्र में आ चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी, राज्यों के बीच खेल प्रतिस्पर्धा, निजी निवेश और स्वयं प्रधानमंत्री की सक्रिय भूमिका ये सभी संकेत देते हैं कि खेल अब भारत के लिए केवल मैदान की गतिविधि नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की रणनीति बन चुके हैं।

महिला क्रिकेट विश्व कप, हॉकी एशिया कप और बॉक्सिंग वर्ल्ड कप जैसे आयोजनों की मेजबानी के साथ भारत स्वयं को एक 'विश्वसनीय खेल आयोजक' के रूप में स्थापित कर रहा है। लेकिन 2026 का सवाल केवल आयोजन तक सीमित नहीं है सवाल यह है कि क्या यह ऊर्जा प्रदर्शन, पदकों और स्थायी खेल संस्कृति में बदल पाएगी?

अब 2026 में भारत उन गिने-चुने देशों में शामिल है, जो एक साथ कई बड़े अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी कर रहे हैं। महिला क्रिकेट विश्व कप के सफल आयोजन के साथ भारत ने 2026 में खेलों की दुनिया में एक महत्वपूर्ण अध्याय पूरा कर लिया है। यह आयोजन केवल एक टूर्नामेंट नहीं था, बल्कि उस बदलती सोच का प्रमाण था जिसमें खेल अब भारत में हाशिये की गतिविधि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्राथमिकता बनते जा रहे हैं। स्टेडियमों की भरी हुई दर्शक दीर्घाएँ, रिकॉर्ड डिजिटल व्यूअरशिप और अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत न केवल बड़े खेल आयोजनों की मेजबानी कर सकता है, बल्कि उन्हें जन आंदोलन में बदलने की क्षमता भी रखता है।

यह लोकप्रियता केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि आर्थिक भी है। विज्ञापन और प्रायोजन के आँकड़े संकेत देते हैं कि महिला क्रिकेट अब व्यावसायिक रूप से टिकाऊ हो चुका है। लेकिन चुनौती यह है कि क्या यह लोकप्रियता घरेलू ढाँचे जूनियर लीग, फिटनेस सिस्टम और कोचिंग को भी मजबूत कर पाएगी।

हॉकी एशिया कप का आयोजन बिहार के राजगीर में होना भारतीय खेल नीति में आए भौगोलिक बदलाव का प्रतीक है। वहीं बॉक्सिंग वर्ल्ड कप का नोएडा में आयोजन यह दर्शाता है कि भारत अब गैर-पारंपरिक और व्यक्तिगत खेलों को भी वैश्विक मंच देने के लिए तैयार है।

हम देख रहे हैं पिछले कुछ वर्षों में खेलों को लेकर प्रधानमंत्री जी की सक्रियता केवल भाषणों तक सीमित नहीं रही है। खिलाड़ियों से सीधा संवाद, अंतरराष्ट्रीय पदक विजेताओं से मुलाकात, और ओलंपिक से पहले 'मन की बात' जैसे मंचों पर खिलाड़ियों का उल्लेख इन सबका मनोवैज्ञानिक प्रभाव स्पष्ट दिखता है।

2026 में खेल मंत्रालय और प्रधानमंत्री कार्यालय के बीच समन्वय पहले से अधिक संस्थागत हुआ है। 'खेलो इंडिया', 'फिट इंडिया मूवमेंट' और ओलंपिक तैयारी से जुड़े कार्यक्रमों को शीर्ष राजनीतिक संरक्षण मिला है। इसका असर यह हुआ है कि खेल अब केवल मंत्रालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सरकारी प्राथमिकता बन गया है।

2036 ओलंपिक की मेजबानी की भारत की दावेदारी को भी इसी राजनीतिक इच्छाशक्ति के संदर्भ में देखा जा रहा है। हालाँकि मेजबानी का सपना तभी सार्थक होगा, जब प्रदर्शन का आधार पहले से मजबूत हो।

2026-27 के केंद्रीय बजट में खेल मंत्रालय को लगभग रू. 4,200 करोड़ का आवंटन मिला है, जो 2015 की तुलना में लगभग तीन गुना है। 'खेलो इंडिया' योजना के अंतर्गत देशभर में 1,000 से अधिक केंद्र संचालित हो रहे हैं, जिनमें से बड़ी संख्या ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में है।

इन केंद्रों से जुड़े आँकड़े बताते हैं कि लगभग 60 प्रतिशत खिलाड़ी छोटे शहरों और गाँवों से आते हैं, और 40 प्रतिशत से अधिक खिलाड़ी पहली पीढ़ी के एथलीट हैं। यह बदलाव इस धारणा को तोड़ता है कि खेल केवल शहरी अभिजात वर्ग तक सीमित हैं।

2026 के खेल मानचित्र में मध्य प्रदेश का नाम विशेष रूप से उभरकर सामने आया है। लंबे समय तक 'बीमारू राज्यों' की श्रेणी में गिने जाने वाले इस प्रदेश ने खेल अवसंरचना में उल्लेखनीय निवेश किया है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और जबलपुर में आधुनिक स्टेडियम, शूटिंग रेंज और अकादमियाँ विकसित की गई हैं।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संचालित खेल अकादमियों विशेषकर एथलेटिक्स, शूटिंग, तैराकी और हॉकी से निकले खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीते हैं। राज्य का खेल बजट पिछले दस वर्षों में लगभग चार गुना बढ़ा है।

इंदौर को स्पोर्ट्स साइंस और ट्रेनिंग हब के रूप में विकसित करने की योजना यह दर्शाती है कि मध्य प्रदेश अब केवल प्रतिभा आपूर्ति करने वाला राज्य नहीं, बल्कि खेल विकास का मॉडल बनना चाहता है। यह बदलाव बताता है कि खेलों में प्रगति केवल कुछ राज्यों तक सीमित नहीं रह गई है।

2025 में लागू राष्ट्रीय खेल शासन विधेयक का असर 2026 में दिखने लगा है। खेल संघों में आयु-सीमा, कार्यकाल सीमा और एथलीट प्रतिनिधित्व जैसे प्रावधानों के कारण कई संघों में संरचनात्मक बदलाव हुए हैं।

सरकारी आँकड़ों के अनुसार, चयन से जुड़ी औपचारिक शिकायतों में करीब 30 प्रतिशत की कमी आई है। हालाँकि कुछ संघों में अब भी प्रतिरोध है, लेकिन यह स्पष्ट है कि पारदर्शिता का सीधा संबंध प्रदर्शन से है।

यदि भारत की तुलना जापान, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया से की जाए, तो अंतर साफ़ दिखता है। भारत में प्रति खिलाड़ी खर्च अभी भी कम है, स्पोर्ट्स साइंस और रिकवरी सिस्टम सीमित हैं,स्कूल स्तर पर प्रतिस्पर्धी खेलों का ढाँचा कमजोर है।

हाल ही में जूनियर बास्केटबॉल और फुटबॉल टीमों के अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन ने यह संकेत दिया कि टीम स्पोर्ट्स में भारत को अभी लंबा रास्ता तय करना है। इसके विपरीत, व्यक्तिगत खेलों जैसे शूटिंग, कुश्ती, बैडमिंटन और एथलेटिक्स में भारत की स्थिति लगातार मजबूत हो रही है।

नीति आयोग के 2026 के सर्वे के अनुसार, अब भी अधिकांश माता-पिता खेल को सुरक्षित करियर विकल्प नहीं मानते। यही कारण है कि किशोरावस्था में खेल छोड़ने वालों की संख्या अधिक है।

हालाँकि शहरी मध्यम वर्ग में सोच बदल रही है। खेल अब 'जोखिम' नहीं, बल्कि 'संभावना' माने जाने लगे हैं। ग्रामीण भारत में चुनौती संसाधनों की है, लेकिन वहीं से सबसे अधिक प्रतिभा भी सामने आ रही है।

भारत यदि सचमुच खेल महाशक्ति बनना चाहता है, तो उसे तीन मोर्चों पर एक साथ काम करना होगा। वैज्ञानिक प्रशिक्षण और स्पोर्ट्स साइंस,कोचिंग और स्कूल खेलों का पुनर्गठन,खिलाड़ियों की सामाजिक आर्थिक सुरक्षा।

2026 का भारत खेलों में न तो शुरुआती दौर में है, न ही मंज़िल पर। वह एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहाँ नीति, राजनीति और प्रतिभा एक साथ मौजूद हैं। अब चुनौती यह है कि यह संगम स्थायी परिणाम दे।

खेल आज भारत के लिए केवल पदक नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, वैश्विक प्रतिष्ठा और सामाजिक परिवर्तन का माध्यम हैं। यदि आयोजन, निवेश और नेतृत्व को प्रदर्शन में बदला जा सका, तो आने वाला दशक भारत के लिए केवल खेलों का नहीं, बल्कि खेल नेतृत्व का दशक साबित हो सकता है।

प्रधानमंत्री जी की सक्रियता, राज्यों की प्रतिस्पर्धा और बढ़ता बजट सही दिशा में कदम हैं, लेकिन अंतिम परीक्षा मैदान पर होगी।

मुद्दा

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं

धूल धूसरित सड़कों के बीच गुलाबों की महक

कुछ समय पूर्व अरेरा कॉलोनी की अंदरूनी सड़कों तथा राजीव गांधी चौराहे से वंदे मातरम् से दस नंबर मार्केट तक और इन दिनों ग्यारह सौ क्वार्टर के आगे कैंम्पियन स्कूल से अहिल्याबाई प्रतिमा से त्रिलंगा की मुख्य रोड पर ऐसा ही काम चलने से ना केवल प्रदूषण बढ़ रहा है बल्कि एकतरफा रोड पर ट्राफिक के चलते इसमें भी बाधायें आ रही है। स्कूल बसों से लेकर पूरा ट्राफिक किसी तरह एकल सड़क से गुजर रहा है। कई जगह दोपहिया वाहन चालक गिर पड़ रहे हैं। कुछ लोग इतनी जल्दी में रहते हैं कि दूसरों के लिये खतरा बन जाते हैं। लेकिन जिम्मेदारों को शायद ही इस बात की कोई परवाह हो।

राजधानी भोपाल में प्रदूषण लगातार बढ़ता नजर आ रहा है। खासकर पॉश एरिया कहे जाने वाले अरेरा कॉलोनी और उससे सटे त्रिलंगा, गुलमोहर इलाके में इसका असर ज्यादा है। बीते दिनों अरेरा कॉलोनी तथा पर्यावरण परिसर क्षेत्र में प्रदूषण 314 एक्यूआई तक पहुंच गया। इस तरह भोपाल का मुकाबला सीधे नई दिल्ली से हो रहा लगता है जहां प्रदूषण का एक्यूआई लगातार बढ़ता घटता रहता है। रिपोर्ट के मुताबिक वहां प्रदूषण के मद्देनजर प्रतिबंध लगाये गये हैं जिनमें निर्माण कार्यो पर रोक तथा धुंआ फैलाने वाले वाहन आदि शामिल है। खैर, देश की राजधानी की बात अलग है और तमाम संसाधन उपलब्ध है।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में बढ़ते प्रदूषण की वज़ह है सीमेंट कांक्रीट रोड या व्हाइट टॉपिंग सड़कों का निर्माण तथा सड़कों के बीचों-बीच सीवेज लाइनें डालने के लिये की जा रही खुदाई। दूसरी ओर मनमाने ढंग से हो रहे निर्माण कार्य जहां से धूलकण सर्दी के मौसम के चलते वातावरण में घुलकर मानव जीवन खासकर श्वांस तथा अन्य बीमारियों के रोगियों और सीनियर सिटीजन, छोटे बच्चों के लिए ज्यादा कष्टदायक बन रही है।

कुछ समय पूर्व अरेरा कॉलोनी की अंदरूनी सड़कों तथा राजीव गांधी चौराहे से वंदे मातरम से दस नंबर मार्केट तक और इन दिनों ग्यारह सौ क्वार्टर के आगे कैंम्पियन स्कूल से अहिल्याबाई प्रतिमा से त्रिलंगा की मुख्य रोड पर ऐसा ही काम चलने से ना केवल प्रदूषण बढ़ रहा है बल्कि एकतरफा रोड पर ट्राफिक के चलते इसमें भी बाधायें आ रही है। स्कूल बसों से लेकर पूरा ट्राफिक किसी तरह एकल सड़क से गुजर रहा है। कई जगह दोपहिया वाहन चालक गिर पड़ रहे हैं। कुछ लोग इतनी जल्दी में रहते हैं कि दूसरों के लिये खतरा बन जाते हैं। लेकिन जिम्मेदारों को शायद ही इस बात की कोई परवाह हो।

सो, इंदौर में दूषित जल से लोगों की मौतों पर कोहराम अभी तक थमा नहीं है तो भोपाल में धूल धूसरित सड़कें लोगों की रोजाना की परेशानी बन रही है। कहीं भी कभी भी अच्छी खासी सड़कों को तोड़कर सीवरेज लाइन डालने और सीसी रोड/ व्हाइट टॉपिंग रोड बनाने का काम शुरू कर दिया जाता है। ना कोई पूर्व सूचना और ना ही कोई एनाउंसमेंट। कई जगहों पर मकान, प्रतिष्ठान आदि के सामने इस तरह की सड़कों से नीचे हो जाने से अलग प्रकार की परेशानी आना संभावित है। सोचें भवन निर्माण कार्य में ग्रीन नेट आवश्यक रूप से लगाने का प्रावधान है लेकिन अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले इस काम में ऐसा कुछ नहीं।

नई दिल्ली की एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक वहां हाल ही में एयरप्यूरीफायर के उपयोग से इसकी डिमांड बढ़ रही है। लंबे समय से घने कोहरे, ट्राफिक जाम के हालात और सर्दी के मौसम के चलते ऐसा हो रहा है। लेकिन इतना मंहगा उपकरण कुछ लोगों का शगल हो सकता है ज्यादातर लोगों को तो इन समस्याओं से जूझना ही होगा। लगता है भोपाल, इंदौर तथा अन्य शहरों में भी इस उपकरण का उपयोग करने के अलावा कोई चारा नहीं रहेगा।

इन सबके बीच भोपाल की एक अच्छी खबर सुकून देने वाली थी। यहां पिछले दिनों आयोजित गुलाब तथा अन्य सीजनल फूलों की प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में विभिन्न प्रजातियों, किस्मों के फूलों की बहार और मनमोहक खुशबू प्रकृति प्रेमियों के लिये किसी उपहार से कम नहीं था। यहां महकते फूल जैसे प्रदूषण को मुंह चिढ़ाते नजर आ रहे थे। पुष्प प्रेमियों और शौकीन लोगों ने इनका भरपूर आनंद उठाया। अनेक लोग अपने परिवारों के साथ मनपसंद फूलों के नज़दीक सेल्फी और फोटो, वीडियो बनाते दिखाई दे रहे थे। आजकल रील्स बनाने, वायरल करने का चलन तेजी से बड़ रहा है सो,यह उपक्रम भी किया जा रहा था।

नई दिल्ली की एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार वहाँ हाल ही में एयर प्यूरीफायर की डिमांड बड़ गई है। घने कोहरे, बार-बार के ट्राफिक जाम, निर्माण कार्य की वजह से प्रदूषण फैलने के चलते लोगों खासकर श्वांस के मरीजों और सीनियर सिटीजन को बहुत तकलीफ उठाना पड़ती है। दिल्ली में कुछ दिन पहले प्रदूषण 354 एक्यूआई तक पहुंच गया। हालांकि इसके मद्देनजर वहां निर्माण कार्य पर रोक तथा डीजल चलित वाहनों के लिये प्रतिबंध लागू किये जाने की ख़बर भी है।

यदि इसी द्रुतगति से प्रदूषण, शोरगुल बड़ता रहा तो आने वाले वक्त में एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल जरूरी होते जाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। हो सकता है कालांतर में इसके लिये भी सब्सिडी मिलना शुरू हो जाये। यह उपकरण प्रदूषित हवा में सांस लेने से होने वाली गंभीर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के खतरे को कम करने में मददगार होता है। हवा से प्रदूषक तत्वों को हटाकर हवा की क्वालिटी में सुधार लाता है।

नृत्य नाटिका नेत्रपट, उरुभंगम्, मोहे पिया का मंचन

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित सभ्यताओं के संघर्ष एवं औदार्य की महागाथा पर केंद्रित महाभारत समागम के तीसरे दिन बहिरंग के मंच पर लोकछंदा, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत नृत्य-नाटिका 'नेत्रपट' ने दर्शकों को विचार और संवेदना के स्तर पर गहराई से उद्वेलित किया। मैत्रेयी पहाड़ी के निर्देशन में यह प्रस्तुति केवल एक नृत्य-नाट्य नहीं, बल्कि महाभारत की दार्शनिक चेतना का समकालीन पुनर्पाठ बनकर सामने आयी। प्रस्तुति में यह बताया गया कि महाभारत के युद्ध का मूल कारण सचेत अंधत्व बना। इससे पूर्व पूर्वरंग में पद्मश्री राजातेंदू रथ के निर्देशन में सराईकेला छाऊ शैली पर आधारित 'उरुभंगम्' तथा अंतरंग सभागार में वामन केन्द्रे निर्देशित 'मोहे पिया' का मंचन भी हुआ, जिसने इस दिन को कलात्मक और वैचारिक दृष्टि से समृद्ध बनाया। वीर भारत न्यास के परामर्शी राहुल रस्तोगी द्वारा मोमेंटो भेंट कर सभी कलाकारों का स्वागत अभिनंदन किया गया। अंतरंग सभागार में रंगपीठ थियेटर, मुंबई द्वारा प्रस्तुत संस्कृत आधारित मध्यम व्यायोग 'मोहे पिया' का मंचन निर्देशक वामन केंद्रे के निर्देशन में किया गया। यह नाटक महाकवि भास के 'मध्यम व्यायोग' पर आधारित है, जिसमें महाभारत के भीम, हिडिम्बा और घटोत्कच के प्रसंग को संवेदनशील मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। पद्मश्री राजातेंदू रथ के निर्देशन में राजातेन्दु कला निकेतन, सराईकेला द्वारा प्रस्तुत 'उरुभंगम्' का प्रभावशाली मंचन छाऊ नृत्य शैली में किया गया। महाकवि भास रचित इस नृत्य-नाटिका में कुरुक्षेत्र युद्ध के अंतिम दिन की घटनाओं को केंद्र में रखा गया। भीमङ्गदुर्योधन गदा युद्ध, नियमभंग और पराजय के बाद दुर्योधन की पीड़ा को करुण भाव से प्रस्तुत किया गया। यहाँ दुर्योधन एक खलनायक नहीं, बल्कि आत्मचिंतनशील, क्षमाशील और संवेदनशील नायक के रूप में उभरता है। माता-पिता, पत्नियों और पुत्र से उसका भावनात्मक संवाद नाटक को गहन मानवीय आयाम प्रदान करता है।

नन्हे -मुन्ने बच्चों ने बाल मनुहार यात्रा निकाली, शहर के प्रमुख मार्गों से किया भ्रमण

● बच्चों ने दिया संदेश, नाचेंगे-गाएंगे-ठुमके लगाएगे, हंसते-गाते माताजी को भोजशाला लाएंगे

धार। महाराज भोज स्मृति बसंतोत्सव समिति एवं सर्व हिंदू समाज के आह्वान पर बसंत पंचमी के अवसर पर भोजशाला में मां वाग्देवी की पूजा अर्चना आरती पूरे दिन हिंदू समाज निर्विघ्न संपन्न कर सके इसके लिए धार शहर में 18 जनवरी को नन्हे - मुन्ने बच्चों ने बाल मनुहार यात्रा निकाली। यात्रा ने शहर के प्रमुख मार्गो से किया भ्रमण। लालबाग परिसर घोड़ा चौपाटी से नगर के प्रमुख मार्गो से होते हुए ज्योति मंदिर पर बाल मनुहार यात्रा का समापन हुआ। नन्हे मुन्ने बच्चों के हाथों में नारे लिखे पोस्टर एवं वाद्य ढोल, डमरू, थाली, चम्मच झांझ के माध्यम से संदेश दिया कि हिंदू समाज 23 जनवरी बसंत पंचमी के अवसर पर भोजशाला में अखंड पूजा में अधिक से अधिक श्रद्धालु आए और सरस्वती मां का मान बढ़ाएं। संपूर्ण धार शहर में बाल आमंत्रण यात्रा का स्वागत किया गया एवं जयकारे लगाए गए। बाल मनोहर यात्रा के संयोजक निखिल जोशी, केशव शर्मा, कृष्ण द्विवेदी,राम प्रजापति ,अभय व्यास ,चेतन शर्मा, समिति अध्यक्ष सुरेशचंद्र जलोदिया, महामंत्री सुमित चौधरी, संरक्षक अशोक जैन, महाप्रबंधक हेमंत दौराया, राजेश शुक्ला ने बाल मनुहार यात्रा में शामिल नन्हे -मुन्ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। जानकारी समिति के मीडिया प्रमुख मोहन राठौर ने दी।

18.43 करोड़ की लागत से माचना नदी पर 4-लेन पुल का भूमिपूजन, बैतूल को मिली बड़ी सौगात

● सड़क परिवहन, चिकित्सा, रेलवे हर क्षेत्र के विकास में नए आयाम स्थापित : केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उइके

● बैतूल के विकास की हर परिकल्पना होगी पूरी : विधायक खंडेलवाल

बैतूल। केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय मामले दुर्गादास उईके एवं प्रदेश अध्यक्ष व विधायक बैतूल हेमन्त खंडेलवाल द्वारा रविवार को करबला घाट पर आयोजित कार्यक्रम में 18.43 करोड़ रुपये लागत के बैतूल-खेड़ी मार्ग में माचना नदी पर पुल एवं पहुंच मार्ग का भूमिपूजन किया गया। कार्यक्रम में विधायक महेंद्र सिंह चौहान, चन्द्रशेखर देशमुख, डॉ. योगेश पंडाग्रे, श्रीमती गंगाबाई उईके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पवार, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, जनपद अध्यक्ष बैतूल श्रीमती इमला बाई जावलकर, पूर्व विधायक शिवप्रसाद राठौर सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। अतिथियों ने विधिवत पूजा-अर्चना कर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का मंच संचालन कमलेश सिंह ने किया।

केंद्रीय मंत्री जनजातीय मामले दुर्गादास उईके ने कहा कि बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के सतत प्रयासों से बैतूल वासियों को बैतूल से खेड़ी मार्ग में माचना नदी पर पुल की बहुप्रतिक्षित सौगात की आज आधारशिला रखी गई हैं। पूर्व सांसद स्व. विजय खंडेलवाल द्वारा प्रारंभ किए गए विकास कार्यों की पताका आज भी निरंतर लहरहा रही है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के योगदान को याद करते हुए कहा कि उन्होंने गांव-गांव को पक्की सड़कों से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया था। आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सड़क, चिकित्सा, कृषि सहित सभी क्षेत्रों में विकास के नए आयाम स्थापित हो रहे हैं।

20 से 25 वर्ष पुरानी मांग आज साकार - इस अवसर पर विधायक हेमन्त खंडेलवाल ने कहा कि यह बैतूल जिले के लिए ऐतिहासिक और हर्ष का दिन है। बैतूलवासियों की 20-25 वर्षों पुरानी मांग आज साकार होने जा रही है। उन्होंने बताया कि पहले पुल की प्रस्तावित लागत और चौड़ाई कम थी, किंतु जनभावना और भविष्य की आवश्यकता को देखते हुए राशि 6 करोड़ से बढ़ाकर 18 करोड़ तथा चौड़ाई 30 फीट से बढ़ाकर 60 फीट की गई। इससे यातायात सुगम होगा और दुर्घटनाओं पर भी अंकुश लगेगा। उन्होंने यह भी कहा कि माचना नदी पर स्थित लगभग 120 वर्ष पुरानी पुलिया जिले की धरोहर है, जिसे आवश्यक सुधार कर प्रतिमा विसर्जन जैसे कार्यों में उपयोग किया जाएगा। नया पुल बैतूल शहर के साथ-साथ घोड़ाडोंगरी, भैंसदेही और आठनेर क्षेत्रों की कनेक्टिविटी के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। हरदा-इंदौर फोरलेन मार्ग बनने के बाद बढ़ने वाले यातायात दबाव को भी यह पुल सहजता से संभालेगा। विधायक श्री खंडेलवाल ने बताया कि आगामी समय में बैतूल-परतवाड़ा मार्ग तथा बैतूल-आशापुर-बड़वानी-सूरत मार्ग को फोरलेन बनाने की दिशा में कार्य होगा। चूंकि इन सभी मार्गों की कनेक्टिविटी इसी पुल से होगी, इसलिए इसे आने वाले 100 वर्षों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री और मंत्री के प्रति व्यक्त किया आभार - उन्होंने मंशानुरूप पुल स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं लोक निर्माण विभाग मंत्री राकेश सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया। विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि बैतूल के विकास के लिए प्रत्येक परिकल्पना को साकार किया जाएगा। लोक निर्माण विभाग एवं ब्रिज कॉर्पोरेशन के माध्यम से जिले की समस्त सड़कों के उन्नयन के कार्य किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि बैतूल को खेलों का हब बनाने की दिशा में व्यापक स्तर पर तैयारियां जारी हैं।

कुंबी समाज संगठन बैतूल ने किया केन्द्रीय मंत्री और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का सम्मान

बैतूल। कुन्बी समाज सेवा संगठन बैतूल द्वारा केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उईके और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल का सम्मान किया गया। करबला घाट पुल निर्माण के भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान समाज संगठन ने यह सम्मान कर पुल निर्माण और बैतूल में भव्य संग्रहालय स्वीकृत करने के लिए अभिनन्दन किया गया। स्वागत करने वालों में समाज के अध्यक्ष यशवंत मुन्ना मानकर, कृष्णा वागद्रे, राम देशमुख, राज वाघमारे, रमेश धोटे, सुरेन्द्र कनाठे, राजा वागद्रे, भोजराव साबले, प्रवीण वराठे, पर्वत धोटे, ऋषि माकोडे, प्रताप पांसे, रघुनाथ लोखंडे, नितिन बारस्कर, बंडू धोटे, बंडु महाले आदि उपस्थित थे।

विराट हिन्दू सम्मेलन

इस धरा पर छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप जैसे वीर सपूतों ने जन्म लिया है : सतीश चौकसे

सुबह सवेरे सोहागपुर । इतिहास साक्षी है हम कभी भी मुगलो के सामने नहीं झुके, हिंदू समाज पर अत्याचार हुआ, परंतु अत्याचार का पुर जोड़ प्रतिरोध भी किया गया है। हिंदू कभी भी डरा हुआ नहीं था हमारे वीर सपूतों ने इस सनातन की रक्षा के लिए इस राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। छत्रपति शिवाजी महाराज महाराणा प्रताप जैसे अनेकों वीर सपूतों ने इस धरा पर जन्म लिया है। यह धरती वीर सपूतों के रूप में जानी जाती है। बांग्लादेश में दीपू चंद्र दास पर जिहादियों ने आक्रमण किया । उसकी मृत्यु होने के बाद भी उस पर क्रूर अत्याचार किया जिसका हम पुरजोर विरोध करते हैं ।इस कारण समूचे भारतवर्ष में बांग्लादेश के खिलाफ प्रदर्शन हुए हैं ।बांग्लादेश के प्रधानमंत्री का पुतला दहन किया गया है जब भी कहीं भी हिंदुओं पर अत्याचार होता हम भारत के सनातनी चुप नहीं बैठेंगे ।सबको मुंहतोड़ जवाब देंगे उक्त उद्गार काली मंदिर परिसर में आयोजित विराट हिंदू सम्मेलन में कहें। इस अवसर पर मुख्य वक्ता सतीश चोकसे विभाग शारीरिक प्रमुख ,महंत हरकिशन दास महाराज ,कार्यक्रम के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह चौधरी,बहिन चित्रा तिवारी, स्वामी आलोक जैन, कन्नू लाल अग्रवाल आदि मंचासीन थे।

महंत हरकिशन दास ने कहा कि जब-जब हिंदू आबादी घटी है ।बांग्लादेश हो या पाकिस्तान हो वहां पर हिंदुओं पर अत्याचार हुआ है ऐसी घटनाओं से बचने के लिए समस्त हिंदुओं को

संगठित होना परम आवश्यक है। चित्रा तिवारी ने कहा भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है इस धरती पर धर्म की रक्षा के लिए भगवान राम का अवतार हुआ। भगवान कृष्ण का अवतार हुआ सनातन की रक्षा के लिए सदैव हमें तत्पर रहना चाहिए । आज कुछ विधर्मियों द्वारा हिंदू समाज के लोगों को टारगेट करते हुए प्रताड़ित किया जा रहा है जहां से हिंदू आबादी घटी वहां पर हिंदुओं पर अत्याचार शुरू होना हो जाता है ।हम वहां पर अपने तीज त्यौहार हर्ष उल्लास के साथ नहीं मना पाते। इसके पूर्व विराट हिंदू सम्मेलन की भूमिका प्रस्तावना अधिवक्ता शिवकुमार पटेल ने रखी थी। उद्बोधन के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसके बाद हनुमान चालीसा पाठ किया गया। अंत में भंडारे का आयोजन किया गया। इसके पूर्व काली खेड़ापति माता मंदिर से विशाल कलश यात्रा निकाली गई।कलश यात्रा कमानिया गेट, श्री राम चौराहे से होकर काली मंदिर पहुंचकर सभा के रूप में परिणित हुई। कार्यक्रम में गायत्री परिवार के सदस्यों के अलावा हजारों की संख्या में सनातनी माताएं बहने उपस्थित थीं। इस अवसर पर जीवन दुबे, कृष्णा पालीवाल,अधिवक्ता शिवकुमार पटेल, रितेंद्र राजपूत, भरत तिवारी, अभिषेक चौहान, मृणाल घरामी,शरद चौरसिया, बाबू भाई मेहरा, मनोनीत हलधर, प्रकाश मंडल,उत्तम घरामी, राजेंद्र पालीवाल, गजेंद्र सिंह चौधरी,नीरज चौधरी, कमलेश कहार,दिनेश, अर्जुन कुशवाहा, अनमोल खंडेलवाल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हेमंत बाला ने किया।

बालाजीपुरम में 23 से रजत ब्रह्मोत्सव का शंखनाद

दक्षिण भारतीय विद्वान कराएंगे महायज्ञ

बैतूल। जिले के सुप्रसिद्ध धार्मिक स्थल श्री रुक्मणी बालाजी मंदिर, बालाजीपुरम में आगामी 23 जनवरी से 9 दिवसीय भव्य बालाजीपुरम ब्रह्मोत्सव-2026 का आयोजन किया जा रहा है। श्री कांची कामकोटि पीठम् के मार्गदर्शन में आयोजित होने वाला यह महोत्सव 31 जनवरी तक चलेगा। बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने बताया कि ब्रह्मोत्सव का शुभारंभ 23 जनवरी को वसंत पंचमी के पावन अवसर पर होगा। बालाजीपुरम मंदिर के 25 साल पूर्ण होने पर यह रजत ब्रह्मोत्सव विशेष है। महोत्सव के दौरान प्रतिदिन सुबह 8 से दोपहर 12 :30 बजे तक और दोपहर 3 से शाम 7 :30 बजे तक विशेष धर्मोत्सव का आयोजन होगा। इसमें दक्षिण भारतीय विद्वान आचार्यों द्वारा विधि-विधान से यज्ञ, हवन और पूजन संपन्न कराया जाएगा। प्रतिदिन रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाएगा। जिसमें 24 जनवरी को फिनिक्स इंटरनेशनल स्कूल, 27 जनवरी को संस्कार विद्या मंदिर स्कूल और 29 जनवरी को डिवाइन इंग्लिश स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएंगी। ब्रह्मोत्सव का मुख्य आकर्षण 28 जनवरी, बुधवार को निकलने वाली भव्य शोभायात्रा होगी, जो शाम 7.30 बजे से प्रारंभ होगी। महोत्सव का समापन 31 जनवरी को महापूर्णाहुति और विशाल भंडारे के साथ होगा। बालाजीपुरम मंदिर के प्रमुख पुजारी असीम पंडा स्वामी ने अपील की है कि जो श्रद्धालु इस महायज्ञ में यजमान बनना चाहते हैं या भंडारे हेतु दान देना चाहते हैं, वे मंदिर कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

ट्रेक्टर-ट्राली में रेडियम लाइट न होने के कारण तीन छात्रों की घटना स्थल पर दर्दनाक मौत, कलेक्टर से आग्रह

हीरालाल गोलानी सोहागपुर।

समीपवर्ती ग्राम करनपुर में कल रात अंधेरे में खड़ी ट्रेक्टर ट्राली में रेडियम लाइट न होने के कारण तीन छात्रों की टकराकर कोचिंग सेंटर से वापिस अपने ग्राम आमदेही जाते समय घटनास्थल स्थल पर ही मौत हो गई। इस दुर्घटना में मनुराज रघुवंशी, अश्विनी रघुवंशी, शिव रघुवंशी की दर्दनाक मौत हो गई। इस खबर ने क्षेत्र के नागरिकों के मन को झकझोर दिया है। यदि क्षेत्र या जिले भर के ट्रेक्टर ट्राली पर ध्यान दिया जाए तो 99.9 ट्रेक्टर ट्रालियों में न तो उनमें वाहन नंबर अंकित रहता है न ही कोई रेडियम,ब्रेक लाइट लगी रहती है। जिससे अंधेरे में दो पहिया वाहन या चार पहिया वाहन चालकों को इनका आभास ही नहीं होता कि कोई वाहन खड़ा है,या जा रहा है। आज सोहागपुर के सोशल मीडिया पर तीनों छात्रों की मौत का मामला छाया रहा। ब्लाक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सुधीर ठाकुर भटगांव ने लिखा है कि में इन नवनिहानों के पार्थिव देह को देख कर रात भर उनकी ही स्मृति आंखों के सामने दिखी जो कि अत्यंत कष्टप्रद हैं, हमें अविलंब आए दिन होने वाली दुर्घटना के बारे में सोच कर तुरंत ही उपाय करना होगा, अगर अब जवाबदार प्रशासन नहीं जागा तो हमें सोए हुए प्रशासन को जगाना भी आता है, वो तो हम रुके सिर्फ इसलिए है कि किसी भी अच्छे काम करने में राजनीत की बू न आए बस , लेकिन इन बच्चों को देखकर अब रहा नहीं जा रहा ,, शीघ्र एक मीटिंग बुलाए पुलिस थाने मैं हम बैठ कर बात करेंगे और सुरक्षा के मुद्दे पर चर्चा करेंगे। ये बहुत विकराल समस्या है, जिसका राजनीत नहीं बल्कि इंसान की जिंदगी का सवाल है, मैने भी अनेकों बार पुलिस चौकी में तेज गाने बजाने वालों को और टैक्टर तेज दौड़ाने वाली को रोक के समझाने की बोली लेकिन पुलिस ने कभी नहीं सुना ? आपसे भी प्रार्थना है कि मेरी इस बात को प्रशासन तक पहुंचाने का कष्ट करें ।नीरज चौधरी ने लिखा है नगर के समस्त नागरिकों से अनुरोध है ।माननीय एस डी एम महोदय से इस मामले पर मिलकर चर्चा की जानी चाहिए ।कि ओवरलोड चल रही ट्रालियों पर रोक लगाई जाए।जिससे आगे कोई इस प्रकार की दुखद घटना न हो। मनसुखलाल नानक ने लिखा है कि ट्रालियां इतनी भरी जा रही हैं ट्रक जैसी लगती हैं पीछे ड्राइवर को कुछ नहीं दिखता।और बक्से अलग से बजाते जाते हैं। प्रशासन इस पर ध्यान दें । इस असमय छात्रों की मौत सेक्षेत्र के लोगो में भारी रोष व्याप्त है। माननीय कलेक्टर महोदया से आग्रह है कि क्षेत्र में ही नहीं सम्पूर्ण जिले भर में ट्रेक्टर ट्रालियों पर उनमें ब्रेक लाइटिंग, रेडियम एवं वाहन नंबर की प्लेटों की जांच आरटीओ से सघन अभियान चलाकर कार्यवाही करवाएं।ताकि नागरिक अकारण मौत का शिकार न बनें।

अनूठी पहल

नर्मदा पुराण के समापन पर गौ माता के लिए भंडारे का आयोजन

सुबह सवेरे सोहागपुर । निकटवर्ती ग्राम गुन्दरई में नर्मदा पुराण के समापन के अवसर पर अनूठी पहल की शुरुआत की गई। जिसमें कथा वाचक राजकिशोर जी शर्मा अलीगंज वालों की प्रेरणा से गौ माताओं के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें ट्रेक्टर ट्राली से भारी मात्रा में भूसा लाकर गौ माताओं को अन्य खाद्यान्न सामग्री के साथ खिलाया गया।इस अवसर पर नर्मदा भक्त बलराम पटेल एवं भगवानदास रघुवंशी के साथ गोपाल रघुवंशी तथा ग्रामीण भी उपस्थित थे। इस नवीन शुरूआत की ग्रामवासियों ने स्वागत किया है। उक्त अन्य की जानकारी रोहित रघुवंशी ने सुबह सवेरे प्रतिनिधि को दी।

खेलों एमपी यूथ गेम्स वर्ष 2025-26 के तहत बैतूल विकासखंड स्तरीय चयन ट्रायल का आयोजन

बैतूल। मप्र शासन खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा खेलों एमपी यूथ गेम्स वर्ष 2025-26 के तहत बैतूल विकासखण्ड स्तरीय चयन ट्रायल 17 जनवरी शनिवार को पुलिस ग्राउंड बैतूल में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पंवार, योगी खण्डेलवाल, इन्द्रसेन ठाकुर उपस्थित थे। मुख्य अतिथियों ने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चे खेल के माध्यम से अपना शारीरिक व मानसिक विकास कर सकते है।

क्रूरता के इस दौर में कला से ही उम्मीद : प्रो. गोहिल

भोपाल। आशा पारस फॉर पीस एंड हार्मनी फाउंडेशन द्वारा विचारोत्तेजक सिने आयोजन 'सिनेमा नज़र से नज़र तक' का आयोजन रविवार शाम किया गया। संवाद में सिनेमा और कला के महत्व पर ज़ोर देते हुए फ़िल्म निर्देशक, सिनेमेटोग्राफर एवं स्क्रीनप्ले राइटर प्रो. राजीव गोहिल ने कहा कि व्यावसायिक सिनेमा चाहे कितनी प्रगति कर ले, समाज की उम्मीद कला और यथार्थवादी सिनेमा से ही बनी रहेगी।

इस सत्र का संवाद सूत्र पत्रकार एवं स्तंभकार पंकज शुक्ला ने थामा। संवाद के पहले दो सशक्त और समकालीन विषयों पर आधारित फ़िल्मों 'प्यास' और 'ग्वावा- ए मॉब लिंचिंग' का प्रदर्शन किया गया। फिल्म प्यास का निर्देशन सूर्यान्शु सक्सेना ने किया है। यह एक नौजवान अर्जुन की मार्मिक कहानी है, जो परंपरा और सही कर्म के बीच स्वयं को गहरे द्वंद्व में पाता है। पुजारी बनने की राह पर खड़ा अर्जुन अपने अस्तित्व, आस्था और विश्वासों से जूझता है। यह फ़िल्म उसकी उस परिवर्तनकारी यात्रा को दर्शाती है, जो उसके स्थापित विश्वासों को तोड़ते हुए उसे जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर ले जाती है।

दूसरी फिल्म 'ग्वावा - ए मॉब लिंचिंग' का निर्देशन राहुल शर्मा (राहुल्य) ने किया। अंतरराष्ट्रीय सितार वादिका स्मिता नागदेव के संगीत से सजी इस मार्मिक मूक लघु फ़िल्म 'ग्वावा - ए मॉब लिंचिंग' को प्रतिष्ठित खजुराहो अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव 2025 में आधिकारिक स्क्रीनिंग के लिए चुना गया है। 14 मिनट की यह फ़िल्म फ़िल्म भारत में बढ़ती भीड़ हिंसा की भयावह सच्चाई पर एक गहरी और झकझोर देने वाली टिप्पणी है। फ़िल्म की चुप्पी इसकी भावनात्मक तीव्रता को और अधिक प्रभावशाली बनाती है। राग मियां की तोड़ी पर आधारित बैकग्राउंड म्यूज़िक, जिसमें सितार और तबले का सशक्त प्रयोग किया गया है, फ़िल्म को एक गहरे संवेदनात्मक लोक में ले जाता है। न्यूनतम साधनों के बावजूद, यह फ़िल्म मानव गरिमा, ग़लत सूचना और क़ानून को अपने हाथों में लेने के विनाशकारी परिणामों पर एक सार्वभौमिक संदेश देती है। आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत के प्रो. आशा शुक्ला, प्रो. आरके शुक्ला, डॉ. वीणा सिन्हा ने इस आयोजन को रचा। संचालन विशाखा राजुरकर और अपर्णा पात्रिकर ने किया।

लाडली बहना कार्यक्रम के अंतर्गत विदिशा में भव्य आयोजन

500 लाडली बहनों ने लिया उत्साहपूर्वक भाग

मुख्यमंत्री द्वारा लाड़ली बहिनों को जनवरी माह की किस्त सिंगल क्लिक से जारी

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता जी के मार्गदर्शन में महिला एवं बाल विकास विभाग, विदिशा द्वारा लाडली बहना कार्यक्रम के अंतर्गत आज एक भव्य एवं उत्साहपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य लाडली बहनों को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाना, बल्कि सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी सुदृढ़ करना रहा। इस अवसर पर जिले की कुल 500 लाडली बहनों ने सहभागिता की और कार्यक्रम को सफल बनाया।

कार्यक्रम की शुरुआत परंपरागत रूप से सरस्वती वंदना एवं कन्या पूजन के साथ की गई, जिससे कार्यक्रम का वातावरण भक्तिमय एवं प्रेरणादायक बन गया। इसके पश्चात लाडली बहनों के बीच पतंग प्रतियोगिता एवं रस्सा खींच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं ने पूरे उत्साह और खेल भावना के साथ भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं ने महिलाओं के बीच आपसी सहयोग, टीम भावना एवं आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया। कार्यक्रम के दौरान आजीविका मिशन एवं स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से सभी उपस्थित लाडली बहनों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन एवं नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा उपस्थित रहे। दोनों अतिथियों ने लाडली बहना योजना की सराहना करते हुए कहा कि यह योजना प्रदेश की महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है। उन्होंने महिलाओं से आत्मनिर्भर बनने , अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने एवं बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण वह क्षण रहा जब मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी द्वारा नर्मदापुरम के माखननगर से वर्चुअल माध्यम से राज्य की समस्त लाडली बहनों को एवं विदिशा की 2लाख 71 हजार बहनों को 40 करोड़ रुपए सिंगल क्लिक के माध्यम से योजना की किश्त जारी की गई। इस अवसर पर उपस्थित लाडली बहनों में अत्यधिक उत्साह देखने को मिला। मुख्यमंत्री जी की इस पहल ने महिलाओं को आर्थिक संबल प्रदान करते हुए उनके चेहरे पर आत्मविश्वास की मुस्कान ला दी। कार्यक्रम के अंत में मकर संक्रांति के पावन अवसर पर सभी लाडली बहनों को तिल-गुड़ भेंट कर शुभकामनाएं दी गईं। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को माननीय विधायक श्री मुकेश टंडन, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा जी के स्वयं पुरस्कार वितरित किया गया। इस पहल ने कार्यक्रम में सांस्कृतिक एवं पारंपरिक रंग भर दिया और महिलाओं के बीच अपनत्व की भावना को और मजबूत किया। यह कार्यक्रम जिले स्तर के साथ साथ सभी 9 परियोजना एवं समस्त आंगनवाड़ी केंद्रों पर आयोजित किया गया। विदिशा जिला मुख्यालय पर संपन्न हुए उक्त कार्यक्रम में जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा, परियोजना अधिकारी श्री संजय सिंह एवं श्रीमती कृतिका व्यास, जिला समन्वयक श्री अरविंद मिश्रा, संरक्षण अधिकारी श्री संतोष रघुवंशी सहित कुल 25 पर्यवेक्षक उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

कलेक्टर ने किया सारू-मारू की गुफाओं की निरीक्षण

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने बुधनी तहसील के ग्राम पान गुराड़िया स्थित ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व की सारू-मारू की गुफाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने गुफाओं, बौद्ध स्तूपों एवं शिलालेखों का अवलोकन किया और प्राचीन धरोहर के संरक्षण के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने यह भी कहा कि सारू-मारू की गुफाएं जिले की ऐतिहासिक पहचान हैं। उल्लेखनीय है कि सारू-मारू की गुफाएं सीहोर जिले की बुधनी तहसील अंतर्गत ग्राम पान गुराड़िया के समीप स्थित एक प्राचीन बौद्ध मठ परिसर एवं पुरातात्विक स्थल हैं, जिनका संबंध तथागत गौतम बुद्ध के प्रमुख शिष्यों महामोद्गलायन और सारिपुत्र के काल से माना जाता है। यह स्थल सांची से लगभग 120 किलोमीटर दूर स्थित है और यहां प्राकृतिक गुफाओं के साथ-साथ अनेक बौद्ध स्तूप निर्मित हैं। गुफाओं में स्वस्तिक, त्रिरत्न एवं कलश जैसे बौद्ध प्रतीकों के भित्तिचित्र आज भी देखे जा सकते हैं, जो इस स्थल की धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाते हैं। इस स्थल का विशेष महत्व इस कारण भी है कि यहां मुख्य गुफा में सम्राट अशोक से संबंधित दो महत्वपूर्ण शिलालेख प्राप्त हुए हैं।

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों हेतु अधिकारियों को सौंपे दायित्व

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा आगामी 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर रायसेन में जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह के आयोजन की तैयारियों के संबंध में अधिकारियों को विस्तृत दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को जिला स्तरीय समारोह के भव्य एवं गरिमामय आयोजन हेतु दायित्व सौंपते हुए व्यवस्थाएं, तैयारियां पूर्ण कराने हेतु निर्देशित किया। जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह 26 जनवरी को रायसेन में सागर रोड स्थित शासकीय कन्या विद्यालय ग्राउण्ड पर आयोजित होगा। जिला मुख्यालय के साथ-साथ तहसील, जनपद स्तर, शैक्षणिक संस्थाओं तथा ग्राम पंचायतों में गणतंत्र दिवस कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में परेड, देशभक्ति से ओत-प्रोत शालेय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन, कार्यक्रम स्थल पर अतिथियों तथा आमजन के आमगन-निर्गमन, बैठक व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, पेयजल सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं के संबंध में विस्तृत चर्चा करते हुए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। जिला मुख्यालय पर आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में विभिन्न विभागों द्वारा विभागीय योजना, कार्यक्रम और अन्य उपलब्धियों को रेखांकित करने वाले झांकियों का प्रदर्शन किया जाएगा। गणतंत्र दिवस 26 जनवरी के एक दिन पूर्व जिले के सभी सार्वजनिक भवनों एवं राष्ट्रीय महत्व की इमारतों पर प्रकाश की व्यवस्था करने के निर्देश भी जारी किए गए है।

शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही में रोजगार मेला 21 जनवरी को

बैतूल (निप्र)। मध्य प्रदेश शासन के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के संयुक्त तत्वावधान में युवा संगम के तहत 21 जनवरी को प्रातः 11 से 4 बजे तक शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही में रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिसशिप मेले का आयोजन किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी एवं शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। रोजगार मेले में 14 कंपनियों द्वारा विभिन्न पदों पर अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। रोजगार मेले में यहां कंपनी रहेगी मौजूद जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि वर्धमान फैब्रिक्स प्राइवेट लिमिटेड बुदनी में मशीन ऑपरेटर के 100 पदों, आयशर सीआईआई कौशल विकास पीथमपुर में ट्रेनी वर्कर के 100 पदों, कुलोदय टेक्नोपैक प्राइवेट लिमिटेड दमन गुजरात में मशीन ऑपरेटर मैकेनिक हेल्पर के 100 पदों, प्रथम एजुकेशन फाऊंडेशन भोपाल में ट्रेनी वर्कर के 50 पदों तथा ट्राईटेंट प्राइवेट लिमिटेड बुदनी में मशीन ऑपरेटर के 100 पदों के लिए योग्यता 8वीं, 10वीं, 12वीं, आईटीआई होना आवश्यक है। इसी प्रकार यशस्वी ग्रुप भोपाल में अप्रेंटिस के 50 पदों तथा क्वेस कॉर्प बैंगलोर में अप्रेंटिस के 50 पदों के लिए योग्यता 12वीं, आईटीआई डिप्लोमा होना जरूरी है। सिपेट भोपाल में मशीन ऑपरेटर ट्रेनी के 50 पद तथा अंबुजा सीमेंट प्राइवेट लिमिटेड छिंदवाड़ा में मशीन ऑपरेटर, ट्रेनी के 40 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, आईटीआई डिप्लोमा होना आवश्यक है। फुटवियर डिजाइनर एवं डेवलपमेंट छिंदवाड़ा में ट्रेनी वर्कर के 50 पद के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, आईटीआई और शक्ति मोटर्स मूलतापी प्राइवेट लिमिटेड मुलताई में सेल्स एग्जीक्यूटिव, सेल्स मैनेजर, मैकेनिक के 25 पदों के लिए योग्यता 8वीं से स्नातकोत्तर होना अनिवार्य है। टैलेंट कॉर्प सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड नागपुर में अप्रेंटिस के 50 पदों के लिए योग्यता 10वीं 12वीं आईटीआई स्नातक तथा भारतीय जीवन बीमा निगम प्राइवेट लिमिटेड में बीमा सखी, ग्रामीण बीमा अभिकर्ता के 50 पदों के लिए योग्यता 12वीं से स्नातक एवं आरएफएमआई ग्रुप बैतूल में ऑफिस, फील्ड वर्क, मार्केटिंग, टेलीकॉलिंग के 50 पदों के लिए योग्यता 10वीं 12वीं स्नातक होना आवश्यक है।

जिला अस्पताल में ऑटोमेटिक मशीन से होगी फ्लोर की सफाई

रायसेन (निप्र)। जिला अस्पताल में मरीजों को बेहतर और त्वरित उपचार के साथ स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने के निर्देश कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा सीएमएचओ तथा सिविल सर्जन को दिए गए हैं। इसी कड़ी में जिला अस्पताल में ऑटोमेटिक मशीन से सफाई की जाएगी। शुक्रवार को जिला अस्पताल में सीएमएचओ डॉ दिनेश खत्री, सिविल सर्जन डॉ यशपाल बाल्यान सहित अन्य चिकित्सकों की उपस्थिति में सफाईकर्मी द्वारा ऑटोमेटिक मशीन से फ्लोर सफाई का शुभारंभ किया गया। सीएमएचओ डॉ खत्री ने बताया कि जिला अस्पताल में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ ही स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखा जा रहा है।

सुरक्षा गार्ड एवं सुपरवाईजर पदों की भर्ती हेतु जनपद पंचायतों में आयोजित किए जा रहे हैं शिविर

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले में संस्था एसएससीआई नीमच द्वारा जनपद पंचायत स्तर पर जिला पंचायत और मप्र डे राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए भर्ती शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में संस्था एसएससीआई नीमच द्वारा युवाओं को रोजगार का अवसर उपलब्ध कराते हुए सुरक्षा गार्ड तथा सुपरवाईजर पद पर युवाओं का चयन किया जाएगा। जिले की बाड़ी जनपद पंचायत प्रांगण में 19 जनवरी को, औबेदुल्लागंज जनपद पंचायत प्रांगण में 20 जनवरी को, सांची जनपद पंचायत प्रांगण में 21 जनवरी को और जिला रोजगार कार्यालय रायसेन में 22 जनवरी को यह शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में ऐसे युवा जिनकी आयु 21 से 40 वर्ष, ऊंचाई 168 सेमी हो, वनज 55 किलोग्राम व शैक्षणिक योग्यता न्यूनतम हाईस्कूल (10वीं) उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण हो, सम्मिलित हो सकते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने माखननगर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त 137 लाख रुपए के रेस्ट हाउस का किया लोकार्पण

लाडली बहनों के स्वागत से अभिभूत हुए मुख्यमंत्री ने उनके साथ बैठकर किया सहभोज

नर्मदापुरम (निप्र)। शुक्रवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा माखन नगर में नवनिर्मित रेस्ट हाउस का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, सिवनी मालवा विधायक श्री प्रेम शंकर वर्मा, सोहागपुर विधायक श्री विजयपाल सिंह, सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ यादव द्वारा 137.94 लाख रुपए की लागत से 441.60 वर्गमीटर क्षेत्रफल में नवनिर्मित विश्रामगृह भवन का लोकार्पण किया गया। नवनिर्मित रेस्ट हाउस भवन के अंतर्गत दो नग वीआईपी कक्ष, दो नग विश्राम कक्ष, एक नग किचिन, एक नग डाइनिंग हॉल, एक नग सर्वेन्ट कक्ष, एक नग मीटिंग हॉल, एक नग वेटिंग हॉल, आगंतुकों हेतु दो नग शौचालय एवं रेम्प का निर्माण किया गया है। संपूर्ण परिसर सीसीटीवी केमरों की निगरानी में है। लोकार्पण अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ

यादव का 15 लाडली बहनाओं ने स्वागत किया। सभी बहनों ने मुख्यमंत्री पर पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया साथ ही तिल से बने लड्डुओं से उनका मुंह मीठा कराया। उल्लेखनीय है कि माखननगर (बाबई) राष्ट्रकवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी की जन्मस्थली है तथा भोपाल-पचमढ़ी मार्ग पर स्थित होने के कारण यहां शासन के अति विशिष्ट एवं विशिष्ट अतिथियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों का नियमित आगमन होता रहता है। इस दृष्टि से नवनिर्मित रेस्ट हाउस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण सुविधा सिद्ध होगा। लोकार्पण उपरांत मुख्यमंत्री डॉ यादव ने लाडली बहनों के साथ सह भोज भी किया। इस दौरान श्रीमती अनिता उईके, श्रीमती ग्यारसी भल्लावी, श्रीमती कविता सराठे, श्रीमती पुष्पा अहिरवार, श्रीमती कीर्ति हरने, श्रीमती किरण गर्ग, श्रीमती नंदा पारखी, श्रीमती पप्पी दुबे, श्रीमती सुमन राजपूत, श्रीमती अनिता बघेल ने मुख्यमंत्री डॉ यादव के साथ भोजन किया। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने लाडली बहनों के साथ बैठकर दाल, बाटी, विभिन्न प्रकार के लड्डू, खीर, पेड़ा, कढ़ी, चावल, गट्टे की सब्जी सहित व्यंजनों का स्वाद चखा। मुख्यमंत्री डॉ यादव के साथ ही राज सभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी, विधायक श्री विजयपाल सिंह सहित लाडली

सुरक्षित कार्य स्थल हर महिला का अधिकार पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन

बैतूल (निप्र)। महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान जनक कार्य वातावरण सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा जागरुकता के लिए विभिन्न गतिविधियां की जा रही है। जिसके तारतम्य में कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन के निर्देशन में कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न अधिनियम 2013 के तहत जिले में विभिन्न शासकीय, अशासकीय संस्थाओं में आंतरिक परिवाद समिति एवं स्थानीय परिवाद समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य का एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन जिला पंचायत सभा कक्ष में 16 जनवरी को किया गया।

जिसमें जिले की स्थानीय परिवाद समिति की सदस्य श्रीमती अनिता पटेल उप जिलाध्यक्ष द्वारा कार्यशाला के प्रारंभ में एक्ट के तहत आने वाली शिकायतों, उनके निपटान में आने वाली चुनौतियों के बारे में अवगत कराया गया। भोपाल मास्टर ट्रेनर एडवोकेट वंदना त्रिपाठी द्वारा उपस्थित सभी प्रतिभागियों को पॉश एक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि पोश एक्ट महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल, उत्पीड़न की रोकथाम, आंतरिक शिकायत समितियों (आईसीसी) के गठन और शिकायत निवारण की प्रक्रिया को अनिवार्य बनाता है, जिसमें सुरक्षित इंफ्रास्ट्रक्चर, जागरूकता और सांस्कृतिक बदलाव लाना भी शामिल है। ताकि महिलाएं बिना किसी डर के सम्मान के साथ काम कर सकें और यौन उत्पीड़न (मौखिक, शारीरिक या अन्य) से मुक्त वातावरण मिले। अंत में जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास श्री गौतम अधिकारी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

निःशुल्क इलेक्ट्रानिक कृत्रिम हाथ शिविर में 70 लोगों को कृत्रिम हाथ किए प्रदाय

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में जिले में पहली बार जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क इलेक्ट्रानिक कृत्रिम हाथ उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मप्र व इनाली फाउंडेशन के सहयोग से जिला चिकित्सालय बैतूल के क्रिटिकल केयर यूनिट में दो दिवसीय निःशुल्क कृत्रिम हाथ वितरण शिविर का आयोजन किया गया। शुक्रवार को शिविर का शुभारंभ अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट ने किया। इस दौरान उन्होंने हितग्राहियों को कृत्रिम हाथ लगाए जा रहे फिटमेट एरिया का निरीक्षण किया। साथ ही कृत्रिम हाथ लगवा चुके हितग्राहियों से चर्चा कर यह कैसे कार्य करता है का डेमो भी देखा।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि ऐसे समस्त व्यस्क हितग्राही जिनकी उम्र 15 वर्ष से अधिक एवं जिनके हाथ की कोहनी का निचला हिस्सा नहीं है, शिविर में उन्हें निःशुल्क कृत्रिम हाथ उपलब्ध कराये जाएंगे। यह प्रथम अवसर है कि शासन द्वारा निःशुल्क कृत्रिम हाथ लगाने के लिए शिविर लगाकर टीम द्वारा उनका परीक्षण कर कृत्रिम हाथ लगाए जा रहे है। हितग्राहियों के चिन्हांकन के लिए आरबीएसके दल, बीपीएम, बीसीएम, आशा कार्यकर्ताओं, एएनएम द्वारा क्षेत्र में जाकर 126 हितग्राही चिन्हित किए गए है। हितग्राहियों को चिन्हित करने में जिला प्रशासन एवं सामाजिक न्याय विभाग का पूर्ण सहयोग मिला है। उन्होंने बताया कि प्रोस्टेटिक इलेक्ट्रिक हैण्ड जिसमें एक साकिट लगा रहता है, जिससे वह कार्य करता है। कृत्रिम हाथ कोहनी के निचले हिस्से में लगाया जाता है। आरबीएसके मैनेजर योगेन्द्र दवण्डे ने बताया कि 16 जनवरी को लगाए गए शिविर में आठनेर के 02, प्रभातपट्टन के 06, घोड़ाडोंगरी के 16, सेहरा के 16, शाहपुर के 17, भैंसदेही के 01, चिचोली के 01, आमला के 02, मुलताई के 01, भीमपुर के 01 तथा हरदा के 07 हितग्राहियों को कृत्रिम हाथ लगाए गए। इसके अलावा 17 जनवरी को भी जिला चिकित्सालय में शिविर आयोजित रहेगा, जिसमें आमला, आठनेर, भैंसदेही, भीमपुर, चिचोली, मुलताई एवं शहरी क्षेत्र बैतूल के चिन्हित हितग्राहियों को कृत्रिम हाथ निःशुल्क प्रदान किए जाएगे। आयोजित शिविर में कार्यालय राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन म.प्र. से डॉ. शैलेष वर्मा शिविर की मॉनिटरिंग के लिए उपस्थित रहे। साथ ही शिविर में प्रभारी सिविल सर्जन डॉ. रूपेश पद्माकर, शिविर के नोडल अधिकारी डॉ. केदार सिंह जाटव, उप संचालक न्यास कु.रोशनी वर्मा, जिला मलेरिया अधिकारी श्री जितेन्द्र राजपूत, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. विनोद कुमार शाक्य, आरबीएसके चिकित्सकगण उपस्थित रहे।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए नि :शुल्क प्रशिक्षण 19 से

बैतूल (निप्र)। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय भारत सरकार के ईएसडीपी कार्यक्रम के तहत बैतूल जिले में 19 जनवरी से 25 जनवरी तक सात दिवसीय प्रबंधन विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है। यह कार्यक्रम खाद्य प्रसंस्करण केंद्रों में वैधानिक आवष्यकताएं विषय पर आधारित रहेगा तथा प्रतिदिन दोपहर 01 बजे से सायं 05 बजे तक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। यह प्रशिक्षण उन उद्यमियों के लिए अत्यंत उपयोगी है, जो खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में स्वयं का उद्योग व्यवसाय संचालित कर रहे हैं या इससे संबंधित उद्योग व्यवसाय प्रारंभ करना चाहते हैं। कार्यक्रम में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के प्रबंधन सहित बैतूल जिले में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए अवसर व संभावनाएं, सहयोगी अधोसंरचनात्मक सुविधाएं, शासन की ऋण अनुदान योजनाओं, वैधानिक औपचारिकताओं, लायसेंस लेने की नियम प्रक्रिया, गुमाष्ता एक्ट आदि के संबंध में जानकारी भी प्रदान की जाएगी। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाएँ (सभी वर्ग की) और अनुसूचित जाति (एससी) व अनुसूचित जनजाति (एसटी) के युवा-युवतियां की भागीदारी बढाना, ताकि वे प्रशिक्षण और रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकें। यह कार्यक्रम उद्यमिता विकास केंद्र मध्यप्रदेष (सेडमैप) के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है।

ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर शिविर लगाकर किया गया 625 बच्चों का टीकाकरण

सीहोर (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिलेभर में विभिन्न स्वास्थ्य संस्थाओं एवं अनेक स्थानों पर प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को शिविर लगाकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस के रूप में मनाया जाता है।

चारों प्रकार के रेशम की डोर को मजबूती प्रदान करता प्रदेश का एकमात्र जिला नर्मदापुरम

मलवरी, टसर, ईरी और मूंगा रेशम उत्पादन से प्रदेश में नर्मदापुरम जिले ने बनाया नया मुकाम

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम जिले को राज्य में रेशम उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी जिले के रूप में जाना जाता है। जिले में चार प्रकार के रेशम – मलवरी, टसर, ईरी और मूंगा का उत्पादन होता है। जिले के अधीनस्थ 16 मलवरी रेशम केंद्र और 12 टसर रेशम केंद्र सक्रिय रूप से संचालित हैं, जिससे किसानों और स्थानीय महिलाओं को रोजगार एवं आय का महत्वपूर्ण स्रोत प्राप्त हो रहा है। मालाखेड़ी सिल्क कैंपस में फार्म से फेब्रिक तक उत्पादन गतिविधियाँ संचालित हैं। वर्ष 2025 में मालाखेड़ी केंद्र में 742 किलोग्राम मलवरी रेशम

धागा उत्पादन हुआ, जिसमें 32 महिलाओं को 5.78 लाख रुपये की मजदूरी प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त 415 किलोग्राम धागे की ट्विस्टिंग में 10 महिलाओं को 2.50 लाख रुपये की मजदूरी दी गई। शासकीय रेशम ककून मार्केट, मालाखेड़ी के माध्यम से 13,781 किलोग्राम ककून अन्य राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल और कर्नाटक के व्यापारियों को उपलब्ध कराए गए, जिससे 5,199,038 रुपये की आय रेशम उत्पादक किसानों को प्राप्त हुई। इस प्रकार किसानों की आर्थिक स्थिति में वृद्धि हुई है।

वर्ष 2025 की मुख्य उपलब्धियाँ

मलवरी रेशम ककून उत्पादन - 15,426.5 किलोग्राम, जिससे 255 हितग्राहियों को लाभ मिला है। इसी प्रकार टसर ककून उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 2.68 लाख किलोग्राम वृद्धि हुई है। इसके साथ ही मूंगा रेशम का उत्पादन पचमढ़ी रेशम केंद्र में 5 एकड़ क्षेत्र में पौधरोपण और 500 नग ककून उत्पादन हो रहा है। मलबरी पौधों का रोपण - 27,500 पौधे, जिससे भविष्य में ककून उत्पादन में और वृद्धि होगी। जिले की रेशम गतिविधियों से अब तक 45 महिलाएँ 'लखपति दीदी' बन चुकी हैं, जिससे महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। मालाखेड़ी सिल्क यूनिट ने 12.00 लाख रुपये मूल्य का मलवरी सिल्क यार्न मध्यप्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, महेश्वर को प्रदाय किया है। इससे न केवल जिले का रेशम उद्योग पुनर्जीवित हुआ, बल्कि महेश्वर क्षेत्र में बुनकरों को रोजगार का अवसर भी प्राप्त हुआ है। जिला प्रशासन की सक्रिय पहल और रेशम केंद्रों के संचालन से नर्मदापुरम जिले का रेशम उद्योग निरंतर विकसित हो रहा है। जिले में मालाखेड़ी और पचमढ़ी में संचालित प्राकृत शोरूमों से वर्ष 2025 में 73.00 लाख रुपये का रेशम वस्त्र विक्रय हुआ।

आगामी योजनाएं

रेशम उत्पादकों के लिए फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी की स्थापना करना है। इसी के साथ सिल्क समग्र 2 योजना के लागू होने से रेशम क्षेत्र का विकास और किसानों को अधिक वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

राइट क्लिक

अपने प्रिय साहित्यकार और स्वभाषा को अनोखी 'ग्रीन ट्रिब्यूट'!

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

ऐसा विलक्षण दृश्य और समर्पित भाव किसी अहिंदीभाषी प्रदेश में ही शायद ही दिख सकता है। देश की 'सिलीकॉन वैली' कहे जाने वाले और कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू के विख्यात 'लालबाग बॉटनिकल गार्डन' में इन दिनों अनोखी 'गणतंत्र दिवस पुष्प प्रदर्शनी' चल रही है। इस प्रदर्शनी की खास बात न केवल वहां हजारों रंग-बिरंगे फूलों का मुस्कुराना है, बल्कि इस आयोजन का किसी कन्नड विभूति को समर्पित होना भी है। इस बार की थीम कन्नड के नव्या साहित्य (नया साहित्य) के पुरोधा, महान कन्नड लेखक कुवेम्पु (ज्ञानपीठ विजेता केवी पुटप्पा) के सुपुत्र तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी कथा लेखक, कवि, उपन्यासकार, आलोचक, प्रकृतिप्रेमी, पर्यावरणवादी, प्रकाशक, फिल्मकार, नाटककार, शिकारी, चित्रकार, फोटोग्राफर कुप्पली पुटप्पा पूर्णचंद्र तेजस्वी (जिन्हें संक्षेप में पूर्णचंद्र तेजस्वी कहा जाता है) के जीवन, विचार और बहुआयामी अवदान पर केन्द्रित है। यह अद्भुत प्रदर्शनी लालबाग गार्डन के ऐतिहासिक ग्लास हाउस में चल रही है। इसमे चौतरफा खिले रंग बिरंगी फूलों और नयनाभिराम हरियाली के बीच तेजस्वी अपने रचनात्मक तेज के साथ कई कोणों से झांकते हैं। तेजस्वी की सृजनात्मकता, उनका प्रकृति प्रेम, उनका परिवार, उनका घर, उनकी जीवन शैली और फक्कडपन को इतने सुंदर और कलात्मक ढंग से प्रदर्शित किया गया है कि जो तेजस्वी के बारे में न जानता हो, वह भी उनके बारे में जानने पर विवश हो जाए। इस ग्लास हाउस में कई जगह स्क्रीन पर तेजस्वी के पॉड कास्ट प्रसारित हो रहे हैं। तो कहीं उनके रचनात्मक अवदानों का विस्तृत विवरण है। कहीं तेजस्वी के विचारों का सारांश तो कहीं तेजस्वी के बारे में उनके समकालीन प्रतिभाओं के विचार हैं। सबसे अद्भुत कलाकृति है तेजस्वी का अपने पिता और महान कन्नड साहित्यकार कुवेंम्पु को स्कूटर पर पीछे बिठाकर हवा से बातें करना। इसे देखकर लगता है मानों ये दो दोनों विलक्षण बाप-बेटे एक अदद स्कूटर पर सवार होकर पर ही सृजन के आकाश की अंनत सीमाओं को लांघने निकले हों।

पूर्णचंद्र तेजस्वी को कन्नड साहित्य के नव्या साहित्या के प्रमुख हस्ताक्षरों गिना जाता है। कन्नड भाषा में नव्या साहित्या आंदोलन का काल 1950 से लेकर 1980 के दर्मियान का माना जाता है। जब तत्कालीन युवा पीढ़ी का नेहरू के 'आइडिया ऑफ इंडिया' के स्वप्न से मोहभंग होने लगा था और उसकी मुखर अभिव्यक्ति कन्नड साहित्य में होने लगी थी। तेजस्वी उसी धारा के चमकते नक्षत्र हैं। विचारधारा की दृष्टि से उन पर समाजवादी विचारों का असर था। शायद यही कारण है कि इस समूची प्रदर्शनी में हिंदी कहीं दिखाई नहीं देती, लेकिन हिंदी के बड़े पैरोकार डॉ. राम मनोहर लोहिया की प्रतिमा यहां लगी है। यहां कर्नाटक सरकार की नीति के अनुरूप सभी सूचनाएं और विवरण पहले कन्नड और फिर अंग्रेजी भाषा में हैं।

कन्नड साहित्य में तेजस्वी का मुख्य योगदान प्रकृति और पर्यावरण के महत्व की प्रतिष्ठापना है। उन्होंने जीवों, वनस्पति, गांव और पर्यावरण को सरल और प्रभावी भाषा में अपने लेखन का मुख्यल विषय बनाया। उनका प्रसिद्ध कथा संग्रह 'लिंगा बंडा' पश्चिमी घाट में होने वाली वर्षा को एक लड़कपन की निगाह से देखना है। कॉलेज शिक्षा के बाद तेजस्वी ने पैतृक गांव लौटकर खेती भी की। जब भी फुर्सत मिलती वो पश्चिमी घाटों की सैर किया करते थे। उन्होंने कथाओं के साथ, कई यात्रा वर्णन, विज्ञान उपन्यास, विज्ञान कथाएं, आलोचनाएं लिखीं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'कारवालो' पश्चिमी घाट के घने जंगलों में उड़ती छिपकली की खोज में स्वयं लेखक के शामिल होने की रोमांचक कथा है। कॉलेज शिक्षा के बाद तेजस्वी ने पैतृक गांव लौटकर खेती भी की। जब भी फुर्सत मिलती वो पश्चिमी घाटों की सैर किया करते थे। उन्होंने कथाओं के साथ, कई यात्रा वर्णन, विज्ञान उपन्यास, विज्ञान कथाएं, आलोचनाएं लिखीं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'कारवालो' पश्चिमी घाट के घने जंगलों में उड़ती छिपकली की खोज में स्वयं लेखक के शामिल होने की रोमांचक कथा है। तेजस्वी ने कई प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकारों के लेखन का कन्नड में अनुवाद किया। तेजस्वी ने अपना पहला उपन्यास 'काडु मट्टू क्रौर्या' 24 साल की उम्र में लिखा था। तेजस्वी को उनके उपन्यास 'चिदाबंरा रहस्या' के लिए कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार, कर्नाटका राज्य फिल्म अवॉर्ड आदि कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

तेजस्वी ने अपने 'उपन्यासों में विज्ञान और दर्शन को ग्रामीण जीवन, सामाजिक मुद्दों और रोमांच के साथ मिलाकर एक आधुनिक, प्रकृति-केंद्रित शैली गढ़कर कन्नड साहित्य को समृद्ध किया। उन्हें उनकी सरल भाषा, पारिस्थितिकीय विषयों, वैज्ञानिक अंर्तदृष्टि, पर्यावरण जागरूकता को अपनी कथा कथन की नवीन शैली में समाहित किया। उन्होंने अपनी कहानियों में पश्चिमी घाट, वन्यजीवों (पक्षियों, कीड़ों) और पारिस्थितिक विषयों को गहराई से एकीकृत किया, जिससे पर्यावरण चेतना को बढ़ावा मिला। उनके साहित्य में जटिल मानवीय और प्राकृतिक विश्वों का अन्वेषण है। इसी के साथ तेजस्वी ने समाज और मनोविज्ञान की जटिलताओं को गहनता से उजागर करने के लिए ग्रामीण परिवेश और प्रासंगिक पात्रों का उपयोग किया। उनके हर सृजन के केन्द्र में जीवन है। वे पर्यावरण विनाश के खतरे से समूची मानवता को आगाह करते हैं।

साहित्यकार पिता-पुत्रः तेजस्वी अपने पिता कुवेंपु के साथ साथ स्कूटर पर

तेजस्वी ने कई प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकारों के लेखन का कन्नड में अनुवाद किया। तेजस्वी रूढ़िवादिता के खिलाफ थे। उन्होंने अपनी महिला मित्र राजेश्वरी से जिस पद्धति से विवाह किया, वह अब 'मंत्र मांगल्य पद्धति' कहलाती है। इसमें वैवाहिक कर्मकांड को अत्यंत संक्षिप्त कर दिया गया है। कई कन्नड युवा इससे प्रेरित हुए हैं।

वैसे लालबाग गार्डन और यहां साल में दो बार लगने वाली पुष्प प्रदर्शनी का भी अपना इतिहास है। लालबाग की स्थापना मैसूर के शासन हैदर अली ने 1760 में की थी, वो इसे कश्मीर के मुगल गार्डन की तर्ज पर विकसित करना चाहता था। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र मैसूर के शासक टीपू सुल्तान ने इस काम को आगे बढ़ाया। 1799 में टीपू की अंग्रेजों के हाथों हार के बाद लालबाग गार्डन का प्रबंधन अंग्रजों के हाथ में आया और उन्होंने इसे पेशेवर ढंग से एक वानस्पतिक उद्यान के रूप में विकसित किया। 1856 में इसे 'गवर्नमेंट बॉटनीकल गार्डन' घोषित किया गया। देश विदेश से लोग इसे देखने और वनस्पति संग्रहण के लिए आते हैं। यह पूरा गार्डन 240 एकड़ में फैला है। यहां का एक और मुख्य आकर्षण है वो प्राचीन चट्टान जो वैज्ञानिकों के अनुसार तीन अरब साल पुरानी है। यहां पेड़ पौधों की 2100 से ज्यादा प्रजातियां हैं, जिनमें कई विदेशी भी हैं।

तेजस्वी अपने पिता कुवेंपु के साथ स्कूटर पर..

गार्डन के जिस हिस्से में यह प्रदर्शनी लगी है, उस 'ग्लास हाउस' का निर्माण 1890 में हुआ। यहां सार्वजनिक पुष्प प्रदर्शनी की शुरूआत 1867 में हुई। 1912 से यह प्रदर्शनी नियमित रूप से आयोजित की जा रही है। इसके पीछे प्रेरणा इंग्लैंड की रॉयल हार्टीकल्चर सोसाइटी द्वारा वहां के चेल्सिया में होने वाले ' ग्रेट स्प्रिंग शो' से ली गई थी। इसका आयोजन लालबाग बॉटनिकल गार्डन, कर्नाटका उद्यानिकी विभाग, मैसूर हार्टीकल्चर सोसाइटी एवं पूर्णचंद्र तेजस्वी फाउंडेशन ने संयुक्त रूप से किया है। गौरतलब है कि 1951 से इस प्रदर्शनी को साल में दो बार यानी गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाता है। पिछले कुछ सालों में इस प्रदर्शनी को केवल फूलों की नुमाइश से आगे जाकर एक सांस्कृतिक आयोजन में तब्दील कर दिया है ताकि लोग अपनी सांस्कृतिक परंपरा से भी खुद को जोड़ सकें। इसके तहत यह प्रदर्शनी किसी नामचीन कन्नड विभूति के जीवन और अवदान पर केन्द्रित होती है। पिछले सालों में यह प्रख्यात कन्नड फिल्म अभिनेता डॉ. राजकुमार और बाद में उनके बहुआयामी प्रतिभा के धनी पुत्र पुनीथ राजकुमार के जीवन पर केन्द्रित थी। अपने नायकों और अपनी भाषा के प्रति कन्नडभाषियों के प्रेम और अपनत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि यह प्रदर्शनी टिकट लेकर देखनी होती है। वयस्कों के लिए इसका टिकट अस्सी रू. प्रति व्यक्ति (छुट्टी के दिन सौ रूपए) और अवयस्को के लिए प्रति व्यक्ति 30 रू. है। बावजूद इसके लाखों लोग इसे देखने आते हैं। और वो भी पूरी तरह अनुशासित और समर्पित भाव से। पिछले साल हुई इस प्रदर्शनी को 14 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा। बहरहाल, पुष्प प्रदर्शनियों का आयोजन तो कई शहरों में होता है। लेकिन उसे अपनी संस्कृति और अस्मिता से जोड़ देना तथा उस पर गर्व करना अनोखी और प्रशंसनीय बात है। और यह गर्व भी अत्यंत शालीन सुसंस्कृत और कलात्मकता के साथ करना इस प्रदर्शनी, उसके आयोजक और यहां के नागरिकों को दूसरों से अलग करता है। इस वक्त पूरा लालबाग गार्डन फूलों से सजा है। एक अनुमान के मुताबिक पूरे गार्डन में करीब 32 लाख फूल खिले हैं, जिनमें 27 लाख फूल उन वनस्पतियों के हैं, जिन्हें लालबाग गार्डन में ही तैयार किया है। फूलों के साथ-साथ यहां विभिन्न किस्म के फलों और लोक कला की प्रदर्शनी भी है। एक प्रकृति प्रेमी लेखक के लिए इससे बेहतर आदरांजलि भला और क्या हो सकती है?

मध्यप्रदेश के निगम-मंडलों और प्राधिकरणों में जल्द होंगी नियुक्तियां

पूर्व मंत्री और सीनियर विधायकों को मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में लंबे समय से प्रतीक्षित निगम-मंडलों और विकास प्राधिकरणों में राजनीतिक नियुक्तियों का रास्ता साफ हो गया है। भाजपा ने अपनी रणनीति में बड़ा बदलाव करते हुए अब सभी नियुक्तियां एक साथ करने का निर्णय लिया है। केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश के बाद अब अलग-अलग सूचियों के बजाय एक ही जंबो लिस्ट जारी की जाएगी, जिसमें करीब 35 नेताओं को जगह मिल सकती है।

रणनीति में बदलाव और दिल्ली की हरी झंडी

इससे पहले प्रदेश नेतृत्व की योजना विंध्य, बुंदेलखंड और महाकोशल जैसे क्षेत्रीय विकास प्राधिकरणों में पहले चरण में नियुक्तियां करने की थी। लेकिन महाराष्ट्र चुनाव और केंद्रीय व्यस्तताओं के कारण मामला टलता रहा। अब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दावोस दौरे से लौटने के बाद अगले सप्ताह राष्ट्रीय सह-संगठन महामंत्री शिवप्रकाश के साथ होने वाली बैठक में नामों को अंतिम रूप दिया जाएगा।

पुनर्वास की रेस में सबसे बड़ा नाम प्रदेश के सबसे वरिष्ठ विधायक और पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव का है। माना जा रहा है कि भार्गव के अनुभव और वरिष्ठता को देखते हुए सरकार उन्हें कोई बहुत महत्वपूर्ण और बड़ी संवैधानिक या राजनीतिक जिम्मेदारी सौंप सकती है। उनके अलावा पूर्व वित्त मंत्री जयंत मलैया को राज्य वित्त आयोग का अध्यक्ष बनाया जा सकता है। पन्ना से पांच बार के विधायक ब्रजेंद्र प्रताप सिंह, हरिशंकर खटीक, अजय विश्नोई और अर्चना चिटनीस जैसे कद्दावर नेताओं को भी महत्वपूर्ण निगम-मंडलों की कमान सौंपी जा सकती है।

बजट से पहले घोषणा संभव

इसके अलावा, कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए अमरवाड़ा विधायक कमलेश शाह के नाम पर भी विचार किया जा रहा है। विधानसभा के आगामी बजट सत्र से पहले इन नामों की घोषणा होने की पूरी संभावना है। पार्टी का उद्देश्य उन पूर्व विधायकों और मंत्रियों को सक्रिय करना है जो फिलहाल किसी पद पर नहीं हैं। इस कवायद के जरिए क्षेत्रीय और जातीय संतुलन साधने की भी कोशिश की जाएगी, ताकि आगामी चुनौतियों के लिए संगठन और सरकार के बीच बेहतर समन्वय बना रहे।

सीएम ने प्रख्यात कवि स्व. श्री हरिवंश राय बच्चन की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रख्यात कवि स्व. श्री हरिवंश राय बच्चन की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कवि स्व. श्री बच्चन की कृतियों में नव उत्साह का संचार और संवेदनाओं का स्पंदन है, जो साहित्य को और भी समृद्ध बनाता है। उनकी कृतियां साहित्य जगत की ही नहीं, देश की धरोहर हैं।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धेय रानाडे जी की जयंती पर किया पुण्य स्मरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने न्यायविद् एवं समाज सुधारक, श्रद्धेय महादेव गोविंद रानाडे की जयंती पर पुण्य स्मरण कर विनम्र श्रद्धांजलि दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रद्धेय रानाडे जी के विचार, कृतित्व एवं चिंतन राष्ट्र की प्रगति और गरीब कल्याण की प्रेरणा देते हैं। मानवता की सेवा के लिए अपने अप्रतिम योगदान के लिए स्व. श्री रानाडे सदैव याद किए जायेंगे।

सर्द हवाओं से प्रदेश में ठिठुरन बढ़ी ,शहडोल जिला सबसे ठंडा

25 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे, उत्तरी हिस्से में कोहरा छा रहा

भोपाल (नप्र)। पहाड़ों में बर्फबारी और उत्तर से सर्द हवा आने से मध्यप्रदेश में भी ठंड बढ़ गई है। उत्तरी हिस्से में कोहरा छा रहा है। भोपाल, शहडोल-रीवा संभाग में तेज ठंड है। शहडोल के कल्याणपुर में पारा 3 डिग्री तक पहुंच गया है। वहीं, 25 शहरों में 10 डिग्री के नीचे टेम्परेचर है। मौसम विभाग के अनुसार, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में बर्फबारी के साथ तेज ठंड है। वहां से हवा मैदानी इलाकों में आ रही है। शनिवार को उत्तर-पूर्व भारत के ऊपर समुद्र तल से 12.6 किमी की ऊंचाई पर करीब 269 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से जेट स्ट्रीम चलती रही। जिसका असर एमपी में भी देखा गया। इस वजह से सर्दी का असर देखा गया। वहीं, मैहर, कटनी, उमरिया, शहडोल और अनूपपुर में सर्द हवाएं भी चली। शुक्रवार-शनिवार की रात में शहडोल के बाद उमरिया प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 4.8 डिग्री पहुंच गया।

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर-जबलपुर में 10 डिग्री से कम-पांच बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 7.4 डिग्री, इंदौर में 9 डिग्री, ग्वालियर में 8.2 डिग्री, उज्जैन में 10 डिग्री और जबलपुर में पारा 8.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, उमरिया के बाद राजगढ़-खजुराहो में सबसे कम 5 डिग्री, मंडला में 5.4 डिग्री, रीवा में 5.5 डिग्री, नौगांव में 5.6 डिग्री, पचमढ़ी-दतिया में पारा 6.6 डिग्री दर्ज किया गया। बाकी शहरों में 10 डिग्री के आसपास ही तापमान रहा।

मौनी और माघ अमावस्या पर श्रद्धालुओं ने लगाई डुबकी

सीहोर में पार्वती और नर्मदा नदी के घाटों पर उमड़ी भीड़

सीहोर (नप्र)। सीहोर जिले में मौनी और माघ अमावस्या के अवसर पर पवित्र नदियों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। सुबह से दोपहर बाद तक बड़ी संख्या में लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई। नर्मदा नदी के बुदनी, आवली घाट और नीलकंठ सहित सभी घाटों पर हजारों श्रद्धालु पहुंचे थे, उन्होंने विशेष पूजा-अर्चना के बाद पवित्र

स्नान किया। इसी तरह पार्वती-अजनाल संगम पर भी सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ रही और स्नान का क्रम जारी रहा।मौनी और माघ अमावस्या का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन श्रद्धालु हर साल पवित्र नदियों में आस्था की डुबकी लगाते हैं और पूजा-अर्चना करते हैं।

सुबह न्यूनतम तापमान 5.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज होने के बावजूद श्रद्धालुओं ने स्नान किया। दोपहर में धूप तेज होने और अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस पहुंचने पर भी स्नान का सिलसिला लगातार जारी रहा।

सावधान! बिजली बिल नहीं भरा तो 174 बैंक खाते हुए फ्रीज, 3 बकायादार को भेज दिया जेल

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश में बिजली उपोक्ताओं और बकायादारों के लिए बड़ी खबर है। यदि आपने अपना बकाया बिल नहीं भरा तो आपका बैंक खाता सीज किया जा सकता है। वहीं विभाग आपको सलाखों के पीछे भी पहुंचा सकता है। जबलपुर में ऐसे तीन व्यक्तियों को जेल भेजा गया है। कईयों के खाते सीज कर दिए गए हैं।

जानकारी अनुसार समाधान योजना के तहत पात्र होने के बावजूद भी बिजली बिल की राशि जमा नहीं करने वाले बडे बकायेदारों के बैंक खाते मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के द्वारा फ्रीज करवाये गए है। इसके अलावा लोक अदालत में छूट का लाभ लेने के बावजूद भी बिजली बिल जमा नहीं करने वाले तीन व्यक्तियों को जेल भेजा गया है।

बार-बार दिया रिमांडर, फिर खाते फ्रीज

शहर वृत्त के अधीक्षण अभियंता संजय अरोरा से प्राप्त जानकारी के अनुसार समाधान योजना के तहत पात्र होने के बावजूद भी बडे बकायादार बार-बार रिमांडर देने के बाद भी कोई ध्यान नही दे रहे थे। जिसके खिलाफ विभागीय अधिकारियों ने तहसीलदार के प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते हुए पहले फार्म बी तथा बाद में फार्म सी के तहत कार्यवाही की। इसके बावजूद भी बडे बकायेदारों ने बिजली बिल की राशि जमा नहीं की। जिसके बाद बड़े बकायेदारों के खाते फ्रीज करने की कार्यवाही की कई।

174 के खाते फ्रीज करा दिए

उन्होने बताया कि विजय नगर संभाग में 61.44 लाख की वसूली के लिए 159 उपभोक्ताओं के बैंक खाते फ्रीज किए गए है। इसके अलावा दक्षिण संभाग में 3 लाख की वसूली के लिए 15 उपभोक्ताओं के बैंक खाते फ्रीज किये गये है। इसके अलावा तीन ऐसे उपभोक्ता थे, जिनके खिलाफ पूर्व में बिजली चोरी के प्रकरण दर्ज किए गए थे और उन्होंने लोक अदालत में छूट के दौरान भी राशि जमा करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। न्यायालय ने उनके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किए थे। पुलिस के सहयोग से उनकी गिरफ्तारी करवाने के बाद न्यायालय में पेश किया गया।

सीएम ने वरिष्ठ पत्रकार उमेश रेखे के निधन पर शोक जताया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर प्रेस क्लब के संस्थापक सदस्य एवं शहर के वरिष्ठ पत्रकार श्री उमेश रेखे के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 90 वर्षीय वरिष्ठतम पत्रकार स्व. श्री रेखे ने पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। इंदौर के कई समाचार पत्रों में सेवाएं देने वाले स्व. श्री रेखे ने अपनी शानदार लेखनी से समाज को नई रौशनी देकर ख्याति अर्जित की। उनका निधन पत्रकार जगत सहित हम सबके लिए अपूर्णीय क्षति है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोकाकुल परिजन को यह दुःख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की है।

किन्नरों पर कट्टा अड़ाकर 30 लाख की डकैती

22 तोला सोना, 4 किलो चांदी, 4 लाख कैश ले गए बदमाश ; सीसीटीवी का डीवीआर भी नहीं छोड़ा

अंबाह (नप्र)। मुरैना जिले के अंबाह में एक किन्नर के घर डकैती हो गई। किन्नर का आरोप है कि शनिवार रात करीब 2 बजे 8 से 10 हथियारबंद बदमाश घर में घुस आए। बदमाशों ने घर में मौजूद 4 किन्नरों को बांध दिया। इसके बाद 22 तोला सोना, 4 किलो चांदी और लगभग 4 लाख रुपए कैश ले गए। कुल 30 लाख की डकैती हुई।

डकैती किन्नर राबिया के घर हुई है। रात में राबिया के साथ 3 किन्नर चेले और थे। सभी सो रहे थे। राबिया ने बताया कि बदमाश सीढ़ी से छत पर चढ़े। फिर गैस कटर से छत का दरवाजा काटा। इसके बाद वे दूसरी मंजिल से सीधे ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचे। यहां उन्होंने तीन चेलों पर कट्टा अड़ाकर उन्हें जगाया। बदमाशों ने किन्नर राधिका को धमकाया। फिर गुरु राबिया का कमरा खुलवाया। डकैतों ने कमरे में रखे सोने-

चांदी के जेवर और कैश निकाल लिए। किन्नरों ने जो गहने पहने थे, वो भी निकलवा लिए। उनके मोबाइल और घर में लगे सीसीटीवी के डीवीआर भी ले गए।

फारसी बोल रहा था एक बदमाश

किन्नर राबिया ने बताया कि सोना-चांदी लूटने के बाद बदमाश एक-एक कर सभी चेलों को अलग कमरे में ले गए, कपड़े उतरवाए और अश्लील हरकतें कीं। इस दौरान बदमाश बार-बार पूछते रहे कि घर में कोई पुरुष है या नहीं। बदमाशों में से एक व्यक्ति फारसी भाषा बोल रहा था, जिससे आशंका है कि वारदात के पीछे किसी परिचित किन्नर का हाथ हो सकता है। वारदात के बाद सुबह करीब 4 बजे पुलिस को घटना की सूचना दी।

किन्नर बोली- जान से मारने की धमकी दी

किन्नर राबिया ने बताया कि बदमाशों ने जान से मारने की धमकी दी है। बदमाशों ने कहा कि उन पर नजर रखी जाएगी। पुलिस में शिकायत की तो जब वे बधाई देने के लिए बाहर जाएंगे, गोली मार दी जाएगी। बदमाशों ने किन्नर के घर से कुछ दूरी पर जाकर लूटे गए मोबाइल मिट्टी में गाड़ दिए। रविवार सुबह पुलिस डॉग स्क्वॉड के साथ किन्नर के घर पहुंची और जांच की।

डॉग स्क्वॉड के साथ पहुंचे एएसपी

राबिया किन्नर ने अंबाह पुलिस को सूचना दी। सुबह मुरैना से डॉग स्क्वॉड की टीम और एएसपी सुरेंद्र पाल सिंह डावर मौके पर पहुंचे और जांच की। एएसपी ने बताया कि बाइपास के किनारे स्थित राबिया किन्नर के घर पर नकाबपोश बदमाश हथियार लेकर पहुंचे थे।